फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 11 प्रभात जयपुर, सोमवार 11 अगस्त, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBIT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

Honey: A Demonic Food in Zoroastrian Iran?

In Zoroastrianism, it was 'milk and sugar,' not 'milk and honey,' that had to give birth to the narrative of the Parsi migration to India

A Raga Born of Grief, Forged in Legend

The Town and Its Trouble Makers

प्रधानमंत्री ने बेंगलुरु में बहुप्रतीक्षित येलो मेट्रो लाइन का उद्घाटन किया

प्रधानमंत्री ने बेलगाम-बेंगलुरु, कटरा-अमृतसर व नागपुर-पुणे वंदे भारत एक्सप्रेस भी शुरु कीं

- **प्रधानमंत्री ने कहा कि ऑपरेशन सिन्दूर की सफलता मेक इन इण्डिया की नींव पर आधारित हमारी तकनीक व रक्षा क्षमताओं की मजबूती का प्रमाण है। इसमें बेंगलुरु के युवाओं व कर्नाटक के औद्योगिक तंत्र की अहम भूमिका रही है।**

बेंगलुरु, 10 अगस्त। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को बेंगलुरु में आरवी रोड को बोम्मासंद्रा से जोड़ने वाली नम्मा मेट्रो की बहुप्रतीक्षित येलो लाइन का उद्घाटन किया और विस्तारित बेंगलुरु-बेलगावी सेवा सहित, तीन वंदे भारत एक्सप्रेस रेलगाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इलेक्ट्रॉनिक्स सिटी कॉरिडोर पर आठ लाख यात्रियों को सेवा प्रदान करने के लिए तैयार की गई नयी मेट्रो लाइन का उद्देश्य सड़क के भीड़भाड़ को कम करना है, विशेष कर अति व्यस्त सिल्क बोर्ड जंक्शन पर। हालांकि शुरुआत में सीमित परिचालन क्षमता के कारण इसे आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, क्योंकि केवल तीन ट्रेनें उपलब्ध थीं और सेवाओं के बीच 25 मिनट का अंतराल था। यात्रियों ने निराशा व्यक्त की थी और अपर्याप्त आवृत्ति के कारण उद्घाटन को केवल प्रतीकात्मक बताया।

आज रागीगुड्डा मेट्रो स्टेशन पर कांग्रेस समर्थकों ने उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार के समर्थन में नारे लगाए और कहा कि मेट्रो परियोजना राज्य और केन्द्र सरकारों के बीच एक सहयोगात्मक प्रयास है न कि किसी एक राजनीतिक दल की संपत्ति। परिवहन मंत्री रामलिंगा रेड्डी ने भाजपा के राज्य इकाई प्रमुख विजयेंद्र येदियुरप्पा और बेंगलुरु दक्षिण के सांसद तेजस्वी सूर्या सहित भाजपा नेताओं पर इस परियोजना को पूरी तरह से केंद्र सरकार की परियोजना के रूप में वर्णित करने का आरोप लगाया। इस बीच कर्नाटक के मंत्री प्रियांक खड़गे ने कहा कि राज्य ने भूमि अधिग्रहण लागत सहित 12,000 करोड़ रुपये से अधिक का योगदान दिया है और भाजपा पर इसका श्रेय हड़पने का आरोप लगाया।

मेट्रो उद्घाटन के साथ ही प्रधानमंत्री मोदी ने विस्तारित बेलगावी-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जो सप्ताह में छह दिन चलेगी। इसके अतिरिक्त दो अन्य वंदे भारत रेलगाड़ियां, माता वैष्णो देवी कटरा-अमृतसर और नागपुर (अजनी)-पुणे भी शुरू हुईं।

मोदी ने उद्घाटन और तीसरे चरण के शिलान्यास के अवसर पर एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा रक्षा निर्माण और प्रौद्योगिकी में कर्नाटक के युवाओं के योगदान की सराहना की। उन्होंने कर्नाटक के प्रतिभाशाली लोगों से तकनीकी क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण का नेतृत्व करने का आव्हान करते हुए कहा "ऑपरेशन सिंदूर की सफलता मेक इन इंडिया की नींव पर आधारित हमारी तकनीक और रक्षा क्षमताओं की मजबूती का प्रमाण है। इस उपलब्धि में बेंगलुरु के युवाओं और कर्नाटक के औद्योगिक तंत्र की अहम भूमिका रही है।"

मोदी ने देश की प्रभावशाली आर्थिक विकास दर का उल्लेख करते हुए कहा कि पिछले 11 वर्षों में, भारत दुनिया की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से शीर्ष पांच में पहुँच गया है और तेज़ी से शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल होने की ओर अग्रसर है। प्रधानमंत्री ने रेलवे विद्युतीकरण, हवाईअड्डा अवसंरचना और राष्ट्रीय जलमार्गों के विस्तार में भारत की उपलब्धियों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया।

प्रधानमंत्री ने यूपीआई आधारित डिजिटल भुगतान में भारत की अग्रणी भूमिका का उल्लेख किया जो विश्व के 50 प्रतिशत से अधिक वास्तविक समय(रीयल-टाइम)लेनदेन को संभालता है। भारत एआई-संचालित ख़तरे का पता लगाने जैसी उभरती तकनीकों में भी निवेश कर रहा है और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वोट चोरी पर विपक्ष के सांसद चुनाव आयोग तक मार्च करेंगे

नयी दिल्ली, 10 अगस्त। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के चुनाव आयोग पर वोट चोरी कराने के आरोप के बाद इंडिया गठबंधन के नेता सोमवार को संसद से निर्वाचन कार्यालय तक मार्च करेंगे।

इंडिया गठबंधन के प्रमुख घटक दल कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी

- **यह मार्च संसद से शुरु होगा।**

का सीधा आरोप है कि चुनाव आयोग भाजपा के साथ मिलकर वोट चोरी करवा रहा है और भाजपा को फायदा पहुंचा रहा है। गांधी के आवास पर पिछले सप्ताह आयोजित डिनर में इस विषय पर चर्चा के बाद तय हुआ था कि गठबंधन दलों के सांसद इस मुद्दे पर संसद भवन से चुनाव आयोग के कार्यालय तक मार्च करेंगे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

फर्रुखाबाद में गंगा खतरे के निशान से ऊपर पहुँची

फर्रुखाबाद, 10 अगस्त। उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में पिछले 20 घंटे से गंगा नदी केखतरे के निशान से 10 सेंटीमीटर ऊपर बहना शुरू होते ही 42 गांव बाढ़ की चपेट में आ गए हैं।

बदायूं- फर्रुखाबाद सड़क मार्ग

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उपराष्ट्रपति पद के लिये विपक्ष का साझा उम्मीदवार उतारना चाहती है कांग्रेस

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे उम्मीदवार के नाम पर सहमति बनाने के लिये सहयोगी दलों से संपर्क में हैं

- **विपक्षी खेमे के एक वर्ग का मानना है कि भाजपा के उम्मीदवार की घोषणा के बाद ही इंडिया गठबंधन को अपना उम्मीदवार तय करना चाहिये।**

नई दिल्ली, 10 अगस्त। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए विपक्ष ने भी तैयारी शुरू कर दी है। विपक्षी गठबंधन का साझा उम्मीदवार उतारने के लिए कांग्रेस ने कमर कस ली है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार का नाम तलाशने और आम सहमति बनाने के लिए गठबंधन के सहयोगी दलों से संपर्क कर रहे हैं। विपक्षी गठबंधन इंडिया का मानना है कि वे चुनाव में अपने दमदार प्रदर्शन के जरिये सत्ताधारी दल को कड़ी टक्कर दे सकते हैं।

उपराष्ट्रपति का चुनाव नौ सितंबर को होना है। चुनाव को लेकर सत्ताधारी एनडीए गठबंधन और विपक्षी गठबंधन इंडिया ने कमर कस ली है। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा को सत्तारूढ़ गठबंधन का उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार चुनने का अधिकार दिया है। वहीं विपक्षी गठबंधन इंडिया ने भी उम्मीदवार के नाम पर सहमति बनाने पर चर्चा शुरू कर दी है। संभावित उम्मीदवारों के नामों पर विचार-विमर्श के लिए इंडिया ब्लॉक के साझेदारों के बीच बातचीत चल रही है, जबकि खरगे आम सहमति बनाने के लिए विपक्षी दलों से संपर्क कर रहे हैं।

कांग्रेस सूत्रों ने बताया कि पार्टियों के बीच आम सहमति है कि इंडिया गठबंधन उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए संयुक्त उम्मीदवार खड़ा करे। विपक्षी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आनंद शर्मा ने कांग्रेस विदेश विभाग का अध्यक्ष पद छोड़ा

- **विभाग के पुनर्गठन की आवश्यकता बताते हुए उन्होंने इस्तीफा दिया।**

नई दिल्ली, 10 अगस्त। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री आनंद शर्मा ने रविवार को पार्टी के विदेश मामलों के विभाग के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने यह इस्तीफा इसलिए दिया है, ताकि पार्टी के पुनर्गठन में मदद मिल सके और युवा नेताओं को इसमें शामिल किया जा सके। पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने लगभग एक दशक तक विभाग का नेतृत्व किया।

अपने इस्तीफे में आनंद शर्मा ने लिखा, जैसा कि मैंने पहले कांग्रेस पार्टी और पार्टी के अध्यक्ष दोनों को बताया है, मेरे विचार में समिति का पुनर्गठन होना चाहिए, ताकि इसमें क्षमता और संभावनाओं वाले युवा नेताओं को शामिल किया जा सके। उन्होंने पार्टी नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए आगे लिखा, मैं डीएफए (विदेश मामलों के विभाग) के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे रहा हूं, ताकि इसका पुनर्गठन हो सके।

अपने पत्र में शर्मा ने कहा कि पिछले कुछ दशकों में डीएफए ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

चरित्र के बिना ज्ञान बुराई की ताकत बन जाता है। जैसे कि दुनिया के कितने ही चालाक चोरों और भले मानुष बदमाशों के उदाहरण से स्पष्ट है।

–महात्मा गाँधी

एक दिलचस्प अध्ययन यह भी

अपनी कुण्डलियों (एक प्रकार का छंद) के लिए विख्यात गिरिधर कविराय ने लिखा था: बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय।/ काम बिगारै आपनो, जग में होत हंसाय। उनकी इस बात से शायद ही कोई असहमत हो। लेकिन इधर हाल में आई एक रिपोर्ट में जो कहा गया है उसे इसी सहजता से शायद ही कोई स्वीकार करे। मैं बात कर रहा हूं सेण्टर फ्रेश और यूगव द्वारा हाल में करवाए गए एक राष्ट्रव्यापी अध्ययन की रिपोर्ट की। देश के पहले, दूसरे और तीसरे टाइअर (स्तर) के शहरों–कस्बों में रह रहे विद्यार्थियों, कामकाजी पेशेवरों और स्व–नियोजित लोगों से पूछे गए सवालों के आधार पर किया गया यह अध्ययन तकनीक, सामाजिक अपेक्षाओं और सतत संलग्नता की वजह से बहुत अधिक जटिल बना दी गई आधुनिक ज़िंदगी की अनेक विचित्रताओं को उजागर करता है। इस अध्ययन में इन लोगों के जीवन के चार मुख्य पक्षों की पड़ताल की गई थी। ये चार पक्ष हैं: भोजन और जीवन शैली विषयक आदतें, डिजिटल और सामाजिक जीवन, डेटिंग और रिश्ते, और कैरियर एवं प्रोफ़ेशनल ज़िंदगी इन चार मुख्य क्षेत्रों के बारे में पूछे गए सवालों के जवाबों के आधार पर तैयार की गई रिपोर्ट हाल में ज़ारी हुई है और उसका शीर्षक है:– 'सेण्टर फ्रेश इण्डिया ओवर थिंकिंग'। जैसा कि शीर्षक से ही स्पष्ट है, यह रिपोर्ट सोचने अर्थात थिंकिंग से आगे बढ़कर ओवरथिंकिंग – अधिक सोचने की बात कर रही है। इस रिपोर्ट के अनुसार ओवर थिंकिंग अब आम भारतीय के जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है और न केवल किसी गम्भीर समस्या या संकट के समय, अपितु रोज़मर्रा के जीवन के सामान्य घटना क्रम के समय भी वे ओवर थिंकिंग करते हैं। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि लगभग 81 प्रतिशत भारतीय हर रोज़ करीब तीन घण्टे ओवर थिंकिंग में लगाते हैं। इस सर्वेक्षण का आकार हालांकि बहुत बड़ा नहीं था, महज़ 2100 लोगों के उत्तरों के आधार पर यह सर्वेक्षण किया गया था, इसलिए इसे बहुत ज़्यादा विश्वसनीय भले ही न माना जा सके, इसके नतीज़े हमें काफी कुछ सोचने को विवश करते हैं।

इस रिपोर्ट में बताया गया है कि आज के हाइपर कनेक्टेड दौर में ज़रूरत से ज़्यादा सोचना हमारी आदत का हिस्सा बन चुका है। ध्यान रखा जाए कि सोचना ग़लत नहीं है, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा सोचना, उन चीज़ों के बारे में सोचना जो निहायत ही ग़ैर ज़रूरी हैं, बुरा है। रिपोर्ट एक बहुत मानीखेज़ बात कहती है, कि हम भारतीय किसी रेस्तरां में जाकर मेन्यू देखते हुए खाने का ऑर्डर देने में जितना सोचते हैं उतना तो हम किसी राजनीतिक दल या नेता को वोट देते समय भी नहीं सोचते हैं, जबकि हमारा यह कृत्य हमारी भावी ज़िंदगी को बहुत ज़्यादा प्रभावित करने वाला होता है। इस अध्ययन में उत्तर भारत के 63 प्रतिशत और दक्षिण भारत के 69 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उनके लिए किसी जन प्रतिनिधि का चुनाव करने से कहीं ज़्यादा तनावपूर्ण होता है किसी रेस्तरां में एक डिश का चुनाव करना। इसी तरह 1997 से 2012 के बीच जन्मे लोगों (जिन्हें आम बोलचाल में जेनज़ेड कहा जाता है) और महिलाओं के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कोई स्टोरी पोस्ट करना बहुत ज़्यादा सोच–विचार करने का मामला होता है। इकसठ प्रतिशत भारतीयों ने बताया कि वे सोशल मीडिया पर कोई फोटो या वीडियो साझा करने से पहले कम से कम पांच घंटा उस पर विचार करते हैं। और ऐसा ही वे लोग वहां कोई गाना साझा करते हुए, अपनी तस्वीर में किसी फिल्टर का प्रयोग करते हुए भी करते हैं। लगभग साठ प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि जब वे सोशल मीडिया पर अपने दोस्तों–परिचितों की कोई स्टोरी या प्रतिक्रिया देखते हैं तो उस पर तुरंत कोई टिप्पणी करने की बजाय काफी समय तक उस पर गहन चिंतन करते हैं ताकि कोई उनके बारे में यह धारणा न बना ले कि वे टिप्पणी करने या प्रतिक्रिया देने के लिए मरे जा रहे हैं। यहां मिलेनियल्स ने अर्थात उन्होंने जिनका जन्म 1981 से 1996 के बीच हुआ है बताया कि सोशल मीडिया पर दूसरों की टिप्पणियां वगैरह देखते हुए वे ऐसा दर्शाते हैं जैसे उसमें उनकी कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं है। इस जवाब से समझा जा सकता है कि आज के समय में सोशल मीडिया ने हमें कितना आत्म सजग बना दिया है। इस अध्ययन से बाहर भी हममें से जो लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय हैं वे इस बात का अनुभव करते हैं कि बहुत सारे लोग हमारी पोस्ट देखते या पढ़ते तो हैं लेकिन वे उस पर कोई प्रतिक्रिया न देने के बारे में अत्यधिक सजग रहते हैं। प्रतिक्रिया देना तो दूर की बात है, वे ऐसा प्रदर्शित करते हैं जैसे उन्होंने हमारी पोस्ट देखी ही नहीं है, जबकि असल में वे उसे देख चुके होते हैं। इस बात की पुष्टि अनेक प्रकार से हो जाती है। जैसे अगर आप उनके बारे में कोई प्रशंसात्मक टिप्पणी करें तो वे तुरंत उसे देख लेने का प्रमाण सुलभ करा देते हैं।

हमने प्रारंभ में ही गिरिधर कविराय के हवाले से कहा है कि सोचना बहुत अच्छी बात है। बिना सोचे कुछ करना प्रायः नुकसानदेह होता है। लेकिन जैसा हमारे यहां कहा गया है, अति सर्वत्र वर्जयते। यह बात सोचने पर भी लागू होती है। अगर आप हर रोज़ तीन घंटे केवल सोचने में व्यतीत करेंगे तो इसकी स्वाभाविक परिणति यह होगी कि आप कम काम कर सकेंगे। यह तीन घंटे का समय निकलेगा तो आपके काम करने वाले समय में से ही।

इस रिपोर्ट की सबसे ज़्यादा उल्लेखनीय बात यह है कि बयालीस प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि जब वे अपने बॉस को कोई संदेश भेजते हैं और उसकी तरफ से उत्तर में केवल एक शब्द– 'ओके' मिलता है तो वे बहुत व्याकुल और चिंतित हो जाते हैं। उनका मन तमाम आशंकाओं से घिर जाता है। इससे वर्तमान स्थितियों में नौकरी करने वालों की मनोदशा को तो समझा ही जा सकता है, यह भी समझा जा सकता है कि आजकल नौकरियां कितनी असुरक्षित और तनाव देने वाली हो गई हैं।

अब आता है इस कथा का उत्तरार्द्ध। जब आप चिंतित होते हैं तो क्या करते हैं? आपका उत्तर होगा, किसी अपने से बात करके समस्या का हल तलाश करते हैं। लेकिन जान लीजिए कि ऐसा करना अब अतीत हो चुका है। यह रिपोर्ट हमें बताती है कि हम भारतीय अपनी ओवर थिंकिंग की आदत से निबटने के लिए एआई अर्थात कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करते हैं। मतलब, प्राकृतिक या स्वाभाविक बुद्धि की जगह अब कृत्रिम बुद्धि ने ले ली है। इस रिपोर्ट के अनुसार हर तीन में से एक भारतीय किसी रेस्तरां में अपना मनपसंद व्यंजन चुनने या किसी अपने को देने के लिए उपहार चुनने के लिए एआई का सहारा लेता है। इस रिपोर्ट की मानें तो बहुत बड़ी संख्या में हमारे देशवासी चैटजीपीटी और गूगल जैसे एआई प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करने लगे हैं।

हमने प्रारंभ में ही गिरिधर कविराय के हवाले से कहा है कि सोचना बहुत अच्छी बात है। बिना सोचे कुछ करना प्राय: नुकसानदेह होता है। लेकिन जैसा हमारे यहां कहा गया है, अति सर्वत्र वर्जयते। यह बात सोचने पर भी लागू होती है। अगर आप हर रोज़ तीन घंटे केवल सोचने में व्यतीत करेंगे तो इसकी स्वाभाविक परिणति यह होगी कि आप कम काम कर सकेंगे। यह तीन घंटे का समय निकलेगा तो आपके काम करने वाले समय में से ही। फिर, आप सोच क्या रहे हैं यह भी देखने की बात है। सोशल मीडिया पर क्या पोस्ट किया जाए, तस्वीर के लिए कौन–सा फिल्टर काम में लिया जाए, रेस्तरां में रोटी मंगवाई जाए या नान, स्विगी या ज़ोमैटो से चाइनीज़ खाना मंगवाया जाए या इटैलियन – अगर ऐसी बातों पर ही ओवर थिंकिंग करते रहेंगे तो आपकी उत्पादकता में कमी ही आएगी। जिस देश के नागरिक अपना जन प्रतिनिधि चुनने में कम और सोशल मीडिया पर लगाने वाली डीपी चुनने में ज़्यादा वक़्त लगाते हों, उस देश की अवनति को भला कौन रोक सकता है?

हमने पहले ही कहा, यह अध्ययन बहुत कम लोगों, मात्र 2100 पर किया गया है अत: इसे बहुत ज़्यादा प्रामाणिक नहीं माना जा सकता। लेकिन इस अध्ययन की रिपोर्ट में जो बातें कही गई हैं और जिनकी चर्चा हमने यहां की हैं, वे निश्चय ही चिंतित करने वाली हैं और उनकी तरफ हम सबका ध्यान जाना चाहिए। एक स्वस्थ और विवेक सम्पन्न समाज हम सबका साझा सपना है, और इस सपने के यथार्थ में रूपांतरित होने में जो भी बाधाएं हैं उन्हें दूर करना हम सबका साझा कर्तव्य है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – संकल्प, प्रयास और चुनौतियां

अशोक कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy - NEP) 2020 भारत की शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव लाने का लक्ष्य रखती है। यह नीति दशकों बाद आई है और इसके पीछे कई महत्वपूर्ण संकल्प हैं, लेकिन इसे लागू करने में कई चुनौतियाँ भी हैं। आइए इन सभी पहलुओं को विस्तार से समझते हैं:–

संकल्प (Objectives and Vision)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल संकल्प भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है। इसके प्रमुख उद्देश्य और संकल्प निम्नलिखित हैं:

समग्र और बहु–विषयक शिक्षा: इसका उद्देश्य बच्चों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर उनके सर्वांगीण विकास पर जोर देना है। कला, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक शिक्षा के बीच की सीमाओं को खत्म करना इसका एक मुख्य लक्ष्य है।

रटने की बजाय समझने पर बल: नीति का लक्ष्य है कि शिक्षा को रटने की प्रणाली से हटाकर अनुभवात्मक और व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित बनाया जाए।

फाउंडेशनल लिटरेसी और न्यूमेरेसी (FLN): 2025 तक सभी बच्चों को तीसरी कक्षा तक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान प्रदान करना एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

नई संरचना (5+3+3+4): शिक्षा के पुराने 10 2 ढांचे को 5+3+3+4 की नई संरचना में बदलना, जो बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास के अनुरूप है।

उच्च शिक्षा में GER बढ़ाना: 2035 तक उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrollment Ratio - GER) को 50% तक बढ़ाना।

मातृभाषा में शिक्षा: प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में हो, ताकि बच्चे बेहतर ढंग से सीख सकें।

तकनीकी एकीकरण: शिक्षा में प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग करना, जैसे कि डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन शिक्षण सामग्री और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग।

शिक्षकों का सशक्तिकरण: शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण और उनके पेशेवर विकास को बेहतर बनाना, ताकि वे नई शिक्षा प्रणाली के लिए तैयार हो सकें।

प्रयास (Efforts and Initiatives)

इन संकल्पों को पूरा करने के लिए सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई प्रयास किए जा रहे हैं:–

निपुण भारत मिशन: बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन की स्थापना की गई है, जिसका उद्देश्य FLN लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (NCF):: स्कूल शिक्षा के लिए नई पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जा रही है, जो नई शिक्षा नीति के सिद्धांतों पर आधारित है।

बहु–प्रवेश–बहु–निकास प्रणाली: उच्च शिक्षा में छात्रों को अपनी सुविधानुसार किसी भी समय कोर्स में प्रवेश लेने और उसे छोड़ने की सुविधा दी गई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और कौशल विकास: कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नए कोर्स और कार्यक्रमों को शामिल किया जा रहा है।

डिजिटल अवसंरचना: ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया जा रहा है, जैसे कि DIKSHA पोर्टल।

चुनौतियाँ (Challenges)

कार्यान्वयन की चुनौतियों, संसाधनों की कमी और कुछ नीतिगत फैसलों के संभावित परिणामों से संबंधित हैं।

मुख्य नकारात्मक पहलू और आलोचनाएं:–

कार्यान्वयन की चुनौतियाँ: यह सबसे बड़ी चिंता है। नीति में कई महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, लेकिन उन्हें जमीनी स्तर पर कैसे लागू किया जाएगा, इसकी स्पष्ट और विस्तृत रूपरेखा का अभाव है। भारत जैसे विशाल और विविध देश में सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में समान रूप से नीति को लागू करना एक बड़ी चुनौती है।

संसाधनों की कमी और वित्तीय चुनौतियाँ: NEP 2020 में शिक्षा पर जीडीपी का 6इ खर्च करने का लक्ष्य रखा गया है। यह एक सराहनीय लक्ष्य है, लेकिन इसे प्राप्त करना काफी मुश्किल हो सकता है। पर्याप्त फंडिंग के बिना, डिजिटल बुनियादी ढांचे का विकास, शिक्षकों का प्रशिक्षण, और अन्य आवश्यक बदलावों को लागू करना संभव नहीं होगा।

बुनियादी ढांचा: नई संरचना (5+3+3+4) को लागू करने के लिए स्कूलों में पर्याप्त बुनियादी ढांचे, जैसे कि स्मार्ट क्लास, लैब और खेल के मैदान, की कमी एक बड़ी चुनौती है।

राज्यों के साथ समन्वय: शिक्षा एक समवर्ती विषय है, यानी केंद्र और राज्य दोनों का इस पर अधिकार है। नीति को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सभी राज्यों के साथ मजबूत समन्वय और सहयोग की आवश्यकता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण और तैयारी: नीति में शिक्षकों की भूमिका को बहुत महत्वपूर्ण बताया गया है और उनके लिए नए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। हालांकि, मौजूदा शिक्षकों को नई शिक्षण विधियों और बहु–विषयक दृष्टिकोण के लिए प्रशिक्षित करना एक बड़ी चुनौती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

डिजिटल असमानता: नीति में डिजिटल शिक्षा पर बहुत जोर दिया गया है। यह उन छात्रों के लिए एक समस्या बन सकती है, जिनके पास इंटरनेट, कंप्यूटर या स्मार्टफोन जैसी बुनियादी डिजिटल सुविधाओं की कमी है। इससे गरीब और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए शिक्षा की असमानता और बढ़ सकती है।

मातृभाषा में शिक्षा का मुद्दा: नीति में कक्षा 5 तक, और संभव हो तो कक्षा 8 तक, मातृभाषा में शिक्षा देने का सुझाव है। हालांकि, यह उन छात्रों के लिए एक चुनौती बन सकता है जो बाद में उच्च शिक्षा या रोजगार के लिए ऐसे राज्यों में जाते हैं जहां दूसरी भाषाएं बोली जाती हैं।

निजीकरण का डर: कुछ आलोचकों का मानना है कि NEP 2020 शिक्षा के निजीकरण और व्यावसायीकरण को बढ़ावा दे सकती है। नई नीति के तहत निजी स्कूलों और कॉलेजों को प्रोत्साहन मिल सकता है, जिससे गरीब और वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच और भी मुश्किल हो सकती है।

बोर्ड परीक्षाओं का दबाव: नीति में बोर्ड परीक्षाओं को आसान बनाने और उन्हें साल में दो बार आयोजित करने का प्रस्ताव है, लेकिन कुछ आलोचकों को डर है कि इससे छात्रों पर परीक्षा का दबाव कम होने के बजाय बढ़ सकता है।

पाठ्यक्रम और शिक्षा की एकरूपता: कुछ आलोचकों को यह भी चिंता है कि देश भर में एक समान पाठ्यक्रम और मानकों को लागू करने से क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता को नजरअंदाज किया जा सकता है।

संक्षेप में, NEP 2020 में कई सकारात्मक पहलू हैं, लेकिन इसके सफल कार्यान्वयन के लिए संसाधनों, शिक्षकों के प्रशिक्षण और डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

मानसून सीजन में भी पंजाब से बीकानेर कैनाल में नहीं मिल रहा तय हिस्से का पानी

- **हालात इस कदर खराब है कि इस माह प्रदेश के पानी का हिस्सा 2500 क्यूसेक है, लेकिन राजस्थान बॉर्डर के खखां हैड पर सिर्फ 1628 क्यूसेक ही पानी मिल रहा है**
- **किसानों को उम्मीद थी कि बारिश के सीजन व इसके बाद नहरों में भी पर्याप्त पानी मिलता रहेगा, लेकिन अब तय हिस्से का भी पूरा पानी नहीं मिल पा रहा है**

श्रीगंगानगर, (निसं)। मानसून सीजन बीतने में अभी डेढ़ माह से अधिक का समय बाकी है। वहीं हिमाचल क्षेत्र में बारिश भी जमकर हो रही है। बांधों में भी पानी की आवक भरपूर है। इसके बावजूद बीकानेर कैनाल में पंजाब से तय हिस्से का पूरा पानी नहीं मिल पा रहा है। हालात इस कदर खराब है कि इस माह प्रदेश के पानी का हिस्सा 2500 क्यूसेक है, लेकिन राजस्थान बॉर्डर के खखां हैड पर सिर्फ 1628 क्यूसेक ही पानी मिल रहा है।

बीकानेर कैनाल में तय हिस्से का पूरा पानी न मिलने के कारण गंगनहर से जुड़ी वितरिकाओं में पानी का प्रवाह प्रभावित हो रहा है। इससे किसानों की सिंचाई बारियां भी पिट रही है। श्रीगंगानगर जिले में इस बार किसानों ने जुलाई में हुई अच्छी बारिश से खेतों में नमी के आधार पर बंपर बुवाई की है। किसानों को उम्मीद थी कि बारिश के सीजन व इसके बाद नहरों में भी पर्याप्त पानी मिलता रहेगा, लेकिन अब तय हिस्से का भी पूरा पानी नहीं मिल पा रहा है। गत 10 दिनों से जिलेभर में बारिश न होने के कारण तापमान फिर से बढ़ने लगा है। इन दिनों अधिकतम तापमान 40 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह रहा है। इससे फसलों में सिंचाई पानी की मांग भी बढ़ रही है।

नहरों में पूरा सिंचाई पानी नहीं मिलने के कारण किसानों में आक्रोश है। पंजाब में फिरोजपुर फीडर से निकलने वाली सरहिंद फीडर में तय क्षमता से अधिक 5700 क्यूसेक पानी प्रवाहित हो रहा है। वहीं, ईस्टन कैनाल में भी 2700 क्यूसेक पानी प्रवाहित किया जा रहा है। बीकानेर कैनाल में आरडी 45 से 2302 क्यूसेक पानी प्रवाहित करना दर्शाया जा रहा है जबकि राजस्थान बॉर्डर के खखां हैड पर सिर्फ 1628 क्यूसेक पानी ही मिल पा रहा है। पंजाब में हरिके के हुसैनीवाला की ओर 28000 क्यूसेक पानी प्रवाहित किया जा रहा है, वहीं हुसैनीवाला से नियमित रूप से 25000 क्यूसेक पानी पाकिस्तान की ओर छोड़ा जा रहा है।

हरविंद्र सिंह गिल, प्रोजेक्ट चेयरमैन, गंगनहर श्रीगंगानगर का कहना है कि हरिके पर करीब 50 हजार क्यूसेक पानी की आवक हो रही है तथा यहां से फिरोजपुर फीडर में 8900 क्यूसेक, राजस्थान कैनाल में 13795 क्यूसेक, महू कैनाल में 212 क्यूसेक पानी प्रवाहित किया जा रहा है। मानसून सीजन में ही पंजाब सिंचाई विभाग के अधिकारी हमारे हिस्से का पूरा पानी बीकानेर कैनाल में नहीं दे रहे हैं। जबकि बांधों में पानी की बंपर आवक हो रही है। हमारे यहां किसान सिंचाई पानी के लिए तरस रहे हैं। यही स्थिति रही तो किसानों के पास आंदोलन के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

साढ़े तीन साल की अश्विका ने राम स्तुति सुनाने का विश्व रिकॉर्ड बनाया

अश्विका मात्र सिर्फ एक मिनट 32 सैकेंड में राम स्तुति सुना देती है

- **इस कीर्तिमान के लिए जो मेहनत है वो अश्विका के परिवार वालों और गुरु नवीन राव की है**
- **दादी ललिता सोडानी और बड़ी मां पिंकी के साथ मंत्रों का उच्चारण करती रही है अश्विका**

भीलवाड़ा, (निसं)। अगर मां बाप की अच्छी परवरिश और गुरु का साथ मिल जाए तो दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं है। ऐसा कीर्तिमान बनाया है साढ़े तीन साल की अश्विका माहेश्वरी ने। महज साढ़े तीन साल की अश्विका के नाम विश्व रिकॉर्ड दर्ज हुआ है, क्योंकि जिस उम्र के बच्चे क, ख, ग बोलने में सोचते हैं उस उम्र में अश्विका पूरी राम स्तुति सुना देती है वो भी सिर्फ एक मिनट 32 सैकेंड में। यह रिकॉर्ड उसके नाम पर है लेकिन इस कीर्तिमान के लिए जो मेहनत है वो उसके परिवार वालों और गुरु नवीन राव की है।

अश्विका के पापा अखिल सोडानी कहते हैं कि बेटी शुरुआत से ही होशियार है। चीजों को याद करने की क्षमता जबरदस्त है। हम भी पहले हैरान हो जाते थे, जब उसको वो सब बाते भी याद रह जाती थी, जो कई दिन पहले बोली गई हो। मां आंचल माहेश्वरी बताती है कि परिवार में आस्था का माहौल है। भगवान के मंत्र, स्तुतियां आदि रोजाना के पूजा–पाठ का हिस्सा है। करीब तीन साल की उम्र में अश्विका रुक–रुककर राम स्तुति बोल लिया करती थी। इसकी प्रतिभा को और निखारने के लिए गुरु की जरूरत थी। नवीन राव के रूप में हमें ऐसे गुरु मिले जो बच्ची को समझते भी थे और इसकी प्रतिभा को निखारने की कला भी जानते थे। बस यहीं से इसकी संगीत में तालीम शुरू हो गई। परिवार में धार्मिक माहौल और गुरु जी की शिक्षा का ऐसा असर हुआ कि अश्विका ने रिकॉर्ड बना लिया। इसकी संगीत की तालीम शुरू हुई थी जब यह पता नहीं था कि ये कीर्तिमान बना सकती है, लेकिन गुरु नवीन राव ने हमें भरोसा दिलाया।

बड़े पापा निखिल सोडानी ने बताया कि कि अश्विका कम उम्र से ही अपनी दादी ललिता सोडानी और बड़ी मां पिंकी माहेश्वरी के साथ साथ मंत्रों का उच्चारण करती रही है। अपनी नानी सत्यबाला मूंदड़ा के सहयोग से कई मंत्रों को कंठस्थ कर लिया। इस उपलब्धि का क्रेडिट अश्विका की माता आंचल माहेश्वरी को जाता है क्योंकि उनका धार्मिक आचरण और धार्मिक प्रवृति के कारण बचपन से अश्विका को धर्म और भजन कीर्तन में बहुत रुचि रही है।

साढ़े तीन साल की अश्विका माहेश्वरी के नाम विश्व रिकॉर्ड दर्ज हुआ। (परिवार के साथ)

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 11 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, शतभिषा नक्षत्र दिन 1:00 तक, अतिगंड योग रात्रि 9:34 तक, गर करण दिन 10:34 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–कर्क, चन्द्रमा–कुम्भ, मंगल–कन्या, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–मिथुन, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज भद्रा रात्रि 9:37 से आरम्भ होगी। बुध मार्गी दिन 1:00 पर होगा। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:38 तक, शुभ 9:16 से 10:54 तक, चर 2:10 से 3:48 तक, लाभ–अमृत 3:48 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:04

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में कष्ट हो सकता है।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

कन्या
अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृश्चिक
घर–परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। मन का भय समाप्त होगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

मीन
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

फर्जी दस्तावेजों से सरकारी नौकरी प्राप्त करने वाले 72 शिक्षकों के खिलाफ मामला दर्ज

प्राप्त जांच रिपोर्टों के आधार पर 72 कर्मचारियों की भर्ती में गंभीर अनियमितताएं पाई

- जांच में खुलासा हुआ है कि सबसे ज्यादा संदिग्ध शिक्षक जालोर जिले से सामने आए हैं। इनमें से कुछ 2016 और 2021 की भर्तियों में चयनित हुए थे और वर्तमान में विभिन्न स्कूलों में कार्यरत हैं
- कई उम्मीदवारों ने 2016, 2018 और 2021 की शिक्षक भर्ती परीक्षाओं में फर्जी दस्तावेज प्रस्तुत किए

जयपुर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने फर्जी दस्तावेज और डमी कैंडिडेट के सहारे सरकारी नौकरी प्राप्त करने विभिन्न जिलों में कार्यरत 72 शिक्षकों के खिलाफ धोखाधड़ी और आपराधिक षड्यंत्र का मामला दर्ज किया है। गौरतलब है कि प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर की जांच रिपोर्ट के आधार पर यह कार्रवाई राज्य सरकार के कार्मिक विभाग के निर्देशों पर की गई है, जो कि पिछले पांच वर्षों में हुई शिक्षकों की भर्तियों की व्यापक जांच के बाद सामने आई है।

जानकारी के अनुसार राज्य सरकार ने पिछले वर्ष आदेश जारी कर सभी विभागों को निर्देशित किया था कि वे वर्ष 2019 से 2024 के बीच नियुक्त हुए कर्मचारियों की शैक्षिणक योग्यता, आवेदन पत्र, फोटो और हस्ताक्षरों का मिलान करते हुए सत्यापन करें। इस आदेश के तहत प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर ने संभाग स्तर पर चार सदस्यीय जांच समितियां गठित कीं। इन समितियों ने बीकानेर, जयपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा, भरतपुर संभाग से प्राप्त जांच रिपोर्टों के आधार पर 72 कर्मचारियों की भर्ती में गंभीर अनियमितताएं पाईं।

जांच रिपोर्ट के अनुसार खुलासा हुआ है कि कई उम्मीदवारों ने 2016, 2018 और 2021 की शिक्षक भर्ती परीक्षाओं में फर्जी दस्तावेज प्रस्तुत किए। कुछ मामलों में तो डमी कैंडिडेट को परीक्षा में बैठाया गया। जांच में फोटो, हस्ताक्षर और रीट पात्रता प्रमाण पत्रों में विसंगतियां सामने आईं।

जांच में खुलासा हुआ है कि सबसे ज्यादा संदिग्ध शिक्षक जालोर जिले से सामने आए हैं। इनमें से कुछ 2016 और 2021 की भर्तियों में चयनित हुए थे और वर्तमान में विभिन्न स्कूलों में कार्यरत हैं। एसओजी ने 72 शिक्षकों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सरकारी योजना के नाम पर ठगी कर जन्म प्रमाण पत्र जारी करवाने वाला आरोपी गिरफ्तार

- आरोपी ने दो से अधिक सन्तान होने पर तीसरी सन्तान बेटी का दस्तावेजो में लोप किया जाने के लिये आरोपी ने स्वंय के समान नाम के व्यक्ति व महिला के नाम का किया उपयोग

जयपुर। राजर्षि राज आई.पी.एस पुलिस उपायुक्त (दक्षिण) जयपुर ने बताया की दिनांक 11-02-2017 में परिवादी ओम प्रकाश साहु पुत्र रामनिवास साहू जाती तेली उम्र 48 साल निवासी ग्राम जीवद थाना बाटोदा तहसील बामनवास जिला सवाई माधोपुर ने जरिये इस्तगासा न्यायालय एसीजेएम क्रम 08 जयपुर महानगर प्रथम के मार्फत पुलिस थाना ज्योतिनगर जयपुर में एक रिपोर्ट भिजवायी की एक कृपाल नाम के अज्ञात शक्स ने मुझे व मेरी बेटीयो को बीपीएल कार्ड धारक होने पर सरकारी सहायता दिलवाने की नाम पर मेरी बेटी कोमल का जन्म प्रमाण पत्र आरोपी ने स्वयं की बेटी के जन्म स्थान व जन्म दिनांक अंकित किया जाकर मेरी बेटी कोमल के नाम से कुटरचित जन्म प्रमाण पत्र बनवाया जाकर दुर उपयोग किया गया है। इस पर मामला दर्ज कर अनुसंधान प्रारम्भ किया गया।

ओमप्रकाश मीना द्वारा सरपंच पद का चुनाव लडने के लिये जयपुर में रहने वाले स्वयं के नाम व स्वंय की पत्नि के समान नाम वाले परिवादी ओमप्रकाश साहु व उसकी पत्नि गायत्री देवी की लडकीयो को सरकारी सहायता राशि दिलाने के नाम पर परिवादी ओमप्रकाश साहु के साथ धोखाधडी करके उसकी पुत्री कोमल का जन्म बरनाला राजकीय प्राथमिक अस्पताल व जन्म दिनांक 27-08-2009 का ज्ञात किया जाकर ओमप्रकाश ने स्वयं की बेटी लक्ष्मी के जन्म दिनांक 27-10-2008 व जन्म स्थल सैटेलाईट अस्पताल सेठी कॉलोनी जयपुर के स्थान पर परिवादी की बेटी कोमल का जन्म स्थान व जन्म दिनांक दर्शाकर धोखाधडी कर जन्म पत्र आवेदन फार्म पर परिवादी से हस्ताक्षर करवाकर नगर निगम मोती डुगंरी जोन 03 जयपुर में रजिस्ट्रेशन न.108064437 पर परिवादी की बेटी कोमल का जन्म प्रमाण पत्र जारी करवाया। जिस पर राजकिय सैटेलाईट अस्पताल सैठी कॉलोनी से आरोपी की पत्नि गायत्री देवी के डिलेवरी भर्ती दिनांक व बच्ची के जन्म उपरान्त डिस्चार्ड व प्रस्तु को मिलने वाली 1000/- रुपये सहायता राशि प्राप्ती दस्तावेज व नगर निगम मोती डुंगरी जोन 03 में आरोपी की पुत्री लक्ष्मी के जन्म रजिस्ट्रेश दस्तावेज प्राप्त किये गये तथा परिवादी के पुत्री कोमल के राजकीय प्राथमिक अस्पताल बरनाला से दस्तावेज प्राप्त किये। ओमप्रकाश मीना द्वारा बेटी लक्ष्मी का दस्तावेजी रिकोर्ड में लोप किया जो षडयन्त्र पुर्वक परिवादी के साथ धोखाधडी कर तथ्यो का लोप कर फर्जी व कुट रचित जन्म प्रमाण पत्र बनवाया, सरपंच पद के आवेदन में तथ्य छिपाया जिस पर ओमप्रकाश को धारा 420,467,468,471,120बी में जुर्म प्रमाणित पाये जाने पर बापर्दा गिरफ्तार करके न्यायालय में पेश किया गया। तथा वर्तमान में न्यायीक अभिरक्षा में भिजवाया गया।

लैटिन अमेरिकी देशों के 24 कंटेंट क्रिएटर्स ने उपमुख्यमंत्री से की मुलाकात

जयपुर। विदेश मंत्रालय की जन कूटनीति पहल के तहत भारत भ्रमण पर आए लैटिन अमेरिकी देशों के 24 कंटेंट क्रिएटर्स के प्रतिनिधिमंडल ने आज सिटी पैलेस में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी से शिष्टाचार भेंट की। यह प्रतिनिधिमंडल ब्राज़ील, मैक्सिको, अर्जेंटीना, चिली, कोलंबिया, पेरू, पनामा, कोस्टा रिका, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद-टोबैगो और जमैका जैसे देशों से आया है। 9 से 15 अगस्त तक राजस्थान प्रवास के दौरान ये सभी भारत की समृद्ध विरासत, जीवंत संस्कृति और विविधतापूर्ण जीवन शैली से रूबरू हो रहे हैं।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि इस तरह की पहलों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की सांस्कृतिक धरोहर और पर्यटन संभावनाओं का प्रभावी प्रचार-प्रसार होता है।

उन्होंने प्रतिनिधिमंडल को राजस्थान की कला, स्थापत्य और आतिथ्य परंपरा से अवगत कराया और उनके अनुभव जानने में रुचि दिखाई।

देवनानी ने नागेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन किये

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने रविवार को सपरिवार द्वारका में स्थित पवित्र नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर में दर्शन एवं पूजा-अर्चना का सौभाग्य प्राप्त किया। नागेश्वर ज्योतिर्लिंग, भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक, श्रद्धालुओं के लिए आस्था, आध्यात्मिक शांति और दिव्य शक्ति का अद्वितीय केंद्र माना जाता है।

'जयपुर में 6 अक्टूबर को 50 हजार किसान भरेंगे हुंकार'

- एक गांव से औसत एक किसान प्रतिनिधि के अनुसार राजस्थान के 45,539 गांव से 50,000 किसान इस रैली में भागीदारी करेंगे

जयपुर। प्रदेश के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक सेंट्रल पार्क जयपुर में संपन्न हुई। जिसमें 7- 8 जून को आयोजित हुई प्रदेश स्तरीय कार्यशाला में "खेत को पानी, फ़सल को दाम, युवाओं को काम" के लिए 6 अक्टूबर को "अन्नदाता हुंकार रैली" की अब तक की तैयारी की समीक्षा की तथा आगामी 55 दिनों के लिए रणनीति तैयार की। एक गांव से औसत एक किसान प्रतिनिधि के अनुसार राजस्थान के 45,539 गांव से 50,000 किसान इस रैली में भागीदारी करेंगे। बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अमेरिका की धमकियों से कृषि क्षेत्र को अमेरिका के व्यापार के लिए खोलने को किसान हितों के विरुद्ध बताया। भारत सरकार द्वारा अमेरिका की धमकियों के सामने नहीं झुकने को दृढ़ता के साथ खड़े रहने को देश के लिए अच्छा कदम निरूपित किया।

इसी के साथ दूसरा प्रस्ताव कृषि सहित विद्युत उपभोक्ताओं को स्मार्ट मीटर लगाने के लिए बाध्यकरने की आलोचना की तथा इसे स्वेच्छिक रखने का आग्रह किया। इस अवसर पर किसान महापंचायत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रोतास बोहरा, प्रदेश अध्यक्ष मुसद्दीलाल यादव, महामंत्री सुंदरलाल भावरिया, प्रदेश संगठन मंत्री गोवर्धन तेतरवाल, प्रदेश मंत्री मनजिंदर सिंह अटवाल एवं महेश जाखड़, प्रदेश मीडिया प्रभारी सुरेश बिजारणिया, युवा प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वर चौधरी, खैरथल-तिजारा के जिला अध्यक्ष वीरेंद्र क्रांतिकारी, तहसील मुंडावर के अध्यक्ष रामभरोस यादव, तहसील हरसोली के अध्यक्ष थानेदार शेर सिंह दहिया, तहसील बहरोड़ के अध्यक्ष राम सिंह, जिला अध्यक्ष हिंडौन भरत डागुर, महामंत्री वेद प्रकाश शर्मा, टोंक जिला अध्यक्ष गोपी लाल जाट, अलवर जिला अध्यक्ष फूल सिंह, बारां जिला अध्यक्ष नरेंद्र चौहान आदि ने भाग लिया।

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर

राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस

समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को

मुकदमा नम्बर 59/2025

(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)

चूंकि श्री करन शर्मा ने पंजीकृत प्रन्यास श्री स्वामी रामप्रकाश भजन दास ट्रस्ट नथमल जी चौक, जौहरी बाजार, जयपुर जिसका पंजीयन क्रमांक 22 जयपुर 2006 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत प्रन्यास श्री जनकराज साख्यांन का स्वर्गवास हो जाने के कारण उनके स्थान पर स्वयं का नाम प्रन्यास रिकार्ड में दर्ज अभिलेख किये जाने के लिए प्रपत्र -8 में आवेदन-पत्र दिया है।

अतएवं धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुवे परिवर्तन / संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।

और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।

आज दिनांक 10.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।

आइन्दा तारीख पेशी 14.08.2025

मोहर अदालत

सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर

राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अधीन नोटिस

समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को

मुकदमा नम्बर 60/2025

(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)

चूंकि श्री करन शर्मा ने पंजीकृत प्रन्यास श्री स्वामी रामप्रकाश भजन दास ट्रस्ट नथमल जी चौक, जौहरी बाजार, जयपुर जिसका पंजीयन क्रमांक 29 जयपुर 2003 है के सम्बन्ध में राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 23 के अन्तर्गत प्रन्यास श्री जनकराज साख्यांन का स्वर्गवास हो जाने के कारण उनके स्थान पर स्वयं का नाम प्रन्यास रिकार्ड में दर्ज अभिलेख किये जाने के लिए प्रपत्र -8 में आवेदन-पत्र दिया है।

अतएवं धारा 23 में प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास में हुए परिवर्तन / संशोधन जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे।

और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नहीं की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।

आज दिनांक 10.07.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।

आइन्दा तारीख पेशी 14.08.2025

मोहर अदालत

सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक कराएं।

राज.कॉलेज में 12 अगस्त को एनसीसी कैडेट्स की भर्ती

जयपुर। विश्वविद्यालय राजस्थान कॉलेज की प्रथम राज आर्म्ड स्क्वाड्रन एनसीसी यूनिट में शैक्षिणक सत्र 2025-26 हेतु कैडेट्स की भर्ती 12 अगस्त, मंगलवार को प्रातः 7 बजे से राजस्थान कॉलेज के स्पोर्ट्स ग्राउंड में होगी। यूनिट के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल राम मधुकर शर्मा ने बताया कि विगत वर्षों से एनसीसी कैडेट के रूप में आर्म्ड यूनिट में भर्ती होना विद्यार्थियों की सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। इच्छुक विद्यार्थी निर्धारित समय व स्थान पर आवश्यक दस्तावेजों की फोटोकॉपी के साथ भर्ती प्रक्रिया में भाग लें। एनसीसी ऑफिसर मेजर राजेश कुमार शर्मा ने बताया कि भर्ती में वही विद्यार्थी भाग ले सकते हैं जिन्होंने इस सत्र में राजस्थान कॉलेज में बी.ए. प्रथम वर्ष में नियमित विद्यार्थी के रूप में प्रवेश लिया है और जिनके पास फीस रसीद की फोटोकॉपी एवं किसी भी मान्य फोटो पहचान पत्र (आधार कार्ड, वोटर आईडी, ड्राइविंग लाइसेंस, कॉलेज आईडी आदि) उपलब्ध हो।एनसीसी कैडेट बनना न केवल अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास को विकसित करता है, बल्कि यह देश सेवा का अवसर भी प्रदान करता है। एनसीसी प्रशिक्षण से युवाओं में शारीरिक क्षमता, मानसिक दृढ़ता और टीम भावना का विकास होता है। साथ ही, रक्षा सेवाओं में प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए एनसीसी प्रमाणपत्र अतिरिक्त योग्यता के रूप में सहायक सिद्ध होता है।

बस्सी में सोमवार से शुरू होगी सेक्स-सॉर्टेड सीमेन लैब

जयपुर। जिले के बस्सी में संचालित सीमन स्टेशन में सोमवार, 11 अगस्त-2025 को अपराह्न तीन बजे सैक्स सोर्टेड सीमन तैयार करने वाली अत्याधुनिक लैब का उदघाटन होगा। यह उदघाटन समारोह नेशनल डेयरी डवलपमेंट बोर्ड के चैयरमैन डॉ. मिनेश शाह, राजस्थान सरकार के पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत तथा राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढम, शासन सचिव, पशुपालन एवं गोपालन डॉ. समित शर्मा, आरसीडीएफ की एमडी श्रुति भारद्धाज की गरिमामयी उपस्थिति में टोंक रोड, जयपुर स्थित आरसीडीएफ सभागार में आयोजित किया जाएगा।

जेवर लूट के इरादे से बदमाशों ने बाइक सवार महिला की बेरहमी से हत्या की, पति गंभीर घायल

बदमाशों ने गले से जेवरात लूटने के इरादे से महिला का गला काटा, पुलिस ने जांच शुरू की

एसपी वंदिता राणा ने टीम के साथ घटनास्थल का मौका मुआवना कर अस्पताल में जानकारी ली।

वारदात के बाद मौके पर पहुंचे राहगीरों ने मृतक महिला व इसके घायल पति को अस्पताल पहुंचाया।

मदनगंज-किशनगढ़, (निसं)। किशनगढ़ सिटी थाना अंतर्गत नक्षत्र वन के पास लूटपाट के इरादे से पहले से ही बैठे बेखौफ लुटेरे महिला की दिनदहाड़े हत्या करने के बाद जेवरात लूटकर फरार हो गये। वहीं लुटेरों में महिला के पति के साथ मारपीट की। मृतका गांव उदयपुर कला निवासी संजू माली (35) है, जबकि गंभीर रूप से घायल इसके पति रोहित माली (37) को राजकीय यज्ञनारायण अस्पताल में भर्ती कराया है।

सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस अधीक्षक वंदिता राणा ने पूरी टीम के साथ घटनास्थल का मौका मुआवना कर अस्पताल में भर्ती घायल युवक से आवश्यक जानकारी ली। अस्पताल में एकत्रित माली समाज के सैकड़ों लोगों ने विरोध प्रदर्शन कर उचित मुआवजा के साथ कातिलों को गिरफ्तार करने की मांग को लेकर शव की सुपुर्दगी लेने से साफ इंकार कर दिया।

- **पल्सर बाइक सवार दम्पती ससुराल गांव रलावता से राखी का त्यौहार मनाकर अपने गांव उदयपुर कला जा रहे थे**
- **अस्पताल में एकत्रित माली समाज के सैकड़ों लोगों ने विरोध प्रदर्शन कर उचित मुआवजा के साथ कातिलों को गिरफ्तार करने की मांग की**

जानकारी अनुसार पल्सर बाइक सवार दम्पती ससुराल गांव रलावता से राखी का त्यौहार मनाकर अपने गांव उदयपुर कला जा रहे थे। इस दौरान दोपहर करीब एक बजे बजे नक्षत्र वन के पास सुनसान जगह पर नकाबपोश बदमाशों ने बाइक सवार दम्पती को घेर लिया और डंडों से मारपीट शुरू कर जेवरात लूटने के इरादे से कटरनुमा हथियार से पति के सामने पत्नी का गला काट दिया। रक्तरंजित हालात में तड़प रहा पति चाहकर भी बदमाशों के नजदीक नहीं पहुंच सका। लुटेरे महिला के कान में से सोने के कुंडल, मंगलसूत्र व अन्य आभूषण सहित पल्सर वाइक लुटकर चम्पत हो गये, जबकि शातिर बदमाशों ने आर्टिफिसियल जेवरातों को हाथ तक नहीं लगाया। राहगीरों ने मृतक महिला व इसके घायल पति को अस्पताल पहुंचाया। वारदात को लेकर आसपास दशहत का माहौल बना हुआ है। पुलिस ने घायल युवक के बयान, सीसीटीवी फुटेज के अलावा आवश्यक साक्ष्य को जांच के दायरे में शामिल कर अपराधियों की खोजबीन शुरू कर दी।

नशे के ओवरडोज से युवक की मौत की आशंका

श्रीगंगानगर, (निसं)। नशे की चपेट में आकर युवा लगातार जान गंवा रहे हैं। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने तक मामला संदिग्ध बना रहता है। वैशाली नगर के नजदीक आनंद विहार रेजिडेंसी के चौराहे पर युवक का शव अर्द्धनग्न अवस्था में मिला। मृतक की पहचान गुरू राज्यवर्धन सिंह (23) निवासी ढींगावाली जाटान हाल गणपति नगर के तौर पर हुई है। आशंका है कि युवक की मौत नशे की ओवरडोज से हुई है। शव के पास ही एक खाली सीरिंज पड़ी थी, जबकि मृतक के हाथ पर इंजेक्शन लगाने के काफी निशान थे। आशंका तो यह भी जताई जा रही है कि हाथों की नसें ब्लॉक होने के कारण युवक ने अंदरुनी अंगों के नजदीक की नसें में इंजेक्शन लगाने की कोशिश की। शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया गया।

- **अर्द्धनग्न अवस्था में शव के पास एक सीरिंज मिली, मृतक के हाथ पर इंजेक्शन लगाने के काफी निशान थे**
- **आशंका यह भी जताई जा रही है कि हाथों की नसें ब्लॉक होने के कारण युवक ने अंदरुनी अंगों के नजदीक की नसों में इंजेक्शन लगाने की कोशिश की**

जांच अधिकारी ने बताया कि मृतक के पिता नहीं हैं, जबकि भाई एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करता है। उन्होंने बताया कि परिवार ने नशे की लत छुड़वाने के लिए उपचार भी करवाया, लेकिन सुधार नहीं हुआ। गुरू राज्यवर्धन सिंह का शव आसपास निकलने वाले लोगों ने देखा था। करीब 9.30 बजे पुलिस को मामले की सूचना दी गई थी। इस बीच वीडियो सोशल मीडिया पर लगातार शेयर होता रहा। जिलेभर में नशे के कारण मौतों का आंकड़ा लगातार बढ़ रहा है। हालांकि नशे के कारण होने वाली हर मौत रजिस्टर्ड नहीं होती। गत दो माह में जिलेभर में पुलिस के पास करीब 15 केस आए हैं जिनमें मौत की वजह नशा लग रहा है। इसके अलावा बहुत से ऐसे केस भी हैं जिनकी सूचना पुलिस को भी नहीं मिलती है। काफी केसों में परिजन पोस्टमार्टम भी नहीं करवाते हैं। इस कारण सही आंकड़े सामने नहीं आ रहे। जिले के युवा सस्ते नशे के लिए अपनी जान दांव पर लगा रहे हैं।

खतरनाक केमिकल व मेडिकेटेड नशों को इंजेक्शन के तौर पर लेने के कारण मृत्यु की घटनाएं बढ़ रही हैं। बताया जाता है कि नशे के आदी युवक हेरोइन के अलावा ट्रामाडोल, प्रीगाबालीन जैसी दवाइयों के साल्ट को घोलकर इंजेक्शन लगा लेते हैं। इससे नशा एकदम नसों में घुलता है लेकिन मौत के नजदीक भी ले जाता है। विशेषज्ञों के मुताबिक मेडिकेटेड नशों से मौत वैसे ही तय होती है लेकिन इन्हें इंजेक्शन के तौर पर लेने से नुकसान बढ़ जाता है।

बिजौलियां पुलिस की नाकाबंदी देख कार छोड़कर भागे डोडा-चूरा तस्कर

पुलिस ने कार की तलाशी ली तो 409 किलोग्राम डोडा-चूरा बरामद हुआ

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा पुलिस का तस्करों में खौफ नजर आने लगा है। ताजा मामला बिजौलियां क्षेत्र का है, जहां पुलिस की नाकाबंदी देख तस्कर डोडा-चूरा और लग्जरी कार छोड़ फरार हो गए। हथियारबंद तस्करों के भागने का सीसीटीवी फुटेज भी अब सामने आया है। वहीं पुलिस ने कार की तलाशी ली तो 409 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा बरामद हुआ।

- **बिजौलियां पुलिस को तस्करों के हाथ में आधुनिक हथियार और एक काले रंग का बैग लिए भागते हुए का सीसीटीवी फुटेज हाथ लगा है**

बिजौलियां पुलिस ने कार समेत 409 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा बरामद किया।

जानकारी के अनुसार बिजौलियां कस्बे में पुलिसकर्मियों को देख हथियार बन्द तस्करों को महंगी लग्जरी गाड़ी को भी छोड़ कर भागना पड़ा है। जानकारी के अनुसार आठ अगस्त की शाम हाइवे सड़क पर बिजौलियां थाने के पुलिसकर्मी नाकाबन्दी कर रहे थे। इस दौरान एक फॉर्च्यूनर कार को रुकने का इशारा किया गया, लेकिन पुलिस को देख तस्कर डोडा-चूरा से भरी कार को छोड़ कर भाग छूटे, पुलिस ने कार की तलाशी में 409 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा बरामद किया। जांच के दौरान तस्करों की कार के नम्बर भी फर्जी बताए जा रहे हैं। कार में अन्य नम्बर प्लेट भी बरामद की गई है। बिजौलियां पुलिस को तस्करों के हाथ में आधुनिक हथियार और एक काले रंग का बैग लिए भागते हुए का सीसीटीवी फुटेज हाथ लगा है। इन सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस तस्करों की तलाश में जुटी हैं।

पैंथर ने गाय के बछड़े का शिकार किया

बौंली/बामनवास, (निसं)। क्षेत्र के ग्राम पंचायत थडौली गांव में देर रात को पहाड़ी से नीचे उतरकर एक पैंथर ने बाड़े में बंधी गाय व बछड़े पर हमला करके बछड़े का शिकार कर मौत के घाट उतार दिया, परिजनों के शोर मचाने पर पैंथर भाग कर पहाड़ी पर चढ़ कर ओझल हो गया।

- **शोर मचाने पर पैंथर भाग गया**

ग्रामीणों ने बताया कि पहाड़ी की तलहटी में बसे थडौली व अन्य गांवों में वन प्राणी पैंथरों का हमेशा मूवमेंट बना रहता है। इस बाबत अनेक बार वन विभाग को भी अवगत कराया गया, जिस पर वन विभाग ने पैंथरों को पकड़ने के लिए पिंजरा भी लगाया लेकिन पैंथर पिंजरे में कैद नहीं हो सके। कल देर रात्रि को थडौली निवासी विनोद कुमार शर्मा के बाड़े में गाय उसका बछड़ा बंधा हुआ था, पैंथर ने बछड़े का शिकार करके मौत के घाट उतार दिया। ग्रामीण वन विभाग से भी काफी नाराज नजर आ रहे हैं। उनका कहना है कि वन विभाग हिंसक वन प्राणी को रोकने का कोई ठोस उपाय नहीं कर रहे हैं। इस कारण ग्रामीणों के मवेशियों का शिकार हो जाता है।

नकली खाद-बीज की शिकायत पर कार्रवाई जारी

कृषि विभाग की टीम ने श्रीकरणपुर क्षेत्र में नई धानमंडी स्थित गौरव ट्रेडिंग कंपनी में छापा मारा

श्रीगंगानगर, (निसं)। श्रीकरणपुर क्षेत्र में नकली बीज, खाद और पेस्टीसाइड की बिक्री की शिकायतों के बाद रविवार को दूसरे दिन भी जांच जारी रही। कृषि विभाग की टीम ने शनिवार शाम पांच बजे नई धानमंडी स्थित गौरव ट्रेडिंग कंपनी में छापा मारा।

जांच में अनियमितताएं मिलने पर विभाग ने गौरव ट्रेडिंग कंपनी के खाद, बीज और पेस्टिसाइड की बिक्री पर रोक लगा दी। जानकारी के अनुसार एक किसान ने इस दुकान से खाद खरीदी थी। जब उसने बैग खोला तो उसमें पत्थर के टुकड़े और लोहे की पत्तियां मिलीं। इसकी शिकायत कृषि विभाग को की गई। कृषि अधिकारी दिनेश झाला के नेतृत्व में टीम ने दुकान संख्या 215 गौरव ट्रेडिंग कंपनी और उसके गोदाम में सर्च अभियान चलाया। इस दौरान किसान द्वारा खरीदी गई खाद का गोदाम और दुकान में मिलान नहीं हो पाया। गोदाम में पॉस मशीन, पेस्टिसाइड बिल, स्टॉक रजिस्टर और खाद के स्टॉक में कमियां मिलीं। कृषि विभाग ने खाद के सील बंद नमूने भी लिए हैं।

- **जांच में अनियमितताएं मिलने पर विभाग ने गौरव ट्रेडिंग कंपनी के खाद, बीज और पेस्टिसाइड की बिक्री पर रोक लगाई**

अधिकारियों ने बताया कि इन नमूनों की लैब में जांच करवाई जाएगी। कृषि विभाग की कार्रवाई शनिवार देर शाम तक जारी रही और रविवार सुबह फिर से अधिकारी जांच में जुट गए हैं। इधर सादुलशहर में भी कृषि विभाग की टीम ने भूकर का ट्रेडिंग कंपनी का अचानक निरीक्षण किया। फर्म के रिकॉर्ड में भारी अनियमितताएं मिलने पर कंपनी को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है। साथ ही उर्वरक बेचने पर रोक लगा दी गई है। यह कार्रवाई सहायक निदेशक कृषि सादुलशहर स्वर्ण सिंह अराई और कृषि अधिकारी विनोद पोटलिया की टीम द्वारा की गई। निरीक्षण के दौरान अनधिकृत रूप से उर्वरकों का विक्रय करने पर अमोनियम सल्फेट के 14 बैग, सल्फर के 319 पैकेट और मैग्नीशियम सल्फेट के 194 पैकेट की बिक्री पर रोक लगाई गई है। इसके साथ ही फर्म संचालक को कारण बताओ नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा गया है।

पन्द्रह लाख का डोडा-चूरा पकड़ा, दो गिरफ्तार

नाकाबंदी देख भागने लगा तस्कर, सलूंबर थाना पुलिस ने पीछा कर पकड़ा

उदयपुर, (निसं)। सलूंबर पुलिस ने मादक पदार्थ तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए 15 लाख रुपए का 605.54 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा बरामद किया है। इस कार्रवाई में एक पिकअप जब्त कर दो तस्करों को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी हेमंत चौहान ने बताया कि देवगांव स्थित रजवाडी होटल के सामने उदयपुर-बांसवाडा स्टेट हाइवे पर नाकाबंदी कर वाहनों की जांच की जा रही थी। इस दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि झल्लारा की ओर से एक संदिग्ध पिकअप तेज गति से आ रही है, जिसमें मादक पदार्थ भरा हो सकता है। पुलिस ने पिकअप को रुकने का इशारा किया तो गाड़ी को देखते ही चालक दूसरी दिशा में टर्न लेकर भागने लगा। पुलिस ने पीछाकर रजवाडी होटल के आगे सड़क पर वाहन को रोका। चालक और उसके साथी ने भागने की कोशिश की लेकिन पुलिस ने घेराबंदी कर दोनों को पकड़ लिया। पूछताछ में उनकी पहचान चित्तौड़गढ़ जिले के बड़ी सादड़ी थाना क्षेत्र के खेरमालिया निवासी संतर खान पुत्र मुंशी खान और उदयपुर के भींडर निवासी ओंकार पुत्र गणेशलाल गाडरी के रूप में हुई है। पिकअप की तलाशी में काले रंग के प्लास्टिक के 30 कट्टे बरामद हुए, जिनमें 605.54 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा भरा था। आरोपियों के पास मादक पदार्थ परिवहन के कोई कागजात नहीं थे। पुलिस ने अवैध डोडा-चूरा और पिकअप वाहन को जब्त कर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

- **605.54 किलो अवैध डोडा-चूरा बरामद कर एक पिकअप वाहन जब्त किया**

बरगमा गांव में दो मासूम भाइयों की मौत, गांव में पसरा मातम

रात को पुरी, पनीर की सब्जी और मिठाई खाने के कुछ घंटों बाद ही भाइयों की मौत हो गई

हिंडौन सिटी, (निसं)। बरगमा गांव में रविवार सुबह रक्षाबंधन के अगले ही दिन एक हृदयविदारक घटना ने पूरे गांव को गमगीन कर दिया। रात को पुरी, पनीर की सब्जी और मिठाई खाने के कुछ घंटों बाद ही दो सगे मासूम भाइयों की अचानक मौत हो गई। परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा, तो गांव में मातम पसर गया।

- **पुलिस के अनुसार फिलहाल मौत का कारण स्पष्ट नहीं है, फूड पॉइजनिंग, सर्पदंश सहित सभी संभावनाओं पर जांच की जा रही है**
- **मेडिकल बोर्ड से पोस्टमॉर्टम कराकर विसरा एफएसएल भेजा गया है, जिसकी रिपोर्ट के बाद ही सच्चाई सामने आएगी**

परिजनों के अनुसार, शनिवार रात रक्षा बंधन पर घर में रिश्तेदार आए हुए थे। रात करीब 10 बजे सभी ने घर पर बनी पुरी, पनीर की सब्जी और रिश्तेदारों के लाए हुए मिठाई के डिब्बे का स्वाद लिया। खाना खाने के बाद बड़ा बेटा मनीष (11) मां सोनम के साथ और छोटा बेटा सुशील (8) पिता लच्छी जाटव के साथ अलग-अलग चारपाइयों पर सो गया। रविवार सुबह करीब चार बजे दोनों बच्चों के पेट में तेज दर्द शुरू हुआ। दर्द इतना ज्यादा था कि वे चिल्लाने लगे। परिवार वालों ने तुरंत संभाला, लेकिन हालत बिगड़ती देख सुबह करीब छह बजे जिला अस्पताल लेकर पहुंचे। डॉक्टरों ने जांच के बाद दोनों को मृत घोषित कर दिया। सदर थाना एएसआई रजन लाल ने बताया कि फिलहाल मौत का कारण स्पष्ट नहीं है। फूड पॉइजनिंग, सर्पदंश सहित सभी संभावनाओं पर जांच की जा रही है। मेडिकल बोर्ड से पोस्टमॉर्टम कराया गया है और विसरा एफएसएल भेजा गयाहै, जिसकी रिपोर्ट के बाद ही सच्चाई सामने आएगी।हिंडौन जिला अस्पताल के डॉक्टर विजय सिंह मीना ने बताया कि दोनों बच्चों की मौत अस्पताल लाने से पहले ही हो चुकी थी। पिता लच्छी जाटव, जो मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करते हैं, के पास अब न कोई बेटा बचा और न ही त्योहार की कोई खुशी। मनीष कक्षा 5 और सुशील कक्षा 2 में गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। दोनों होनहार और चंचल थे।

आयल व ग्रीस से भरा ट्रेलर पलटा, सड़क पर बिखरा सामान

हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई।

पावटा, (निसं)। राष्ट्रीय राजमार्ग-48 पावटा उपजिला अस्पताल कट पर रविवार शाम एक ट्रेलर पलट गया। गनीमत रही कि ट्रक पलटने से कोई जनहानि नहीं हुई।

- **ट्रेलर के सामने अचानक गौ वंश आने से ड्राइवर द्वारा अचानक ब्रेक लगाने से हादसा हुआ**

बताया गया है उक्त ट्रेलर गुजरात से नजफगढ़ दिल्ली जा रहा था, जिसमें ऑयल व ग्रीस भरा था। ट्रेलर के सामने अचानक गौ वंश के आने से ड्राइवर द्वारा अचानक ब्रेक लगाने से ट्रेलर अनियंत्रित होकर पलटते ही उसमें भरा सामान सड़क पर बिखर गया। उल्लेखनीय है इस स्थान पर कट व बेसहारा गौवंश के घूमने से अक्सर वाहन अनियंत्रित होकर पलटने की घटनाएं सामने आती हैं। गौवंश के सामने आने की वजह से ये हादसा हुआ है। गनीमत रही कि हादसे में किसी की जान नहीं गई, लेकिन ट्रेलर में रखे ग्रीस व ऑयल के ड्रम सड़क पर बिखर गए। स्थानीय लोगों ने हादसे की सूचना प्रागपुरा थाना पुलिस को दी। सूचना मिलने पर पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और क्षतिग्रस्त ट्रेलर को सीधा करवाकर रोड खाली करवाया।

डकैती करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। ओगणा थाना पुलिस ने डकैती की वारदात को अंजाम देने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

प्रकरण के अनुसार भूरीलाल कुम्हार पुत्र चुन्नीलाल निवासी ढाबरा समीजा ओगणा ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी। उसने बताया कि 12 जुलाई को रात में मेरे अंकल मनोहरलाल ने फोन कर दादी जरावीबाई के मकान में चोरी होने की सूचना दी। इस पर मौके पर पहुंचा तो दादी ने बताया कि रात में चार अज्ञात बदमाश छत के रास्ते से घर में घुस आये और मुझे डरा-धमका कर ताला तोड़कर लाखों रूपये के सोने-चांदी के जेवरात व सात हजार रूपये नकदी, मोबाइल तथा दो लाईसेन्सी बंदूक ले गये। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक यागेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उप अधीक्षक नेत्रपालसिंह के सुपरविजन में ओगणा थानाधिकारी रामावतार मीणा मय टीम ने मामले में कार्यवाही करते हुए शंकर पुत्र खेमा निवासी मालावरी थाना ओगणा, मोहन उर्फ मोवनाराम पुत्र लाला उर्फ लालाराम निवासी कुरा महुला ओगणा को महुला के जंगलों से डिटेन कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार इनके कब्जे से चांदी के दो कड़े, चार चूड़ियां बरामद की। इस मामले में दो आरोपी पूर्व में गिरफ्तार हो चुके है।

- **आरोपियों के कब्जे से चांदी के दो कड़े, चार चूड़ियां बरामद**

दम तोड़ा: गत दिनों ऋषभदेव थाना क्षैत्र हाइवे पर हुए सड़क हादसे में घायल नाल अलंकार परसाद निवासी लालराम पुत्र नाकू की एमबी चिकित्सालय में उपचार के दौरान मौत हो गई। 8 अगस्त को लालाराम मजदूरी करने के लिए घर से बाइक पर ऋषभदेव माइन्स पर जा रहा था, जहां हाइवे पर खड़े ट्रक से बाइक जा टकराई थी। सूचना मिलने पर एएसआई ईश्वरचन्द्र ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

धोखे से जमीन बेची, मामला दर्ज

उदयपुर, (निसं)। शहर के बडगांव थाना पुलिस ने पीड़ित के नाम से फर्जी महिला खड़ी कर जमीन बेचने वाले व साथी के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार डालीबाई पुत्री खुमा पत्नी चुन्नीलाल भील ने आरोपी दुला पुत्र खुमा निवासी शिव मंदिर के पास धोलकी पाटी डाकन कोटडा व साथियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। उसने बताया कि आरोपी मेरे भाई दुला ने मेरे नाम से फर्जी महिला को खड़ी कर अपने नाम पर मुख्तियारनामा तैयार कर लिया तथा उक्त मुख्तियारनामा के आधार पर दुला ने 4 मार्च 2022 को जमीन अन्य व्यक्ति को बेच दी। गत दिनों जमीन पर कुछ लोगों के आने पर पूछताछ की तो उन्होंने जमीन खरीदना बताया। इस पर पुलिस को सूचना कर प्रकरण दर्ज करवाया।

जेवर चोरी : उदयपुर के पाटिया थाना पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ मकान से सोने-चांदी के जेवरात चुरा ले जाने का प्रकरण दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार हिम्मत पुत्र कुरीचन्द कलाल निवासी उफला फला झांझरी पाटिया ने अज्ञात चोर के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया। उसने बताया कि 8 अगस्त को अज्ञात चोर मेरे मकान का ताला तोड़कर सोने का मंगलसूत्र, चांदी की पायल, ढाई हजार रूपये नकदी तथा चांदी के सिक्के चुरा ले गए। इसका पता चलने पर पुलिस को सूचना कर प्रकरण दर्ज करवाया।

मृतक के परिवार को आर्थिक सहायता की मांग

जयपुर। जयसिंहपुरा खोर में रक्षाबंधन के दिन हुए हिट एंड रन मामले ने स्थानीय लोगों में गुस्सा और आक्रोश भर दिया है। नायला रोड के पास नगर निगम की कचरा उठाने वाली गाड़ी ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार युवक राम कल्याण सैनी (40) की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। इस हादसे के बाद रविवार को बड़ी संख्या में लोग जयसिंहपुरा खोर हटवाड़ा रोड मुख्य सड़क स्थित स्टैंड पर एकत्रित होकर सड़कों पर उतर आए और विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने मृतक के परिवार को आर्थिक सहायता और सरकारी नौकरी देने की मांग उठाई। स्थानीय लोगों का कहना है कि नगर निगम की लापरवाही के कारण यह घटना हुई है और दोषी चालक के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और क्षेत्र में तनाव का माहौल बना हुआ है। एएसआई सोहन लाल ने बताया कि परिजनों से मिली रिपोर्ट पर पुलिस ने हूपर को सीज कर लिया है। वहीं हूपर चालक भाग निकला जिस की तलाश की जा रही है गौरतलब है कि जयसिंहपुरा खोर थाना इलाके में शनिवार दोपहर नगर निगम के हूपर की चपेट में आने से रामकल्याण सैनी (40) की मौत हो गई।

जर्जर हवेली को तोड़ने के लिए मकान मालिक तैयार, पर हेरिटेज निगम अब पीछे हटा

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। बरसात के दौरान झालावाड़ में स्कूल की इमारत गिरने से हुई 17 बच्चों की मौत के बाद चेता नगर निगम हेरिटेज प्रशासन एक दिन आधी अधूरी कार्रवाई कर वाह वाही लूटने के बाद अब पीछे हट गया है। नगर निगम हेरिटेज ने जर्जर इमारतों को तोड़ने और सीज करने के अभियान के तहत पहले त्रिपोलिया बाजार में नाटानियों की हवेली को तोड़ने का काम शुरु किया लेकिन संसाधनों के अभाव में रोक दिया। बाद में नगर निगम ने भवन मालिकों को हवेली गिराने के लिए नोटिस दिया तो भवन मालिकों ने तोड़ने के लिए सहमति दे दी। अब नगर निगम हेरिटेज इस जर्जर हवेली ना तो तोड़ रहा है और ना तोड़ने दे रहा है।

उपायुक्त सतर्कता पुष्पेंद्र सिंह राठौड़ सहित निगम के अधिकारी और इंजीनियरिंग विंग ने परकोटे में कुल 126 जर्जर भवनों को जर्जर भवनों की मरम्मत कराने और नहीं कराने पर निगम की सख्त कार्रवाई करने की चेतावनी दी थी। किशनपोल जोन में कुल 8 भवनों को निगम ने अत्यधिक जर्जर भवन माना था। इनमें से त्रिपोलिया बाजार के सामने नाटानियों की हवेली को तोड़ने का काम शुरु किया था। निगम के पास संसाधन नहीं थे। निगम के मजदूरों ने पत्थर मार कर हवेली को गिराने के काम किया। संसाधन पूरे नहीं होने के कारण आधा अधूरा तोड़ कर चले गए।

त्रिपोलिया बाजार में नाटानियों की हवेली।

डीएलबी सचिव रवि जैन, डीएलबी निदेशक जेपी चंद्रशेखर, निगम की आयुक्त निधि पटेल, ग्रेटर निगम कमिश्नर गौरव सैनी, किशनपोल उपायुक्त दिलीप भंभानी, उपायुक्त सतर्कता पुष्पेंद्र सिंह ने मौके पर जाकर निरीक्षण किया।

नाटानियों की हवेली के मालिक गोविन्ददास नाटानी व अन्य ने नगर निगम हेरिटेज के उपायुक्त दिलीप भंभानी को ज्ञापन देकर कहा कि नगर निगम इस जर्जर भवन को तोड़ दे। इसको तोड़ने का हर्जा-खर्चा भी भवन मालिक देने को तैयार है लेकिन अब नगर निगम हेरिटेज इस जर्जर भवन को नहीं तोड़ रहा और उन्हें भी तोड़ने की इजाजत नहीं दे रहा है। भवन मालिकों ने किशनपोल जोन के उपायुक्त दिलीप भंभानी, उपायुक्त सर्तकता पुष्पेन्द्र सिंह से भवन को तोड़ने की जगह इसकी मरम्मत कराने को कह रहे है जबकि भवन की हालत ऐसी है कि उसकी मरम्मत नहीं की जा सकती। ऐसे में उसे तोड़ना ही उपयुक्त होगा।

निगम हेरिटेज के अधिकारी इस भवन को तोड़ने के लिए हेरिटेज निगम की मेयर कुसम यादव की भी सुनवाई नहीं कर रहे हैं। कुसम यादव ने इस भवन को तोड़ने के लिए जोन के अफसरों को भी फोन किया। उसके बाद भी सुनवाई नहीं कर रहे। यहां तक कि किशनपोल बाजार के भाजपा प्रत्याशी रहे चन्द्रमोहन बटवाड़ा ने भी

- **पहले दिन वाहवाही लूटी, अब तोड़ने को तैयार नहीं,**
- **हवेली के सभी हिस्सेदारों ने कहा, तोड़ने का खर्चा भी देंगे पर निगम की तैयारी नहीं, कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा**

इस भवन को तोड़ने के लिए पत्र लिखा लेकिन निगम उनकी भी सुनवाई नहीं कर रहा।

नाटानियों की हवेली के मालिकों ने नगर निगम हेरिटेज के अधिकारियों पर हवेली के किराएदारों को फायदा देने का आरोप लगाया। उनका कहना है कि इस हवेली के कुछ हिस्से में किराएदार है जो बिलकुल जर्जर हालत वाले हिस्से में है। यह हिस्सा गिर गया तो बड़ा हादसा हो सकता है। निगम के अधिकारी उन्हें फायदा देने के लिए कोर्ट से स्टे लाने का समय दे रहे हैं।

सार-समाचार

अनेक कलाकारों ने गाए मो.रफी और मुकेश के तराने

जयपुर। जवाहर कला केन्द्र का रंगायन सभागार रविवार को खुदा के नूर गायक मो.रफी और मुकेश के गाए सदाबहार गीतों से गूंज उठा। मौका था पंजाबी समाज विकास संस्थान और शहर के वर्सेटाइल सिंगर मनोज मामनानी की ओर से संजोई बॉलीवुड गीतों की सुरमयी शाम, जिसमें शहर के अनेक कलाकारों ने लाइव बैंड पर बॉलीवुड के अमर गायकों के गाए गीतों को अपनी पुरकशिश आवाज में सुनाकार मौजूद श्रोताओं के दिलों को छू लिया। कार्यक्रम में शहर के नामी सिंगर्स के संग विभिन्न क्षेत्रों के शौकिया कलाकारों ने सुपरहिट गीतों को सुरों में पिरोया। कार्यक्रम में बड़ी तादाद में मौजूद श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट के बीच गीतों का सिलसिला चलता रहा की-बोर्ड पर रहबर हुसैन, जाफर हुसैन, ढोलक और तबले पर इमरान खां, ऑक्टोपैड पर आबीद खां, गिटार पर सुनील शर्मा, सैक्सेफोन पर राजन ने प्रभावी संगत की। एंकर प्रिंस रुबी और फैजी खान ने बेहतरीन शेरों-शायरी से कार्यक्रम में रौनक भरी। कार्यक्रम में पंजाबी समाज विकास संस्थान के अध्यक्ष सगनलाल डोडा, उद्योगपति राजेश शर्मा, सीनियर जर्नलिस्ट सुरेश काकू समेत शहर के अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार पुलिस कांस्टेबल को मारी टक्कर

जयपुर। चौमू थाना इलाके में तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार पुलिस कांस्टेबल को टक्कर मार दी। इस हादसे में पुलिस कांस्टेबल की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि पुलिस कांस्टेबल घर से ड्यूटी जयपुर पुलिस लाइन में पर लौट रहे था। थानाधिकारी प्रभारी प्रदीप शर्मा ने बताया कि हादसा जयपुर-सीकर हाईवे पर चौमूं इलाके में रविवार सुबह सात बजे हुआ। जहां रेनवाल निवासी पुलिस कांस्टेबल राजेंद्र कुमार सामोता (36) घर से ड्यूटी के लिए निकला था। इस दौरान राधा स्वामी बाग पुलिया के पास पहुंचते ही एक तेज रफ्तार कार सवार ने कांस्टेबल राजेंद्र कुमार सामोता को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार सवार चालक कांस्टेबल राजेंद्र कुमार सामोता को बीस फीट तक घसीटता ले गया। गंभीर रूप से घायल कांस्टेबल को स्थानीय लोग बराला अस्पताल लेकर गए। जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों के हवाले कर दिया गया। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर सबूत जुटाए हैं और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है। कांस्टेबल राजेंद्र कुमार सामोता जयपुर पुलिस लाइन में तैनात था और साल 2015 में राजस्थान पुलिस में कांस्टेबल के पद पर भर्ती हुए था। कांस्टेबल राजेंद्र का एक छह साल का लड़का और और तीन साल की लड़की है। दोनों चौमूं के निजी स्कूल में पढ़ाई करते हैं। वहीं कांस्टेबल राजेंद्र कुमार के पिता भी आर्मी से रिटायर्ड थे और एक साल पहले हार्ट अटैक से उनकी मौत हो गई थी। इसके अलावा उसका एक बड़े भाई महेश सामोता आर्मी में असम में तैनात हैं।

स्कूल की बस में आग लगने से मचा हड़कंप

जयपुर। चौमू थाना इलाके में एक निजी स्कूल की बस में अचानक आग लगने से हड़कंप मच गया। देखते ही देखते तेज आग की लपटें उठने लगीं और आग ने विकराल रूप ले लिया। गश्त पर निकली स्थानीय चौमूं पुलिस टीम ने घटना देखी और तुरंत दमकल विभाग को सूचना दी। दमकल की गाड़ी मौके पर पहुंची और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। अग्निशमन अधिकारी जय जांगिड़ ने बताया कि घटना रींगस रोड स्थित गिर्राज पेट्रोल पंप के पास की है। जहां एएन पब्लिक स्कूल की बस खड़ी हुई थी। समय रहते हुए अगर आग पर नियंत्रण नहीं किया जाता तो पास में स्थित पेट्रोल पंप भी इसकी चपेट में आ सकता था। इससे बड़ा हादसा हो सकता था। दमकल कर्मियों की सतर्कता और पुलिस की तुरंत कार्रवाई के कारण किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई। हालांकि बस पूरी तरह जलकर खाक हो गई। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। प्रारंभिक जांच में शॉर्ट सर्किट की संभावना जताई जा रही ह थानाधिकारी प्रभारी प्रदीप शर्मा ने बताया कि पेट्रोल पंप पर खड़ी बस में अचानक आग लगने का मामला सामने आया है। समय रहते पुलिस और दमकल मौके पर पहुंच गई, जिससे कोई जनहानि नहीं हुई।

अवैध शराब भण्डारण करने वाला हार्डकोर अपराधी अनुज गुर्जर गिरफ्तार

जयपुर। श्याम नगर थाना पुलिस ने टोवो क्लब पर कार्रवाई करते हुए आठ पेटी शराब बरामद की है। साथ ही अवैध रूप से शराब रखने वाले हार्डकोर अपराधी को मौके से गिरफ्तार किया। पुलिस जानकारी के अनुसार क्लब में अवैध रूप से शराब रखी हुई थी, जिसे क्लब में आने वाले लोगों को परोसा जा रहा था। सूचना मिलने पर पुलिस ने छापेमारी की कार्रवाई की है। पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि श्याम नगर थाना पुलिस ने गंगा जमुना न्यू सांगानेर रोड स्थित टोवो क्लब पर दबिश मारी। जिस पर मौके से अलग-अलग ब्रांड की शराब की बोतलें मिलीं। मौके से हार्डकोर अपराधी अनुज गुर्जर को गिरफ्तार किया गया। इसके खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, लूट जैसी संगीन धाराओं में कुल नौ मामले दर्ज हैं।आरोपित से अवैध शराब भंडारण के संबंध में पूछताछ जारी है। वहीं अन्य संदिग्ध गजेन्द्र गुर्जर, मनीष गौतम से भी पूछताछ की जाएगी।

कांग्रेस सेवादल का कल से

जयपुर। प्रदेश में कांग्रेस की विचारधारा, रीति नीति, कल्चर और कांग्रेस सेवादल की नीतियों का पाठ पढ़ने के लिए प्रदेश के सभी जिलों में सोमवार से तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुरू किया जा रहे हैं। यह प्रशिक्षण शिविर 11 अगस्त से शुरू होकर 11 अक्टूबर को समाप्त होंगे, प्रशिक्षण शिविरों के जरिए कांग्रेस सेवादल 20 हजार नए श्वेत सैनिक तैयार करेगी। रविवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में इस बारे में कांग्रेस सेवादल के प्रदेश अध्यक्ष हेम सिंह शेखावत ने प्रेस कांफ्रेंस कर कहा कि कल से सभी जिलों में तीन दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शिविर शुरू हो रहा है, जो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर है। शिविर में राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षक और कांग्रेस विचारधारा से जुड़े बुद्धिजीवी कार्यकर्ताओं को पार्टी की रीति, इतिहास, कल्चर और कांग्रेस सेवादल के आजादी में योगदान को लेकर जानकारी देंगे।

मालवीय नगर में तिरंगा यात्रा आज

जयपुर। मालवीय नगर विधानसभा क्षेत्र की तिरंगा यात्रा विधायक कालीचरण सराफ के नेतृत्व में सोमवार को प्रात: 8 बजे पत्रिका गेट से रवाना होकर अमर जवान ज्योति पर पहुंचेगी। ब्रह्माकुमार सैनी ने बताया की तिरंगा यात्रा दो पहिया वाहन से पत्रिका गेट से शुरू होकर जेएलएन मार्ग, गांधी सर्किल,यूनिवर्सिटी, बिरला मंदिर,रामबाग सर्किल, अंबेडकर सर्किल होते हुए अमर जवान ज्योति पर पहुंचेगी।यात्रा में सभी पार्षद, मंडल पदाधिकारी, सक्रिय कार्यकर्ता, सभी बूथ अध्यक्ष, प्रमुख समाज के लोग एवं स्थानीय लोग मौजूद रहेंगे। यात्रा में सभी कार्यकर्ताओं के तिरंगे रंग का साफा बांधा जायेगा एवं जगह-जगह पुष्प वर्षा से स्वागत किया जायेगा।

अवैध शराब भण्डारण करने वाला हार्डकोर अपराधी अनुज गुर्जर गिरफ्तार

जयपुर। श्याम नगर थाना पुलिस ने टोवो क्लब पर कार्रवाई करते हुए आठ पेटी शराब बरामद की है। साथ ही अवैध रूप से शराब रखने वाले हार्डकोर अपराधी को मौके से गिरफ्तार किया। पुलिस जानकारी के अनुसार क्लब में अवैध रूप से शराब रखी हुई थी, जिसे क्लब में आने वाले लोगों को परोसा जा रहा था। सूचना मिलने पर पुलिस ने छापेमारी की कार्रवाई की है। पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण राजर्षि राज ने बताया कि श्याम नगर थाना पुलिस ने गंगा जमुना न्यू सांगानेर रोड स्थित टोवो क्लब पर दबिश मारी। जिस पर मौके से अलग-अलग ब्रांड की शराब की बोतलें मिलीं। मौके से हार्डकोर अपराधी अनुज गुर्जर को गिरफ्तार किया गया। इसके खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास, लूट जैसी संगीन धाराओं में कुल नौ मामले दर्ज हैं। आरोपित से अवैध शराब भंडारण के संबंध में पूछताछ जारी है। वहीं अन्य संदिग्ध गजेन्द्र गुर्जर, मनीष गौतम से भी पूछताछ की जाएगी।

मुरलीपुरा में राष्ट्र साधना पुष्टि गायत्री महायज्ञ संपन्न

जयपुर। ठिकाना मंदिर गोविंद देवजी के आशीर्वाद से गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ और गायत्री चेतना केन्द्र मुरलीपुरा की ओर से रविवार, 10 अगस्त को मुरलीपुरा के विकासनगर स्थित राधा गोविंद शिव मंदिर में राष्ट्र साधना पुष्टि पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। सुबह 8 से 11 बजे तक चले इस कार्यक्रम में करीब ढाई सौ श्रद्धालुओं ने चार पारियों में यज्ञ देवता को आहुतियां अर्पित की। महंत श्याम सुंदर चतुर्वेदी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तिरंगा ध्वज और हरित वृक्षों से सजी यज्ञशाला में श्रद्धालुओं ने राष्ट्र निर्माण के संकल्प के साथ आहुतियां अर्पित कीं। उत्थान सेवा संस्थान के अध्यक्ष कैप्टन शीशराम चौधरी की अगुवाई में पौधों का वितरण भी किया गया।

गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी के दिनेश आचार्य, अजय भारद्वाज व सृष्टि की टोली ने प्रज्ञा गीतों के साथ यज्ञ सम्पन्न कराया। मध्य प्रदेश के खंडवा से आई पूर्णिमा ने बालिकाओं को हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर योगदान देने का आ ान किया। भजन और

- **गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी के दिनेश आचार्य, अजय भारद्वाज व सृष्टि की टोली ने प्रज्ञा गीतों के साथ यज्ञ सम्पन्न कराया**

देशभक्ति गीतों के बीच भारत माता की जय के जयकारे गूंजे। राम बाबू झालानी (समाज सीताराम जी, छोटी चौपड़) ने सभी को घर की छत पर फहराने के लिए तिरंगा झंडा भेंट किया।

कार्यक्रम में देश की आजादी के आंदोलन में सहयोग करने वाले आंदोलनकारियों, क्रांतिकारियों और शहीदों के निमित्त विशेष आहुतियां अर्पित की गईं। गर्भस्थ शिशु के सर्वांगीण विकास हेतु दो पुंसवन संस्कार और एक जन्मदिन संस्कार भारतीय संस्कृति के अनुसार सम्पन्न हुए।गायत्री परिवार राजस्थान के प्रभारी ओम प्रकाश अग्रवाल ने नव सृजन साधना अभियान में उत्कृष्ट योगदान देने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया।

तिरंगा वाहन रैली का भव्य आयोजन

जयपुर। सर्व समाज सनातन समिति राजस्थान के तत्वावधान में एक विशाल तिरंगा रैली का आयोजन किया गया।

रविवार को सुबह 9 बजे पूरे सांगानेर विधानसभा से तिरंगा झंडा लगाकर दुपहिया वाहन चालक तिरंगा साफा पहनकर मुख्यमंत्री केम्प कार्यालय के सामने सुमेर नगर की ओर जाने वाली सडक पर एकत्रित हुए। जयपुर सांसद मंजू शर्मा, जयपुर ग्रेटर की मेयर सौम्या गूजर एवं संत प्रकाश दास महाराज ने रैली में भागलेने वाले समूह को संबोधित करते हुऐ देश भक्ति का जोरदार भाव उत्पन्न किया।दुपहिया वाहन पंक्तिबद्ध होकर देशभक्त के नारे लगाते हुए रवाना हुए जो एसएफएस मध्यम मार्ग होते हुए सिटी पार्क होते हुए वीटी रोड होकर रिद्धी सिद्धी चौराहे से गोपालपुरा चौराहा होकर टोंक रोड से चलते हुए रामबाग चौराहे से मुडकर अमर जवान ज्योति तक पहुँचे।भिन्न भिन्न स्थानों रैली का समाजिक संस्थाओं द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।रैली का समापन अमर जवान ज्योति पर हुआ।

अमेरिका का टैरिफ अमेरिकी नागरिकों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण, हम डरने वाले नहीं: मदन राठौड़

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने पाली प्रवास के दौरान पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस को केवल एक औपचारिकता बनाकर नहीं छोड़ा जाएगा, बल्कि "हर घर तिरंगा" अभियान के माध्यम से इसे वृहद स्तर पर मनाया जाएगा। भाजपा कार्यकर्ता प्रत्येक बूथ पर घर-घर तिरंगा फहराने के लिए तत्पर हैं। इस दौरान तिरंगा यात्राओं के साथ विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह अभियान केवल भाजपा का नहीं, बल्कि पूरे देश का है। उन्होंने विपक्षी दलों से भी आ ान किया कि वे भी राष्ट्रभक्ति की भावना से प्रेरित होकर इस अभियान में भाग लें। राठौड़ ने कहा, "हम चाहते हैं कि पक्ष में भी राष्ट्रभक्ति हो और विपक्ष में भी। देशभक्ति कोई एक पार्टी की जागीर नहीं है, यह हम सबका साझा कर्तव्य है।"

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने अमेरिका की नीति की आलोचना करते हुए कहा कि अमेरिका अपनी वैश्विक

- **हर घर तिरंगा अभियान को प्रदेशभर में वृहद स्तर पर मनाएगी भाजपा, देशभक्ति में ना हो पक्ष-विपक्ष का भेदः मदन राठौड़**

प्रभुत्वता बनाए रखने के लिए उभरते हुए राष्ट्रों को दबाने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने कहा कि, "अटल जी ने जब परमाणु परीक्षण किया था तब भी दुनिया के आर्थिक प्रतिबंधों की परवाह नहीं की थी। उसी आत्मविश्वास से आज भी भारत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है।" उन्होंने अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ को "अमेरिकी नागरिकों के लिए दुर्भाग्यपूर्ण" बताया और कहा कि यदि भारत का निर्यात अमेरिका में कम होता है तो हमारे पास रूस, चीन जैसे वैकल्पिक बाजार मौजूद हैं। उन्होंने कहा कि, "अमेरिका को भुगतना पड़ेगा। हमारा आत्मनिर्भर भारत अब ब्रह्मोस जैसे अत्याधुनिक शस्त्र स्वयं बना रहा है। मेक इन इंडिया के तहत देश तेजी से आगे बढ़ रहा है और हम डरने वाले नहीं हैं।" भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर निशाना साधते हुए कहा कि राहुल गांधी की पार्टी जहां जीतती है वहां वे चुनाव आयोग को धन्यवाद देते हैं और जहां हारती है वहां आयोग को कोसते हैं। उन्होंने कहा, "अगर कांग्रेस को प्रतिस्पर्धा करनी है तो जनसेवा में करें, हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने का प्रयास क्यों कर रहे है?" उन्होंने राहुल गांधी के हालिया बयानों पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि, "राहुल गांधी अब को लेकर विरोध कर रहे हैं। क्या अब रोहिंग्या या बांग्लादेशी तय करेंगे कि देश में सरकार कौन बनाएगा?" राठौड़ ने कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी इतनी मजबूत हो चुकी है। जनता सब समझती है और आने वाला समय भाजपा का ही है।

नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में बढ़ रहा एशियाटिक शेरों का कुनबा

कार्यालय संवाददाता

जयपुर। राजधानी जयपुर के नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में लायन सफारी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। क्योंकि यहां एशियाटिक शेरों का कुनबा भी बढ़ रहा है। पार्क में अभी एक शावक समेत 6 एशियाटिक शेर-शेरनी हैं। ज्ञात रहे कि शेरों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से हर साल 10 अगस्त को वर्ल्ड लायन डे मनाया जाता है। शेरों के कंजर्वेशन और ब्रीडिंग में नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क मिसाल बन रहा है।

दक्षिण अफ्रीका की तर्ज पर राजस्थान में पहली लायन सफारी की शुरुआत राजधानी जयपुर के नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में की गई थी। नाहरगढ़ लायन सफारी में खुले जंगल में शेरों को देखने का मौका मिलता है। नाहरगढ़ के जंगलों में बब्बर शेरों की दहाड़ पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन रही है। लायन सफारी को देखने के लिए इंसान बंद गाड़ी में और लायन खुले में घूमते नजर आते हैं। करीब 36 हेक्टेयर में बनी इस लायन सफारी के चारों तरफ 5 मीटर ऊंची फेंसिंग की गई है। खुले जंगल में बब्बर शेरों की दहाड़ देखकर पर्यटक भी रोमांचित हो जाते हैं।

नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क के क्षेत्रीय वन अधिकारी शुभम शर्मा ने बताया कि नाहरगढ़ लायन सफारी में आकर रणथंभौर जैसी फीलिंग होती है। लायन सफारी में आसानी से पर्यटकों को लायन नजर आ जाते हैं। रणथंभौर नेशनल पार्क में बाघों की लोकप्रियता के बाद प्रदेश में पहली बार एशियाटिक शेरों को खुले जंगल में देखने का सपना पूरा हुआ। लायन सफारी में शेरों के अलावा भी कई वन्यजीव मौजूद है. नीलगाय, मोर, खरगोश और चीतल जैसे कई वन्यजीव सफारी में मौजूद हैं।

वर्ष 2018 में नाहरगढ़ लायन सफारी की शुरुआत हुई थी। नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क के अंदर बनाई गई लायन सफारी धीरे-धीरे पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने लगी। नाहरगढ़ जैविक उद्यान में बनी लायन सफारी के अंदर खुले जंगल में बब्बर शेरों की दहाड़ सुनकर पर्यटक भी रोमांचित हो जाते हैं। नाहरगढ़ के जंगलों में शुरू की गई सफारी में बड़ी संख्या में सैलानी शेरों की अठखेलियां देखकर लुत्फ उठाते हैं।वरिष्ठ वन्यजीव पशु चिकित्सक डॉ. अरविंद माथुर ने बताया कि नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में एशियाटिक शेरों का कुनबा लगातार बढ़ रहा है। शुरुआत में गुजरात के शक्करबाग जू से एक लायन का जोड़ा लाया गया था। इसके बाद नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में लगातार ब्रीडिंग हो रही है। पिछले साल शेरनी तारा ने एक शावक को जन्म दिया था, लेकिन तारा के व्यवहार में एग्रेसिवनेस होने के कारण शावक को नियो नेटल केयर यूनिट में रखा गया।

गोष्ठी आयोजित

जयपुर। क्रीड़ा भारती द्वारा खेलों से संबंधित विषयों पर देशभर में 100 स्थानों पर विविध खेल विषयों को लेकर आयोजित होने वाली संगोष्ठियों की उदघाटन संगोष्ठी आज संवैधानिक क्लब में आयोजित हुई । संगोष्ठी का विषय खेल सृष्टि में भारतीय दृष्टि" रहा । क्रीड़ा भारती के प्रदेश संयोजक मेघसिंह चौहान ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए बताया खेल क्षेत्र की समस्याओं के समाधान एवं खेल क्षेत्र के भारतीय विचार के लिए क्रीड़ा भारती कार्य करती हैं। इसी संदर्भ में देशभर में आयोजित होने वाली सभी 100 गोष्ठियाँ इसी मूल विषय पर आधारित रहेंगी। इनमें से 7 अन्य गोष्ठियाँ राजस्थान के विभिन्न जिलों में आयोजित होंगी । उन्होंने बताया कि पिछले 10 वर्षों में देश में खेलों के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है। जिसका परिणाम निश्चित ही भारतीय खेल क्षेत्र में आने वाले समय में दिखलाई देगा। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के के विश्नोई, राज्यमंत्री उद्योग, खेल, युवा एवं कौशल विकास राजस्थान सरकार: विशिष्ट अतिथि गोपाल सैनी मौजूद रहे।

अहमदाबाद में विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का नागरिक अभिनंदन

जयपुर। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का आज अहमदाबाद के शाहिबाग स्थित तेरापंथ सभा भवन में भव्य नागरिक अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर गुजरात विधानसभा अध्यक्ष शंकरभाई चौधरी भी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन राजस्थान युवा मंच एवं राजस्थान सांस्कृतिक मंच द्वारा किया गया। समारोह में राजस्थान प्रांत के प्रवासी सर्व समाज के गणमान्य प्रतिनिधि, अग्रणी नेता, विभिन्न व्यापारी संगठनों के पदाधिकारी एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रमुखजन उपस्थित रहे और दोनों विधानसभा अध्यक्षों का पुष्पमालाओं व स्मृति चिन्ह के साथ स्वागत-सत्कार किया।

नगर निगम अहमदाबाद की महापौर प्रतिभाबेन जैन ने स्वागत भाषण में नगरवासियों को स्वच्छता अभियान में अहमदाबाद की उपलब्धियों के लिए बधाई दी। उन्होंने आगामी गणेश महोत्सव के अंतर्गत मिट्टी से निर्मित गणेश प्रतिमाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करने की जानकारी दी और गणेश प्रतिमा भेंट कर अध्यक्ष महोदय का अभिनंदन किया।अपने संबोधन में वासुदेव देवनानी ने कहा कि श्रावण मास के दौरान गुजरात प्रवास में प्रथम ज्योतिर्लिंग नागेश्वर महादेव के दर्शन एवं पूजा-अर्चना, द्वारकाधीश के दर्शन और गिर यात्रा का सौभाग्य मिला। उन्होंने कहा कि गुजरात और राजस्थान दोनों राज्य भाईचारे, सौहार्द और विकास के साझे मूल्यों के प्रतीक हैं, और दोनों राज्यों के नागरिक 'दूध में शक्कर' की तरह मिलकर आगे बढ़ रहे हैं। गुजरात विधानसभा अध्यक्ष शंकरभाई चौधरी ने इस अवसर पर देवनानी का स्वागत करते हुए कहा कि गुजरात प्रवास के दौरान उन्होंने यहां बसे राजस्थानी समाज से मिलने का समय निकाला, यह उनके आत्मीयता और समाज के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

नगर निगम की कचरा गाड़ी की टक्कर से युवक की मौत के बाद आक्रोश

जयपुर। राजधानी के जयसिंहपुरा खोर इलाके में हिट एंड रन मामले ने तूल पकड़ लिया है। रक्षाबंधन को जयसिंहपुरा खोर थाना इलाके में नायला रोड पर नगर निगम की कचरा उठाने वाली गाड़ी ने एक बाइक सवार को टक्कर मार दी थी, हादसे में राम कल्याण सैनी की दर्दनाक मौत हो गई, जिसके बाद स्थानीय लोगों में काफी आक्रोश देखने को मिल रहा है।

रविवार को परिजनों के साथ काफी संख्या में स्थानीय लोग जयसिंहपुरा खोर के 2 नंबर बस स्टैंड पर एकत्रित हुए और धरने पर बैठ गए। मामले की जानकारी मिलते ही विधायक बालमुकुंद आचार्य समेत पुलिस के अधिकारी मौके पर पहुंचे। विधायक ने मौके पर 11 लाख रुपए नकद आर्थिक सहायता राशि दी और 20 लाख रुपए कीमत का प्लॉट, डेयरी बूथ और संविदा पर नौकरी का

विधायक बालमुकुंद आचार्य ने परिजनों से समझाईश करके धरना समाप्त कराया।

आश्वासन दिया गया, जिसके बाद लोगों ने धरना समाप्त किया। **परिवार को 11 लाख की सहायता :** विधायक बालमुकुंद आचार्य ने बताया कि भाजपा सरकार दुख की घड़ी में पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। दुर्घटना बहुत ही दुखद है, राम कल्याण की मौत से परिवार का सहारा छिन गया। मृतक राम कल्याण के दो लड़के और एक लड़की है। बच्चों की शिक्षा और विवाह की जिम्मेदारी ली है। मृतक के परिवार को आर्थिक सहायता के रूप में 11 लाख रुपए नकद राशि दी गई है, जिसमें 5 लाख रुपए नगर निगम की सफाई कंपनी की ओर से, 5 लाख रुपए उनकी तरफ से (जिसमें 1 लाख पार्षद नंदकिशोर सैनी, 1 लाख रुपए पार्षद सुरेश सैनी के शामिल) और एक लाख रुपए व्यापारी निक्की शर्मा की ओर से दिए गए हैं। पीड़ित परिवार को 20 लाख रुपए कीमत का एक 100 गज का प्लॉट दिया जाएगा। इसके अलावा लोगों के सहयोग से और भी आर्थिक सहायता की जाएगी। दुर्घटना क्लेम के साथ सरकार और कानूनी तौर पर जो मुआवजा मिल सकता है, वह भी दिलवाया जाएगा। एक डेयरी बूथ और परिवार के एक सदस्य को संविदा पर नौकरी की व्यवस्था भी करवाई जाएगी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा समेत पूरी सरकार पीड़ित परिवार के दुख में साथ है, संभवत: जो भी सहायता हो सकती है, वह की जाएगी। **संविदा पर नौकरी का आश्वासन :** एसीपी आमेर भोपाल सिंह भाटी ने बताया कि विधायक बालमुकुंद आचार्य धरना स्थल पर पहुंचे। परिजनों और स्थानीय लोगों से बातचीत करके 11 लाख रुपए सहायता राशि पीड़ित परिवार को दी गई हैं। इसके साथ ही एक डेयरी बूथ और संविदा पर नौकरी का आश्वासन दिया गया है. पुलिस की ओर से मामला दर्ज करके जांच पड़ताल की जा रही है। आरोपी चालक को हिरासत में ले लिया गया है। बता दें कि शनिवार को रक्षाबंधन के दिन राम कल्याण सैनी उर्फ बिल्लू अपनी पत्नी के साथ जयसिंहपुरा खोर से गोला का बास अलवर अपने ससुराल जा रहा था। इस दौरान नायला रोड पर तेज रफ्तार में आ रही नगर निगम की कचरा उठाने वाली गाड़ी ने टक्कर मार दी।

- **विधायक बालमुकुंदाचार्य के आश्वासन के बाद धरना समाप्त**

आरजीएचएस में ओपीडी की निर्धारित सीमा में शिथिलता

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं के सुलभ एवं सुचारू संचालन के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है और उसने राजस्थान राज्य पेंशनर्स चिकित्सा रियायती योजना-2021 में संशोधन किया है। वित्त विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार पेंशनर्स के लिए आरजीएचएस योजना के तहत वर्तमान में आउटडोर चिकित्सा सुविधा में दवाइयों के लिए निर्धारित 50 हजार रुपए प्रतिवर्ष एवं जांचों के लिए पांच हजार रुपए की निर्धारित सीमा में वृद्धि के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग एवं उसके अधीन राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेन्सी को शक्तियां प्रदान की गई हैं। इसके तहत ओपीडी दवाइयों के लिए निर्धारित सीमा में दो लाख रुपए तक के विस्तार के लिए राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी के अतिरिक्त सीईओ या संयुक्त सीईओ दो लाख से सात लाख रुपए तक के लिए राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) को प्राधिकृत किया गया है।

ARBiT
it happens here...

राष्ट्रदूत
MONDAY
11 August 2025
A-B

Mountain Day: Japan's Tribute to Nature's Giants

Celebrated annually on August 11, Mountain Day is Japan's newest public holiday, established in 2016 to give people a chance to appreciate the country's stunning mountainous landscapes. With over 70% of Japan covered in mountains, the day encourages citizens to reconnect with nature, through hiking, meditation, or simply enjoying scenic views. It also promotes environmental awareness and cultural significance of mountains in Japanese heritage. Whether scaling Mt. Fuji or strolling through serene trails, Mountain Day is a reminder of the peace, beauty, and inspiration that the mountains continue to offer.

#ART

A Raga Born of Grief, Forged in Legend

"Jhoothe Naina Bole" sung by Asha Bhosle in *Bilaskhani Todi*

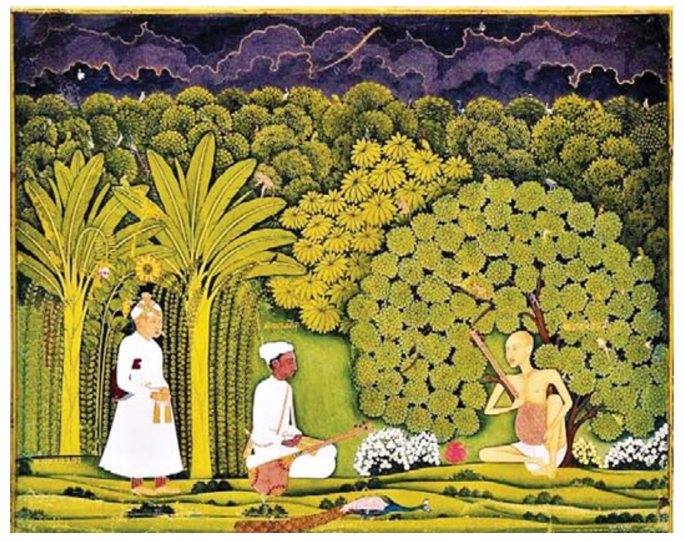

In the rich, melodic world of Indian classical music, some ragas are composed with mathematical precision, and some are born from the deepest corners of the human heart. Bilaskhani Todi is one such raga, a haunting blend of sorrow and devotion, said to have emerged not in a court or concert hall, but in the shadow of death.

The Passing of a Master

The legend begins with the death of Tansen, one of the greatest musicians India has ever known, and a revered figure in Emperor Akbar's court. Tansen was not just a court musician, he was a spiritual and artistic force, credited with shaping the very fabric of Hindustani classical music. His passing marked the end of an era. As his family and disciples gathered to mourn, Bilas Khan, Tansen's son, found himself in the grip of overwhelming grief. In the hours following his father's death, Bilas Khan sat beside the lifeless body, desperate to offer a final tribute. But in his shaken emotional state, the raga he intended to sing, Todi, came out fragmented, altered, infused with unfamiliar phrases. His sorrow blurred the lines of classical structure, giving birth to something entirely new.

The Sound of Sorrow

What emerged that day was a raga now known as Bilaskhani Todi, a fusion of the grave dignity of Raga Todi and the emotional warmth of Raga Bhairavi. The raga retains the scale of Todi but weaves in Bhairavi-like movements, creating a space where anguish and reverence coexist. It is often performed in the late morning hours, when the light is bright but not yet harsh, a fitting metaphor for grief itself: fully present, yet not overwhelming. The raga's signature phrases descend and dip, often lingering painfully on certain notes, giving it a meditative, mournful quality.

From Dhrupad to the Silver Screen

Centuries after its legendary origin, Bilaskhani Todi found its way into Hindi cinema through the delicate hands of Pandit Hridaynath Mangeshkar, who composed the ethereal song 'Jhoothe Naina Bole' for the 1990 film *Lekin....* Sung with haunting beauty by Asha Bhosle, the composition preserves the raga's emotional core while introducing it to a new generation of listeners. The song, much like the raga itself, feels like a prayer, a whisper from another world.

To Listen Is to Remember

Like many tales in Indian classical music, the story of Bilaskhani Todi's origin straddles the line between history and legend. There is no definitive written account of its creation, and scholars differ on the details. Some even question whether the raga was composed by Bilas Khan at all. But that ambiguity is part of what makes this tradition so deeply resonant: truth is often felt more than proven.

These oral traditions, passed down through gharanas, classrooms, and concert green rooms, are not just about accuracy; they're about meaning. They help us connect the technical brilliance of a raga to the human emotions that inspired it.

A Story Between Truth and Myth

Whether the legend is fact or fable, Bilaskhani Todi continues to echo through time as a raga that speaks to the soul's quiet ache. It reminds us that sometimes, music is not created in joy or precision, but in the tremble of a voice, the cracking of a heart, the silent space where grief becomes sound. Next time you hear it, in a concert, a classroom, or the soft strains of Lekin..., pause. You're listening to a son mourning a father, a melody shaped by memory, and the immortal legacy of a raga born from loss.

Persakhe, a fried bread that Sanandaji Jews make for Shavuot. It is distinctive to Kurdish region of Iran.

Zoroastrian Customs.

Honey: A Demonic Food in Zoroastrian Iran?

Cropped Bhonu.

The demons are also named in the text: Haštom, Adadra and Vantu. I would hazard a guess that the second demon may be Indra, whose Middle Persian for Andar ('ndr), may have been miswritten due to orthographical mistakes between the Aramaic and the Perso-Arabic script. It is still difficult to match these three names with the fallen gods (Daivas), from the time of the Indo-Iranian tradition, namely Saurwa, Indra and Nånhaioya, but there seems to be some connections here, which may be a residual of a long tradition.

Pure honey for Zorastrians.

#HONEY

● Touraj Daryaee

Bees are a noxious creature in the Zoroastrian animal classification system and the problem of honey for consumption in the Iranian world. The mention of honey as the production of evil being not only appears in Zoroastrian literature, but also in early Persian histories where primordial king Tahmuras is handed this beneficial product for use. The name of the demons in this Persian text associated with honey suggests a long tradition of association of honey with the daivas or fallen gods of the ancient Iranian world. Eventually, in the early Islamic period, honey was allowed for use, but with certain restrictions.

It is fascinating that throughout Zoroastrian writings and the ancient Iranian mythological tradition, the bee and honey are seen to belong to the realm of the demonic. The use of honey was prohibited in the Zoroastrian tradition. This demonic nature of the animal and its byproduct can be recognized from the medieval Persian text, Zainu'l-Akhbar of Gardizi. The first part of the book deals with the Persianate world, and the arts, skills and actions of the primordial kings are listed. For Tahmuras, we come across a very interesting tradition which is not found in most other sources. The king is said to have fought demons (dewan) and kept them from harming people and caught them and killed many. The demons came before him and asked till when they will have such misfortune at the king's hands. Tahmuras provides a very interesting response. He states that till that time when the dry wood and dry string come to speak and till the tree brings forth kingly dress and till he holds the wind in my fists and when he eats food well, which has not been made from harming the cow and not cooked with fire. Then, the demons bring forth the tanbur, the silkworm. The bees made honey and they said: "Now, there will be good food which is made without harming the cow and not cooked with fire."

The demons are also named in the text: Haštom, Adadra and Vantu. I would hazard a guess that the second demon may be Indra, whose Middle Persian for Andar ('ndr), may have been miswritten due to orthographical mistakes between the Aramaic and the Perso-Arabic script. It is still difficult to match these three names with the fallen gods (Daivas), from the time of the Indo-Iranian tradition, namely Saurwa, Indra and Nånhaioya, but there seems to be some connections here, which may be a residual of a long tradition.

In the Zoroastrian animal classification, there is a clear duality which matches the world-view of this religious tradition, where they either belong to the realm of Ohrmazd or Ahriman. In the classification of xrafstars or noxious creatures, the Bundahišn divides them into three categories: hamag xrafsataran se ewenag hend abig ud zamigig ud parragig. All the noxious creatures are of three sorts: aquatic, earthly and winged.

The honey bee magas i anguben belongs to the category of winged xrafstars or noxious creatures, but there is a twist here where the commentators of the text state that Ohrmazd, through its infinite wisdom, turned some of the xrafsatars to bring benefit, including magas ke anguben kuned ud kirm ke abrešom. (The fly which makes honey and the worm which makes silk.) This passage is most curious and suggests the uneasiness with which the Zoroastrians saw the benefits of bees and honey. This

At the family dinner in the 80's at the author's grandfather's home.

Zoroastrian world-view in late antiquity becomes more manifest when looking at cooking and food preparation. In the only surviving Middle Persian text, Xusro ud Redag (Khusro and the Page), which can be dated to the 6th century CE, we have a wonderful list of the meats, deserts and wines and their method of preparations. The king's table in this text exhibits the power and economic reach of the Sasanian world in late antiquity.

Chinese and Indian fruits and goods to Roman and Near Eastern wines and delicacies are all mentioned. What is striking in this text is the absence of the use of honey for any purpose, as if the Iranians were unfamiliar with it. If we take into consideration the demonic nature of the producer of this food, however, much the Bundahišn emphasizes Ohrmazd's work in turning its nature, we can understand the absence of honey in the Zoroastrian Middle Persian texts. There is only one other Middle Persian text where there is a mention of honey and that is the Draxt i Asurig (Assyrian Tree). Here, the mention of the honey and bee is given as such, where the palm tree is stating its benefits to the goat and says: šir hem warzigaran anguben azadmardan. (My milk is for the peasants, honey for the nobles.)

> The old priest asked for a brass bowl to be filled with milk and brought to / the assembly. He then stirred a spoonful of sugar in the bowl and holding it / up in his trembling hands asked: 'Does any see the sugar in the bowl / of milk?' All shook their heads. 'Sire, said the priest, we shall try to be like / this insignificant amount of sugar in the milk of your human kindness.'

In lieu of the discussion of the Xusro ud Redag, then the question arises as to why its absence in the late Sasanian text and its association with the nobility in the Draxt i Asurig? The reason for the inclusion of honey here may exhibit the ancient Mesopotamian tradition of this text. Furthermore, the Draxt i Asurig was composed in the Parthian period which predates the codification of animal classification in the Sasanian period and in its nature is a secular text devoid of late antique religiosity. Hence, its inclusion is possible because it predates the Zoroastrian didactics in late antiquity. It is curious that from the Parthian period, Strabo makes an observation where honey is again used, this time by the Magi in making sacrifice to the waters.

Strabo states (XV.III.14): They sacrifice to water by going to a lake, river, or fountains; having dug a pit, / they slaughter the victim over it, taking care that none of the pure water near be / sprinkled with blood, and thus be polluted. They then lay the flesh in order upon / myrtle or laurel branches; the Magi touch it with slender twigs and make incantations, pouring oil mixed with milk and honey, not into the fire, nor into the water, but / upon the earth. They continue their incantations for a long time, holding in the / hand a bundle of slender myrtle rods.

I should finally touch upon another 'demonic' association between honey and Zoroastrianism. In the Zoroastrian tradition, the three important or arch-demons are mentioned: Indra (Ved. Índra / MP Andar), Sauruua (Ved. Sarvá / MP Sawul), and Nånhaioiia (Ved. Nasatya). Their survival appears to be significant and important and the reasoning for their appearance in the Widewdad is unclear. Herrenschmidt & Kellens states that it is remarkable that the authors of the Widewdad have a memory of these Indo-Iranian gods and to have demonized them later. The Nasatya are identified with the Ašvins who in the Vedic tradition are benevolent and who are invoked in the Vedic tradition more than any other gods, with the exception of Indra, Agni and Soma. The Ašvins have one characteristic which concerns us here and that is their connection with honey (mádhu). They are filled with honey, but more importantly, are the ones who gave honey to the bees. One cannot state that the reason for which the Ašvins became the fallen gods in Zoroastrianism is due to their association with primarily honey, but as the Widewdad shows, there was still a memory of them. The honey association with Nanhaioiia is yet another nail in the coffin of our Indo-Iranian fallen gods whose reasoning for demotion in the Zoroastrian world is unclear. In the Zoroastrian tradition, Nanhaioiia stood in a symmetric opposition to Armaiti and by the end of late antiquity was still remembered as an arch-daiva.

It should be mentioned that with the coming of Islam and its positive view of honey, the Zoroastrians were to have a rethinking of the use of honey. In the medieval theological discussions, honey became a subject of interest as Jews, Christians and Muslims all used it for food and medicinal purposes and Zoroastrians were exposed. The Zoroastrians in the medieval period had accepted the fact that honey could and should be consumed, but ruling was that it could not begotten from a non-Zoroastrian, but rather should be purchased from the Wehden.

The story of Zoroastrians landing in India in the 10th century and their meeting with the local king Jadhav Rana is interesting for many reasons. One note related to it is the question and answer session between Jadhav Rana and the four Zoroastrian priests. The Indian king asks what will the Zoroastrians do for his country in return to being allowed to stay? The Zoroastrian priests answered by taking the following action:

The old priest asked for a brass bowl to be filled with milk and brought to / the assembly. He then stirred a spoonful of sugar in the bowl and holding it / up in his trembling hands asked: 'Does any see the sugar in the bowl / of milk?' All shook their heads. 'Sire, said the priest, we shall try to be like / this insignificant amount of sugar in the milk of your human kindness.'

The Zoroastrians had finally arrived at a safe land, a sort of promised land. However, this promised land was not the land of 'milk and honey,' as honey was not a heavenly food, rather a demonic food from a demonic creature. So, while those following the Abrahamic tradition took to honey and specifically in Judaism, the land of 'milk and honey,' Canaan became an important metaphor, in Zoroastrianism. It was 'milk and sugar' that had to give birth to the narrative of the Parsi migration to India.

rajeshsharma1049@gmail.com

#LIPID PROFILE

The Town and Its Trouble Makers

Understanding Your Lipid Profile: A Simple Story for Better Heart Health

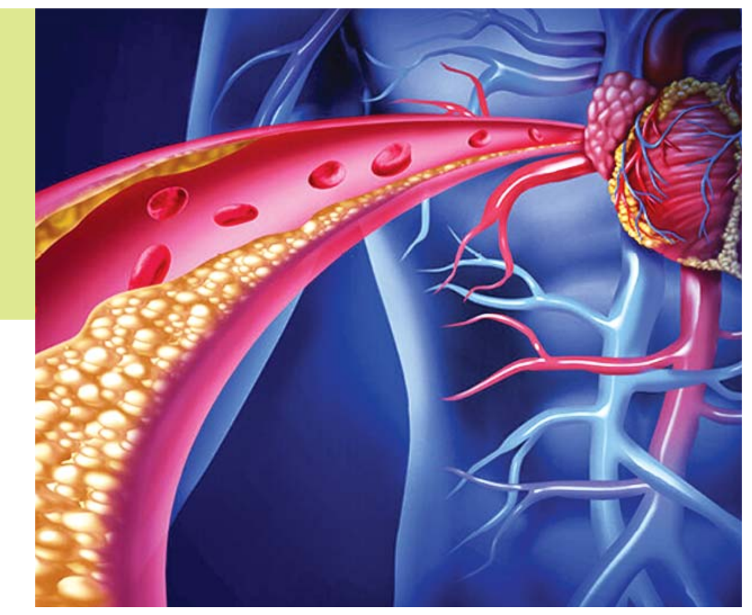

A well-known doctor once shared a memorable and easy-to-understand story to explain the lipid profile and why it matters for your heart health. Let's imagine your body as a small town, and discover who the key players are.

Trouble Makers

In this little town, the biggest troublemaker is Cholesterol. He doesn't act alone, his main partner in crime is Triglyceride. These two roam the streets, causing chaos and blocking the roads. At the heart of the town is the city center, your heart. All roads lead here, and when these troublemakers multiply, they start blocking the city center's roads, threatening its smooth functioning.

The Police Force: Good Cops vs. Bad Cops

Fortunately, the town has a police force. The good policeman, HDL (High-Density Lipoprotein), captures these troublemakers and locks them up in jail, the liver, from where they are removed safely through the body's drainage system. But there's also a bad cop, LDL (Low-Density Lipoprotein), hungry for power. LDL frees the troublemakers from jail and lets them back on the streets, worsening the chaos.

When the good cop HDL is low, the town falls into disarray. Nobody would want to live in such a troubled place!

How to Protect Your Town (Your Body)

Want to reduce these miscreants and boost the good policemen? The answer is simple: Start walking!

With every step you take, HDL (the good cop) increases, while Cholesterol, Triglyceride, and LDL (the miscreants) decrease. Your body-town revives, your heart-city center remains safe from blockages, and you feel healthier. So, whenever you get a chance, keep moving!

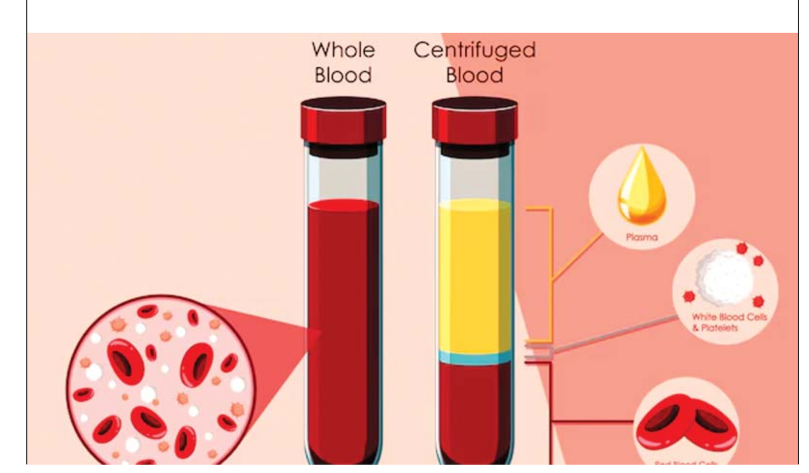

Tips for a Heart-Healthy Lifestyle

Foods to Reduce:

1. Salt
2. Sugar
3. Bleached refined flour
4. Dairy products
5. Processed foods

Foods to Eat Daily:

1. Vegetables
2. Pulses
3. Beans
4. Nuts
5. Cold-pressed oils
6. Fruits

Three Things to Let Go Of

1. Your age
2. Your past
3. Your grievances

Four Things to Embrace

1. Your family
2. Your friends
3. Positive thinking
4. A clean and welcoming home

Three Simple Habits to Practice

1. Always smile
2. Do regular physical activity at your own pace
3. Monitor and maintain a healthy weight

Six Essential Lifestyle Habits

1. Don't wait till you're thirsty to drink water.
2. Don't wait till you're tired to rest.
3. Don't wait till you're sick for medical checkups.
4. Don't wait for miracles, trust in God.
5. Never lose faith in yourself.
6. Stay positive and hope for a better tomorrow.

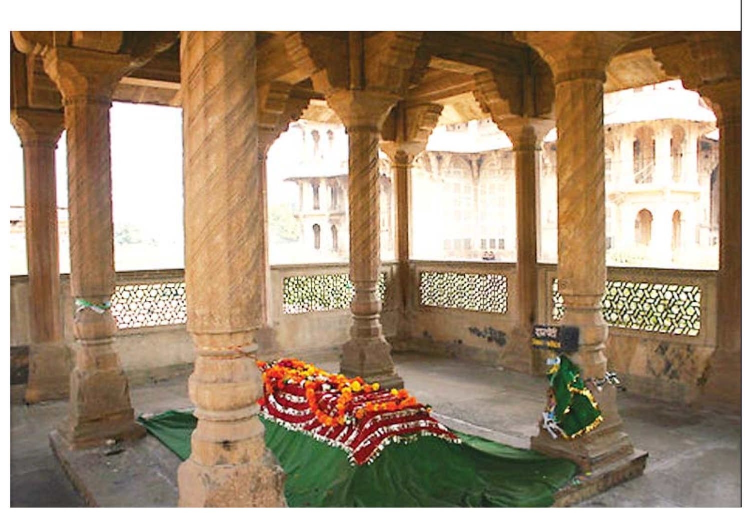

THE WALL

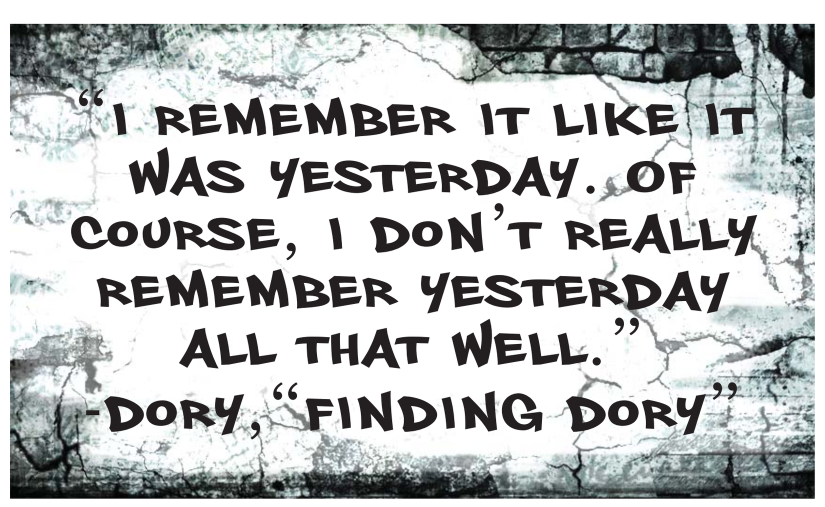

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

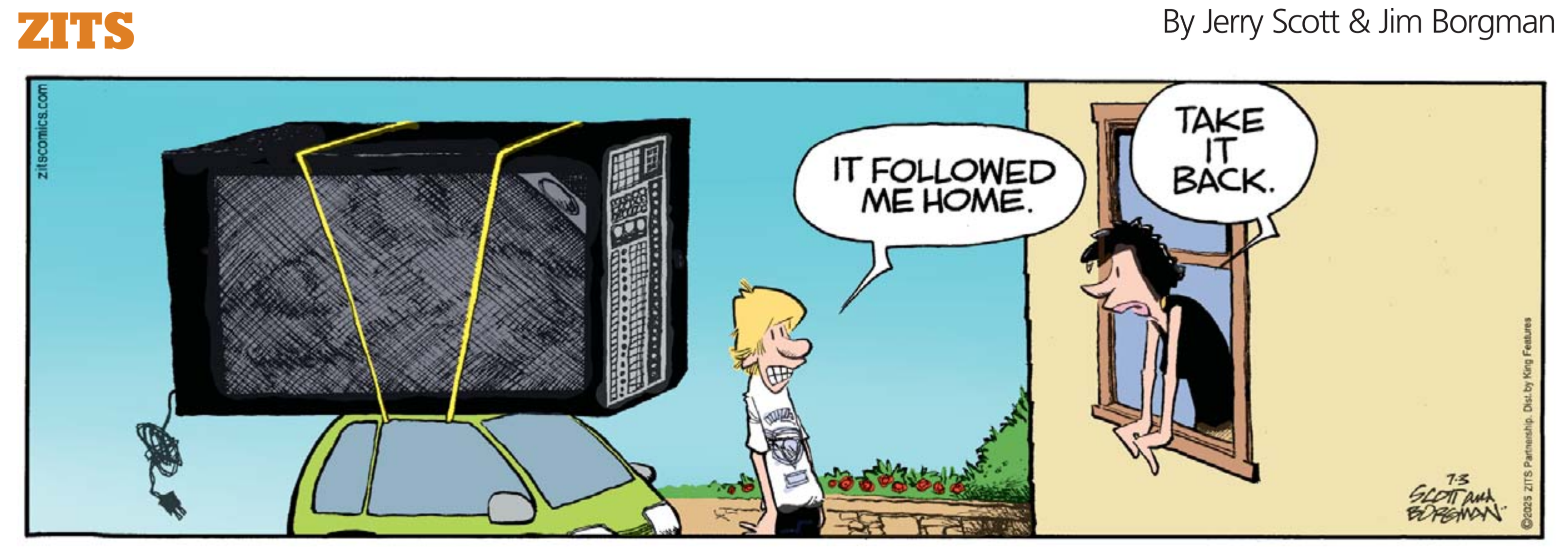

पुलिस टीम पर जानलेवा हमला करने का 20 माह से फरार आरोपी गिरफ्तार

आरोपी के विरुद्ध विभिन्न थानों में 29 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं

पावटा, (निसं)। पुलिस टीम पर जानलेवा हमला करने के आरोप में 20 माह से फरार चल रहे आरोपी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तारशुदा अभियुक्त के विरुद्ध विभिन्न थानों में 29 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं।

जिला पुलिस अधीक्षक कोटपूतली बहरोड देवेंद्र कुमार विश्नोई ने बताया कि पुलिस मुख्यालय द्वारा वर्तमान में संपत्ति संबंधी अपराधों की रोकथाम के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन एवं विराटनगर थाना प्रभारी सोहन लाल के नेतृत्व में गठित टीम ने घटना के बाद से फरार चल रहे वांछित अपराधी सतवीर को गिरफ्तार किया जो शातिर किस्म का अपराधी है। अभियुक्त अन्य साथियों के साथ कैंपर गाड़ी से दूर दराज के शहरों व कस्बों में जाकर रात्रि में चोरी व नकबजनी की घटनाओं को अंजाम देकर कच्चे-पक्के रास्ते से फरार हो जाते हैं। पुलिस टीम द्वारा 20 माह से फरार चल रहे अभियुक्त की गहनता से तलाश करते हुए मुखबिर की सूचना पर सतवीर पुत्र शेरसिंह निवासी भालोट पचेरी थाना झुंझुनूं को

पुलिस टीम पर जानलेवा हमला करने के आरोप में फरार चल रहे आरोपी को गिरफ्तार किया।

गिरफ्तार किया जाकर न्यायालय में पेश किया जाकर न्यायिक अभिरक्षा में भिजवाया। अभियुक्त के विरुद्ध विभिन्न थानों में 29 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं।

विराटनगर थाना प्रभारी सोहन लाल व थाना सहायक उपनिरीक्षक रामशरण ने जानकारी देते हुए बताया कि 14 दिसंबर 2023 को वायरलेस कंट्रोल रूम कोटपुतली से सूचना प्राप्त हुई कि एक बोलेरो कैम्पर जिसमें कुछ बदमाश किस्म के लोग जिनके पास हथियार भी हो सकते हैं ज्यो थाना नारायणपुर नाकाबंदी को तोड़कर घाटा होते हुए विराटनगर की तरफ आ रहे हैं, सूचना पर विराटनगर थाना

- **नाकाबंदी में खड़े पुलिस जाप्ते को जान से मारने की नियत से बैरिकेट्स को टक्कर मार दी जिस पर जाप्ते ने कूदकर अपनी जान बचाई थी**

सहायक उपनिरीक्षक रामशरण द्वारा मय जाब्ता मय थाने के सामने नाकाबंदी की। नाकाबंदी के दौरान कस्बा विराटनगर की तरफ से एक तेज गति से बोलेरो कैम्पर आई व नाकाबंदी पॉइंट पर बैरिकेट्स पर खड़े जाप्ते को जान से मारने की नियत से बैरिकेट्स को टक्कर मार दी। जिस पर जाप्ते ने कूदकर अपनी जान बचाई। वहीं बदमाश बोलेरो कैम्पर को लेकर बीलवाडी की तरफ भागने लगे। जिस पर उनका पीछा किया गया तो कैम्पर का आगे का टायर फट गया। बीजक रोड से आगे पेट्रोल पंप की रोशनी में सरकारी जीप को आगे लगाकर उन्हें रोकने का प्रयास किया तो कैम्पर से चार बदमाश उतरकर भागने लगे व अंधेरे का फायदा उठाकर वह भागने में सफल हो गए, जिनकी सुबह तक तलाश की गई। वहीं आसपास सूनी जगह में छिपे होने की आशंका पर तलाश की गई लेकिन तलाश अधूरी रही। वहीं बोलेरो कैम्पर को चेक किया तो उसमें एक मोबाइल फोन, एक लोहे का हाथ का कटर, एक लोहे की फरसी मिली व कैम्पर के पीछे दोनों तरफ लोहे की गाटर निकाल रखी थी। नाकाबंदी पॉइंट पर बैरिकेट्स पर खड़े जाप्ते को जान से मारने की नियत से बैरिकेट्स को टक्कर मार राजकीय संपत्ति को नुकसान पहुंचाया।

अवैध हथकड़ शराब के साथ एक आरोपी गिरफ्तार : श्रीगंगानगर जिले के मुकलावा थाना क्षेत्र में अवैध हथकड़ शराब के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई की है। पुलिस ने एक व्यक्ति को 78 लीटर अवैध हथकड़ शराब के साथ गिरफ्तार किया। यह कार्रवाई मुकलावा थाना अधिकारी संपत धायल के नेतृत्व में की गई। आरोपी की पहचान 14 एमएल निवासी निर्मल सिंह के रूप में हुई है। पुलिस को गश्त के दौरान मुखबिर से सूचना मिली थी। क्षेत्र में एक व्यक्ति अवैध शराब बेचने की फिराक में है। सूचना मिलते ही पुलिस ने तुरंत घेराबंदी कर कार्रवाई को अंजाम दिया। थाना प्रभारी संपत धायल ने बताया कि आरोपी के कब्जे से कुल 78 लीटर हथकड़ शराब बरामद की गई है। मौके पर ही शराब को जब्त कर आरोपी को गिरफ्तार किया।

तेज रफ्तार प्राइवेट बस पलटी, जोधपुर निवासी अधेड़ की मौत

जोधपुर, (कासं)। ब्यावर-जोधपुर हाइवे पर गोल चौराहे के पास तेज रफ्तार प्राइवेट बस पलट गई। इस दौरान बस का टायर भी फट गया। हादसे में जोधपुर निवासी एक अधेड़ की मौत हो गई। वहीं बस में सवार 35 में से 30 से ज्यादा सवारियां घायल हो गईं। बस हरिद्वार से जोधपुर जा रही थी। हादसा ब्यावर जिले में साकेत नगर इलाके में गोल चौराहे के पास रविवार सुबह छह बजे हुआ। हादसे के बाद यात्रियों में चीख-पुकार मच गई।

थाना प्रभारी जितेंद्र फौजदार ने बताया कि हादसे में जोधपुर निवासी मोडा (45) पुत्र चंद्राराम की मौत हो गई है। बस में सवार 35 में से 30 से ज्यादा सवारियां चोटिल हो गईं। घायलों में बच्चे और महिलाएं शामिल

- **बस में सवार 35 में से 30 सवारियां घायल हो गई**
- **पुलिस ने बस को जब्त कर ड्राइवर और कंडक्टर को गिरफ्तार किया**

हैं। 18 घायलों को ब्यावर के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बस में सवार 13 साल के दुर्गाराम का हाथ कटकर अलग हो गया। प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि हाइवे पर घुमाव पर बस की स्पीड तेज थी और अचानक पलट गई। यात्रियों ने बताया कि ड्राइवर ओवरस्पीड में बस चला रहा था और उसे टोका भी, लेकिन नहीं माना।

हादसे में घायल दुर्गाराम (13) निवासी बड़ली (जोधपुर) और पुष्पा कंवर (47) निवासी सोजत का हाथ कटा है। वहीं बालेसर निवासी पूनाराम, बड़ली (जोधपुर) निवासी रीतू, धापू देवी, सोजत निवासी चंदनी बाई चौपड़ा, पाली निवासी मांगीदेवी, भंवर देवासी, अनंदाराम, बालोतरा निवासी मोडाराम, डोरयावास निवासी चंद्राराम, देवलिया कलां निवासी पायल, प्रदीप, प्रहलाद, पीपाड़सिटी (जोधपुर) निवासी राहुल है। थाना प्रभारी जितेंद्र फौजदार ने बताया कि सूचना पर पहुंची पुलिस ने बस को जब्त कर ड्राइवर और कंडक्टर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस जांच में जुटी है।

भुगतान को लेकर बीयर बार में विवाद हुआ

कोटा, (निसं)। गुमानपुरा थाना इलाके में संचालित एक बीयर बार में शनिवार देर रात्रि को शराब के बिल भुगतान को लेकर ग्राहकों व बार कर्मचारी के बीच विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि शराब के नशे में शराबियों ने जमकर उत्पात मचाया और वहां तोड़फोड़ की। पूरा घटनाक्रम बार में लगे सीसीटीवी कैमरे मे कैद हो गया।

जानकारी के अनुसार गुमानपुरा इलाके में संचालित बार में कुछ युवक पहुंचे और बीयर पीने के बाद पैमेंट को

- **विवाद इतना बढ़ गया कि शराबियों ने उत्पात मचाया और तोड़फोड़ की**

लेकर युवकों व कर्मचारियों के बीच कहासुनी हो गई, जिस पर युवकों ने शराब के नशे में बार में उत्पात मचाते हुए तोड़फोड़ शुरू कर दी। गुमानपुरा थानाधिकारी अनिल टेलर ने बताया कि बार संचालक नरेन्द्र पुरी ने गुमानपुरा थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। थानाधिकारी ने बताया कि मामले में सामने आया कि उत्पात मचाने वाले बार के रूटिन कस्टमर थे, शराब के बिल के भुगतान में से कुछ भुगतान कर दिया था और कुछ भुगतान बाकी था, जिसको लेकर कस्टमर और कर्मचारियों के बीच विवाद हो गया। बीयर बार से जाते समय उन्होंने बार के मेन गेट के कांच को तोड़ दिया और बाहर खड़ी एक कार के कांच भी तोड़ दिये। बार संचालक की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

दीपक हत्याकांड : चार गिरफ्तार, विधी से संघर्षरत पांच डिटेन

उदयपुर, (निसं)। फलासिया थाना पुलिस ने दीपक हत्याकांड मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया तथा विधी से संघर्षरत पांच बाल अपचारियों को डिटेन किया है।

प्रकरण के अनुसार आठ अगस्त को कैलाश डामोर ने बताया कि सात अगस्त को मेरा पुत्र दीपक उसका साला अजय भगोरा मित्र निखिल तिरगर व रमेश खराड़ी फलासिया बाजार में आये थे तथा सीएचसी धर्मशाला की तरफ चार की होटल पर बैठे थे। वहां से रमेश व दीपक का साला बाजार गए तो मेरे पुत्र के दोस्त रमेश व लथुणी निवासी अश्विन उर्फ अमित के बीच पुराना विवाद होने से अश्विन ने बाजार में रमेश को पकड़कर थप्पड़ मारी। तब रमेश छुड़ाकर वहां से खेतें की तरफ भाग गया और भागकर दीपक व निखिल के पास आ गया। दीपक का साला अयज भी वहां चला आया जहां आरोपी अश्विन उर्फ अमित अपने साथियों के साथ आया और रमेश के साथ मारपीट करना शुरू कर दिया तो दीपक ने बीच-बचाव किया तो आरोपियों ने मेरे पुत्र की सीने में चाकू मारकर फरार हो गए। जहां मेरे पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई।

मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उपाधीक्षक नेत्रपालसिंह के सुपरविजन में फलासिया थानाधिकारी सीताराम के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए 9 आरोपियों को पूछताछ की तो अश्विन ने बताया कि 13 मार्च को होली पर मैं फलासिया आया था, जहां बीच रास्ते में रमेश व दीपक शराब पी रहे थे। तब रमेश ने शराब के लिए रूपये मांग कर बेवजह मेरे थप्पड़ मारा था। उक्त बात किसी को नहीं बताई। सात अगस्त को फलासिया आया तथा रमेश को देखकर फोन कर मित्रों को बुलाया तथा बदला लेने की नियत से रमेश पर हमला किया तो अश्विन के नाबालिग मित्र दीपक के सीने में चाकू से हमला कर फरार हो गया। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर फलासिया थानाधिकारी सीताराम के नेतृत्व में गठित दल ने कार्यवाही करते हुए हत्या के आरोपी अश्विन उर्फ अमित पुत्र हुरजी निवासी लथुणी हॉल सोम फलासिया, मनीष पुत्र शांतिलाल निवासी सोम, काशीराम पुत्र हिरालाल निवासी सोम, राजु उर्फ राजेन्द्र पुत्र तेजपाल निवासी सोम फलासिया को गिरफ्तार किया तथा विधी से संघर्षरत पांच बाल अपचारियों को डिटेन किया, जिनसे पूछताछ की जा रही है।

दो किलो गांजा सहित आरोपी गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। कैथून पुलिस टीम ने चैकिंग के दौरान अवैध मादक पदार्थ गांजा दो किलो 10 ग्राम सहित आरोपी को गिरफ्तार किया। कोटा ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि कैथून थाने के थाना इंजार्च उपनिरीक्षक सुरेश कुमार ने मय जाप्ता इलाके में चैकिंग के दौरान संदेह होने पर कार्रवाई करते हुए एक जने को डिटेन कर उसकी तलाशी ली तो उसके पास से अवैध मादक पदार्थ गांजा 2 किलो 10 ग्राम बरामद हुआ। पुलिस टीम ने मौके पर एनडीपीएस एक्ट में कार्यवाही करते हुए थाना कैथून के अरण्डखेड़ा निवासी सोनु उर्फ उदा (26) को गिरफ्तार किया। पकड़े गये आरोपी से अनुसंधान जारी है।

हमला करने का आरोपी गिरफ्तार

करौली, (निसं)। सपोटरा थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुए पुलिस पार्टी पर हमला करने एवं सरकारी वाहन को क्षतिग्रस्त करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। जिला पुलिस अधीक्षक लोकेश सोनवाल के निर्देशन में चलाए जा रहे धरपकड़ अभियान के तहत सपोटरा थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुए अवैध शराब तस्करी, पुलिस पार्टी पर जानलेवा हमले व सरकारी वाहन को क्षतिग्रस्त करने पर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। सपोटरा थाना अधिकारी धारा सिंह पुलिस टीम के साथ गश्त पर थे, जहां सूचना मिलने पर सफेद रंग की बोलेरो जीप में अवैध शराब ले जाने की सूचना पर आरोपी शैलेश मीणा पुत्र भरत लाल निवासी रानीपुरा थाना सपोटरा को नाकाबंदी के दौरान गिरफ्तार कर लिया। जिसके कब्जे से अवैध शराब एवं बोलोरो गाड़ी को जप्त कर लिया है।

वहीं उदयपुर शहर के अम्बामाता थाना क्षैत्र में होटलकर्मी की अकाल मौत हो गई। आमरा थाना पानरवा हॉल अम्बामाता थाना क्षैत्र बजरंग मार्ग निवासी कांतिलाल पुत्र वक्ताराम गरासिया की रविवार सवेरे अकाल मौत हो गई। कांतिलाल होटल में काम करता था एवं सामने ही मकान में कमरा किराए लेकर रहता था।

तिरंगा हमारे देश की आत्मा, पहचान और गौरव का प्रतीक है : के.के. गुप्ता

के. के. गुप्ता ने लोगों से अपील की है कि हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाएं

उदयपुर, (निसं)। भाजपा नेता और स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के राजस्थान संयोजक के. के. गुप्ता ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हर घर तिरंगा अभियान ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि तिरंगा हर भारतीय के दिल में बसता है। यह अभियान बिना किसी भेदभाव के हर घर में तिरंगे को फहराने के लिए प्रेरित करता है, जो एक स्वच्छ और एकजुट भारत की पहचान है। उन्होंने लोगों से अपील की है कि हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाएं और अपने राष्ट्रीय ध्वज की आन-बान-शान को हमेशा ऊँचा रखें। यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम इस प्रतीक को सम्मान दें और इसके मूल्यों को अपने जीवन में उतारें।

गुप्ता ने कहा कि भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा, सिर्फ एक कपड़ा नहीं, बल्कि हमारे देश की आत्मा, पहचान और गौरव का प्रतीक है। यह केवल

के.के. गुप्ता

स्वतंत्रता का चिह्न नहीं, अपितु राष्ट्र की आन-बान-शान भी है। तिरंगा देश को समृद्ध और मजबूत बनाने की हमारी प्रतिबद्धता का भी प्रमाण है। यह हमारा सुरक्षा कवच है।

उन्होंने कहा कि हाल के वैश्विक घटनाक्रमों में तिरंगे की शक्ति स्पष्ट रूप से देखी गई है। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान, लगभग 40 हजार भारतीय छात्र अपने देश के झंडे को लेकर सुरक्षित अपने वतन लौट आए। यह घटना दर्शाती है कि कैसे हमारा ध्वज विपरीत परिस्थितियों में भी एक सुरक्षा कवच का काम करता है, जो विदेशों में हमारे नागरिकों के लिए पहचान और सुरक्षा का प्रतीक बन जाता है। पाकिस्तान के साथ हुए युद्धों में भी तिरंगा हमारी सेना के अदम्य साहस और पाकिस्तान को करारा जवाब देने की हमारी क्षमता का गवाह रहा है। यह हमें उन वीर जवानों की याद दिलाता है जिन्होंने देश की अखंडता और संप्रभुता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

के.के. गुप्ता ने कहा कि देश के भीतर, तिरंगा कई ऐतिहासिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह द्वारा धारा 370 को हटाना और देश को आतंकवाद से मुक्त करने के प्रयासों में भी तिरंगा राष्ट्र की एकता और दृढ संकल्प का प्रतीक बना। यह निरंतर देश को समृद्ध और मजबूत बनाने की दिशा में हमारे सामूहिक प्रयासों को दर्शाता है। तिरंगा उन अनगिनत नौजवानों का सम्मान है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। यह उन वीर जवानों का भी सम्मान है जो आज भी हमारी सीमाओं पर डटकर देश की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं। उनका बलिदान और समर्पण ही हमें एक सुरक्षित और मजबूत राष्ट्र के रूप में खडा रखता है। गुप्ता ने कहा कि तिरंगा न केवल आजादी की निशानी है अपितु देश की आन बान शान भी है तिरंगा देश को समृद्ध एवं मजबूत बनाने का प्रमाण भी है।

बारिश के कारण 25 साल पुराना मकान ढहा, परिवार बाल-बाल बचा

गनीमत रही कि परिवार के सदस्य पहले ही जर्जर कमरों को खाली कर दूसरे कमरों में शिफ्ट हो चुके थे

कामां/भरतपुर, (निसं)। कामां थाना क्षेत्र के बसई डेहरा गांव में देर रात भारी बारिश के कारण 25 साल पुराने मकान के दो कमरों की पट्टियां अचानक ढह गईं। गनीमत रही कि परिवार के सदस्य पहले ही इन जर्जर कमरों को खाली कर दूसरे कमरों में शिफ्ट हो चुके थे, जिससे कोई जनहानि नहीं हुई।

मकान मालिक दिगंबर सिंह ने बताया कि पिछले तीन दिनों से रुक-रुक कर हो रही बारिश के कारण उन्हें मकान के ढहने का अंदेशा था। इसलिए परिवार ने सावधानी बरतते हुए जर्जर कमरों को खाली कर दिया था। इन कमरों में पशुओं को बांधा गया था। घटना में कुछ पशुओं को मामूली चोटें आईं, लेकिन कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ। सुबह करीब 4 बजे तेज धमाके की आवाज के साथ पट्टियां गिरीं, जिससे परिवार नींद से जाग गया। मौके पर ग्रामीण भी इकट्ठा हो गए। दिगंबर सिंह ने बताया कि अब दोनों कमरों को

ासई डेहरा गांव में दो कमरों की पट्टियां अचानक ढह गई।

पूरी तरह तुड़वाकर पुनर्निर्माण कराया जाएगा। इस हादसे से परिवार को काफी नुकसान हुआ है। स्थानीय प्रशासन को घटना की सूचना दी गई है और परिवार ने मकान की मरम्मत के लिए सहायता की मांग की है।

सफाई अभियान चलाया : बीकानेर में एक घंटा देश के नाम अभियान में आवर फॉर नेशन टीम ने शिक्षा विभाग मुख्यालय में आज प्रातः 7 बजे जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, शिक्षा विभाग मुख्यालय में सफाई अभियान चलाया। शिक्षा विभाग द्वारा अपने समस्त स्टाफ को इसमें भाग लेने हेतु विशेष कार्यालय आदेश जारी किया गया था। टीम ने कार्यालय परिसर की संपूर्ण सफाई करते हुए एक ट्रैक्टर-ट्रॉली भरकर कचरा एकत्र किया और विशेष रूप से झाड़-पोंछ व पेड़ों की सफाई की। यह केवल सफाई नहीं, बल्कि स्वच्छ और प्रेरणादायक कार्य वातावरण का संकल्प था। आज की टीम के सदस्य डॉ. विशाल मलिक, गजेंद्र सरीन, राकेश गुज्जर मानक व्यास, गुरमोहन सेठी आदि थे।

हादसे में दम्पती घायल

श्रीडूंगरगढ़, (निसं)। एनएच 11 पर बेनीसर गांव के बस स्टैंड के पास शाम को बस और बाइक की टक्कर हो गई। दुर्घटना के समय बस की गति एकदम धीमी थी। जिसकी वजह से बाइक सवार एक पुरुष व महिला टक्कर के बाद रेत पर जा गिरे। इससे एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। हादसे में बाइक सवार लाछड़सर निवासी हरिराम प्रजापत (30) और उसकी पत्नी अन्नपूर्णा (25) घायल हो गई। सूचना मिलने पर डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम वेलफेयर सोसायटी के सेवादार मौके पर पहुंचे। घायलों को एम्बुलेंस से श्रीडूंगरगढ़ के उपजिला अस्पताल पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को बीकानेर रेफर कर दिया।

लोगों के लिए वरदान साबित हो रही है मां अन्नपूर्णा निःशुल्क भोजनशाला

करौली, (निसं)। करौली जिला मुख्यालय पर संचालित मां अन्नपूर्णा निशुल्क भोजनशाला आम आवाम, गरीब, जरूरतमंद एवं अस्पताल के रोगियों के लिए वरदान साबित हो रही है।

मां अन्नपूर्णा निशुल्क भोजनशाला समिति के अध्यक्ष बाला साहेब ने बताया कि करौली की नई सब्जी मंडी के पीछे करीब एक दशक से निशुल्क भोजनशाला संचालित है जिसमें प्रातः एवं सायकाल करीब 400 से अधिक लोग भोजन प्रसादी ग्रहण करते हैं। उन्होंने बताया कि शहर के लोगों के अलावा कई अन्य जिलो के लोग भी इस भोजन शाला समिति से जुड़े हुए हैं जो अपने परिवार जनों की पुण्यतिथि, जन्मदिन पार्टी मनाकर अपने हाथों से गरीब, असहाय, वृद्ध एवं अस्पताल के भर्ती रोगियों एवं परिजनों को भोजन कराते हैं। उन्होंने बताया कि भोजन शाला समिति में टीकाराम मीणा गैस वाले,डॉ प्रकाश व्यास,समाजसेवी बबलू शुक्ला ,के के मित्तल, देवेंद्र शर्मा सहित अन्य लोगों का सहयोग मिलता है उन्होंने कहा की भोजशाला में आर्थिक रूप से मदद ना लेकर लोग अपने हाथों से दाल, चावल, आटा, मसाले, दौना पत्तल, गिलास, तेल, घी आदि वस्तुएं भेंट कर जाते हैं। उन्होंने बताया इस भोजनशाला के समीप ही स्थिति सामान्य चिकित्सालय के रोगियों और परिजनों को काफी लाभ मिल रहा है और शुद्ध दाल, चावल, चपाती के अलावा खीर, पुरी, सब्जी आदि का प्रेम से बैठाकर भोजन कराया जाता है। इसके अलावा आसपास के लोगों और व्यापारियों, सब्जी विक्रेताओं की सुविधा के लिए आरओ वाटर कूलर के ठंडे पानी की व्यवस्था की गई है। वहीं मूक पशुओं, गौवंश आदि के लिए पीने के पानी हेतु अलग-अलग स्थान पर कुंडा बनवाए गए हैं।

बदमाशों ने कारीगर को लूटने का प्रयास किया

कोटा, (निसं)। शहर के आरकेपुरम थाना इलाके में बाइक सवार तीन बदमाशों द्वारा एक साइकिल सवार से लूट के प्रयास करने का मामला सामने आया है। साइकिल सवार युवक ने बदमाशों का हिम्मत से मुकाबला किया और शौर सुनकर स्थानीय लोग घरों से बाहर आये तो तीनों बदमाश मौके से फरार हो गये।

साइकिल सवार युवक ने इसकी

- **शोर सुनकर स्थानीय लोग मकान से बाहर आये तो तीनों बदमाश फरार हो गये**

रिपोर्ट आरकेपुरम थाने मे दर्ज कराई। जानकारी के अनुसार साइकिल सवार युवक भीमसिंह है जो कारीगरी का काम करता है। भीमसिंह आरकेपुरम इलाके के श्रीनाथपुरम में साइकिल से जाते समय रास्ते में तीन बाइक सवार बदमाशों ने उसे रोका और लूटने का प्रयास किया। बदमाशों की धमकी से साइकिल सवार डरा नहीं और डटकर बदमाशों का सामना किया। शोर सुनकर स्थानीय लोग मकान से बाहर आये तो तीनों बदमाश मौके से फरार हो गये। पूरा घटनाक्रम कॉलोनी मे लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया। पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर अज्ञात तीनो बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। आरकेपुरम थानाधिकारी महेन्द्र मारू ने बताया कि भीमसिंह ने तीन बाईक सवार बदमाशों के खिलाफ लूट के प्रयास करने की रिपोर्ट दी है। मौके पर लगे सीसीटीवी फुटैज के आधार पर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी है। आरोपियों की तलाश जारी है।

रास्ते में बाइक सवार पिता-पुत्र पर हमला

अनूपगढ़, (निसं)। यहां गांव 6 एमएसआर के बाहर देर रात लाठी-डंडों से पिता-पुत्र पर हमला कर दिया गया, जिसमें पिता की हालत गंभीर होने पर उन्हें श्रीगंगानगर रेफर करना पड़ा। घटना देर रात करीब 10 बजे की है।

एसएचओ ईश्वर प्रसाद जांगिड़ के अनुसार, पीड़ित जश्नजीत सिंह (22) पुत्र बूटा सिंह निवासी 93 जीबी ने रिपोर्ट में बताया कि वह घर पर था, तभी रात करीब 10 बजे उसकी बुआ (निवासी 6 एमएसआर) ने फोन कर बताया कि गुरविन्द्र सिंह के साथ जोनी मजहबी और अन्य युवक मारपीट कर रहे हैं।

सूचना मिलने पर वह अपने पिता के साथ बाइक से बुआ के घर की ओर रवाना हुआ। गांव 6 एमएसआर के बाहर रास्ते में जोनी मजहबी और 6-7 युवकों ने डंडा लगाकर उनकी बाइक रोक ली और लाठी-डंडों से

- **लाठी-डंडों से किया वार, पिता की हालत गंभीर, श्रीगंगानगर रेफर किया**

हमला कर दिया। हमले में जश्नजीत और उसके पिता बूटा सिंह घायल हो गए। जश्नजीत ने बताया कि घटना के दौरान उसके गले की चांदी की चेन गिर गई या हमलावर ले गए, इस बारे में वह स्पष्ट नहीं कह सकता। इसके बाद उसने अपने बुआ के बेटे गुरविन्द्र सिंह को फोन किया। सूचना पर गुरविन्द्र सिंह और गांव के अन्य लोग मौके पर पहुंचे और 108 एम्बुलेंस से दोनों घायलों को अनूपगढ़ के सरकारी अस्पताल पहुंचाया। प्राथमिक उपचार के बाद पिता बूटा सिंह को गंभीर चोटों के कारण श्रीगंगानगर रेफर कर दिया गया।

15 दिन बाद भी नहीं निकला बरसात का पानी

श्रीगंगानगर, (निसं)। अग्रसेन नगर थर्ड के निकट स्थित इंडस्ट्रियल एरिया से बरसात के पानी की 15 दिनों में भी निकासी नहीं हो पाई है। इसकी एक मात्र वजह यह है कि यहां नालियां तक नहीं हैं। इस कारण बरसात होने पर सड़कें ही तालाब बन जाती हैं। इससे एरिया की दुकानों का काम ठप हो जाता है। अब तो यह पानी सड़ांध मारने लगा है। इस संबंध में स्थानीय व्यापारियों की ओर से पानी निकासी के लिए कोऑपरेटिव सोसायटी के पदाधिकारियों को हर बार बरसात के बाद गुहार लगाते हैं, लेकिन पानी की निकासी का कोई स्थाई समाधान नहीं किया जा रहा।

जिला मुख्यालय पर 24 और 25 जुलाई को बरसात हुई थी। यह पानी तब से सड़कों पर खड़ा हुआ है। इसकी निकासी के लिए नालियां बनाई ही नहीं गई हैं। हद तो इस बात की है कि यह सिलसिला डेढ़ दशक से चल रहा है। सोसायटी की ओर से जमीन पर दुकानें काटकर आवंटित तो कर दी लेकिन कॉलोनी के विकास के नाम पर कोई काम नहीं करवाया गया है।

इंडस्ट्रीज एसोसिएशन कार्यकारिणी के सदस्य रमेश अग्रवाल ने बताया कि इस समस्या के समाधान के लिए उन्होंने सोसायटी के कोषाध्यक्ष शिव दयाल गुप्ता को फोन करके आग्रह किया। तब कोषाध्यक्ष ने कहा कि आप खुद ही पंप लगवाकर पानी उठवाकर बाहर निकलवा लीजिए। इसका जो भी खर्चा होगा, उसका भुगतान वे कर देंगे। जबकि पानी निकासी की व्यवस्था करना सोसायटी पदाधिकारियों की प्राथमिक जिम्मेदारी है। सोसायटी के गठन के बाद से आज तक इस इंडस्ट्रियल एरिया में पानी की निकासी की कोई स्थाई व्यवस्था नहीं की गई है। इस कारण हर बार बरसात के बाद सड़कों पर एक से दो फीट तक पानी भर जाता है।

सार-समाचार

एट होम कार्यक्रम के लिए मिला निमंत्रण

अंता। बारां जिले के अंता तहसील के गाँव दुगारी के रहने वाले युवा किसान हरी ओम नागर को 15 अगस्त को राष्ट्रपति भवन में होने वाले एट होम कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र मिला है। 25 वर्षीय युवा किसान हरिओम नागर एग्रीकल्चर से एमएससी कर केंद्र सरकार के आत्मनिर्भर तिलहन योजना से जुड़ उन्नत खेती कर रहे हैं। नागर द्वारा इस योजना के तहत अपने खेत में सोयाबीन उत्पादन किया जा रहा है । हरिओम के पिता परशुराम भी किसान उत्पादक संघ रिच रिटर्न्स के अध्यक्ष हैं और अंता क्षेत्र के किसानों की प्रगति के लिए लगातार कार्य करते रहते हैं । हरिओम भी किसान उत्पादक संघ में सक्रिय रूप से जुड़कर किसानों को सरकारी योजनाओं का लाभ लाभ दिलाते हैं। राष्ट्रपति भवन से आए इस बुलावे के बाद हरिओम और उनका परिवार बेहद खुश है । इस छोटी सी उम्र में हरिओम ने शिक्षा के बाद नौकरी की तलाश न करके भारत सरकार के योजना से जुड़कर कृषि को ही अपना व्यवसाय चुना है। कृषि विभाग बारां द्वारा समय-समय पर आयोजित किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं के माध्यम से हरिओम को नई-नई कृषि योजनाओं, उन्नत बीजों, जैविक विधियों तथा तकनीकी संसाधनों की जानकारी दी गई, जिनका उपयोग उन्होंने अपने खेतों में सफलता के साथ किया। इससे न केवल उनकी उपज में वृद्धि हुई, बल्कि क्षेत्र के अन्य किसानों ओर हजारों युवाओं के लिए भी प्रेरणा बन गए है राष्ट्रपति भवन से आए इस निमंत्रण पत्र को देने के लिए आज बारां डाक विभाग की ओर से डाक निरीक्षक डाक मनीष जैन अपनी टीम के साथ दुगारी पहुंचे, उन्होंने बारां डाक विभाग को आज ही प्राप्त हुए इस आमंत्रण पत्र को हरिओम नागर को सौंपा । आमंत्रण पत्र मिलने के बाद हरि ओम और उनके परिजनों समेत उनके गाँव के लोग बेहद खुश है।

विदेशी कंपनियां भारत छोड़ो कार्यक्रम सम्पन्न

छबड़ा। विश्व अर्थव्यवस्था अस्थिरता और अनिश्चितता का सामना कर रही है। ऐसे समय में, देश केवल अपने हितों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। भारत भी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है और उसे अपनी आर्थिक प्राथमिकताओं के प्रति सचेत रहना होगा। स्वदेशी सुरक्षा एवं स्वावलंबन अभियान के तहत अगस्त क्रांति दिवस के उपलक्ष में विदेशी कंपनियां भारत छोड़ो कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।विभाग संयोजक दिनेश गौड़ ने स्वदेशी पर भी नए सिरे से जोर दिया और इस बात पर जोर दिया कि यदि हम चाहते हैं कि भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बने तो प्रत्येक नागरिक को स्वदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए काम करना होगा। व्यापारियों और दुकानदारों से विशेष अपील करते हुए कहा कि ऐसे समय में जब दुनिया अनिश्चितता के दौर से गुज़र रही है, आइए हम अपनी दुकानों और बाज़ारों में केवल स्वदेशी सामान बेचने का संकल्प लें। भारत में निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा देना ही देश की सच्ची सेवा होगी। इस अवसर पर जिला संपर्क प्रमुख ऋषि माहेश्वरी एवं नगर, तहसील के समस्त कार्यकर्ताओ ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया।

विश्व स्तनपान सप्ताह का समापन

कोटा, (निसं)। इनरव्हील क्लब कोटा द्वारा विश्व स्तनपान सप्ताह के उपलक्ष्य में रविवार को आईएमए हॉल में समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सीएमएचओ डॉ.नरेंद्र उपस्थित रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अविनाश बंसल एवं डॉ.सी.बी. दासगुप्ता ने की। इस अवसर पर इनरव्हील क्लब अध्यक्ष चारू जैन भी मंचासीन रहीं और युवा माताओं को स्तनपान के महत्व पर अपने विचार साझा किए। क्लब सचिव नीरजा कोहली ने बताया कि इस जनसेवा कार्यक्रम का उद्देश्य माताओं को स्तनपान के महत्व से अवगत कराना और प्रसूता एवं गर्भवती महिलाओं को पोषणयुक्त आहार सामग्री प्रदान करना था। अध्यक्ष चारू जैन ने कहा कि स्तनपान केवल एक प्राकृतिक प्रक्रिया ही नहीं, बल्कि नवजात शिशु के सम्पूर्ण विकास का मूल आधार है। इससे शिशु को रोग प्रतिरोधक क्षमता मिलती है और माताओं का स्वास्थ्य भी संतुलित रहता है।

ममता विजय कॉर्डिनेटर नियुक्त

कोटा, (निसं)। लायंस क्लब प्रांत 3233-ई2 के प्रांतपाल लायन रामकिशोर गर्ग द्वारा लायन ममता विजयवर्गीय को एक्शन संडे कमेटी कॉर्डिनेटर के पद पर नियुक्त किया गया हैं। डिस्ट्रिक मीडिया कॉर्डिनेटर एमजेएफलायन राजेंद्र गांधी ने बताया कि लायंस क्लब कोटा सेंट्रल की सदस्य लायन ममता विजय पूर्व मे भी प्रांत के विभिन्न पदों पर अपनी सेवाएं प्रदान कर चुकी हैं। इनका कार्यकाल 30 जून 26 तक रहेगा। इस क्रम में उनके अंतर्गत राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के प्रांत के 150 से अधिक क्लब्स को प्रतिमाह के दूसरे संडे को होने वाले प्रांतीय सेवाकार्य के लिए प्रेरित करने का जिम्मा मिला हैं। इस नियुक्ति पर लायन पदाधिकारियों ने हर्ष व्यक्त किया है।

धरणीधर जनमोत्स्व की तैयारियां पूर्ण

छबड़ा। धरणीधर जन्मोत्सव को धूमधाम से मनाए जाने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई।ब्लॉक अध्यक्ष महावीर धाकड़ के अनुसार महिला, पुरुष, बालक-बालिकाओं के साथ जुलूस ओर उत्सव की तैयारियां जोरों पर है। क्षेत्र के गांव- गांव में जाकर समाज के नागर, मालव, किराड़ धाकड़ समाज के युवा कार्यकर्ता निमंत्रण दे रहे हैं। कार्यक्रम में लगभग 20 हजार धाकड शामिल होने की संभावना है। उत्सव के दिन समाजबंधु बन्धु अपने प्रतिष्ठान, दुकान ओर अन्य कार्य से अवकाश लेकर कार्यक्रम में परिवार सहित शामिल होंगे।

द आर्ट झील स्टूडियों का शुभारंभ

उदयपुर। शहर में रचनात्मकता और फोटोग्राफी को नई दिशा देने के उद्देश्य से शौभागपुरा सौ फीट रोड़ स्थित 'द आर्ट झील' स्टूडियो का शुभारंभ मुख्य अतिथि विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, भूपाल नोबल्स विवि की अधिष्ठाता प्रो. रेनू राठौड, वरिष्ठ नागरिक संस्थान के प्रदेश अध्यक्ष भंवर सेठ, ने रिबन काटकर उद्घाटन किया। कनिष्क कोठारी द्वारा स्थापित यह स्टूडियो केवल फोटोशूट की जगह ही नहीं, बल्कि रचनात्मकता, जुनून और सपनों को साकार करने का केंद्र होगा। यहां बच्चों के जन्म से लेकर जीवन के हर विशेष पल को कैमरे में कैद कर उन्हें यादगार बनाने की सुविधा उपलब्ध होगी।

स्मार्ट मीटरों को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा : कसाना

कोटपूतली में कार्यक्रम को पूर्व संसदीय सचिव कसाना ने सम्बोधित किया।

■ ग्राम गोनेड़ा में बाबा श्री सेवा रावत का वार्षिकोत्सव समारोह आयोजित

कोटपूतली। कस्बे के निकटवर्ती ग्राम गोनेड़ा स्थित बाबा श्री सेवा रावत के स्थान पर प्रतिवर्ष की भांति वार्षिकोत्सव समारोह रविवार को हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया। समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करते हुये पूर्व संसदीय सचिव रामस्वरूप कसाना ने राज्य सरकार पर जमकर निशाने साधे।

कसाना ने कहा कि पहले ही किसानों को राज्य सरकार बिजली के नाम पर परेशान कर रही है। ना तो विभाग में डीपी उपलब्ध हैं एवं ना ही बिजली की सप्लाई निरन्तर मिल रही है। क्षेत्र का किसान परेशान एवं सरकार से त्रस्त है, बावजूद इसके कि किसानों को राज्य सरकार कोई राहत पहुंचायें, बिजली के स्मार्ट मीटर यहां लगाये जाने है। जो कि किसानों समेत प्रत्येक वर्ग के हितों पर कुठाराघात है। स्मार्ट मीटर लगने के बाद बिजली का बिल भरना किसानों समेत आम आदमी के लिये बड़ा ही मुश्किल हो जायेगा। इसलिये कोटपूतली में बिजली के स्मार्ट मीटरों को किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जायेगा।

इसके विरोध में एकजुट होकर संघर्ष करेगें। कसाना ने यह भी कहा कि बाबा सेवा रावत ने समाज में व्याप्त अन्याय के विरूद्ध सच्चाई के लिये संघर्ष किया। जो भी व्यक्ति धर्म व सत्य के मार्ग पर चलता हैं उसे हमेशा याद किया जाता है। इस दौरान आयोजित भण्डारे में हजारों की संख्या में श्रद्धालूओं ने पंगत प्रसादी ग्रहण की। वहीं जयराम ठेकला व महेश लताला ने बाबा के भजन भी प्रस्तुत किये। आयोजक ड्राईवर समिति, गोनेड़ा ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में विधायक प्रतिनिधि करण पटेल, पूर्व विधायक रामचन्द्र रावत, मालीराम कम्पाउन्डर, सांवत सरपंच, गोठड़ी सरपंच अनिल रावत समेत अन्य अतिथि मौजूद रहें। वहीं सरपंच एड. देवेन्द्र रावत, संतराम सरपंच, बाबूलाल पोषवाल, हरफूल कसाना, अड़ीसाल, रामौतार खटाना, सत्यवीर नेताजी, ओमदत्त, बलवंत लम्बरदार, खुशीराम खटाना, रामेश्वर मुक्कड, राजपाल डेलीगेट, विक्रम रावत, राजकुमार रावत, प्रदीप पोषवाल, कालू पोषवाल, मुकेश जेलदार समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

विश्व आदिवासी दिवस मनाया

लक्ष्मणगढ़ शेखावाटी। मूलवासी आदिवासी मीणा समाज संस्था मत्स्य क्षेत्र राजस्थान की ओर से यहां अंबेडकर भवन में विश्व आदिवासी दिवस बड़े ही धूमधाम और हर्ष उल्लास से मनाया गया।संस्था के प्रधान सलाहकार एडवोकेट प्यारेलाल मीणा ने बताया कि आदिवासी मीणा समाज की अपनी विशिष्ट संस्कृति परंपरा ऐतिहासिक धरोहर है जिसे सुरक्षित करने की जरूरत है उन्होंने एक तीर एक कमान आदिवासी एक समान का नारा बुलंद करते हुए सभी मीना सरदारों को संगठित रहने का संदेश दिया ।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजेंद्र कुमार मीणा ओएस शिक्षा विभाग ने समाज को बालिका शिक्षा पर जोर देने की आवश्यकता बताई । मनोज कुमार मीणा वरिष्ठ अध्यापक ने अपने संबोधन में आदिवासी परंपरा के अनुसार पर्यावरण को सुरक्षित करने की दिशा में रुचि रखते हुए एक व्यक्ति को 10 पेड़ लगाने का संदेश दिया।

कांग्रेस संगठन को 4 साल बाद याद आए जनता के मुद्दे

सांभरझील, (निसं)। यहां कांठोस स्थानीय संगठन को नगर पालिका चुनाव के 4 साल बाद आज फिर से जनता के मुद्दे याद आना शुरू हो गए है, हालांकि इन चार सालों में कांठोस संगठन में दो दफा बदलाव भी हुए बताए लेकिन कांठोस कार्यकर्ताओं में अंदरुनी खींचतान का प्रमुख कारण संगठन की कमजोरी का बताया जा रहा है।

कार्यकर्ताओं में दो पक्षों की कथित आपसी नाराजगी और संगठन में अहम बदलाव की मांग गुपचुप तरीके से उठती रही हो लेकिन इसका नतीजा फिलहाल कुछ दिनों पहले विधायक की मौजूदगी हुई बैठक में निकल कर भी आ गया कि संगठन उनके निर्देशानुसार चलाया जाए और कार्यकर्ताओं को एकजुट कर बैठक आयोजित करने के निर्देश भी दिए गए थे। इसी क्रम में आज नगर कांठोस अध्यक्ष की तरफ से कार्यकर्ताओं की बैठक बुलाई गई लेकिन बताया जा रहा है की संख्या उतनी नहीं थी जितनी उम्मीद की जा रही थी। फिलहाल बैठक में नगर में व्याप्त जन समस्याओं के मुद्दे को लेकर होना बताया गया जिसमें पानी, बिजली व अनेक ज्वलंत समस्या को के समाधान की दिशा में प्रदेश सरकार की ओर से ध्यान नहीं दिए जाने को लेकर रोष जताया गया तथा साथ ही स्मार्ट मीटर लगाने का विरोध भी पुरजोर तरीके से उठाने का निर्णय लिया गया। नगर कांठोस कमेटी कार्यालय में आयोजित हुई। मीटिंग में स्वतंत्रता दिवस समारोह हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया। इस पावन अवसर पर सांभर के वरिष्ठ कांठोस जनों विशेष आमंत्रित करने का निर्णय लिया गया।

जन समस्याओं पर भी चर्चा की गई। बिजली पानी की दोनों समस्याओं को दूर करवाने हेतु उपखण्ड अधिकारी सांभर को ज्ञापन देने का निर्णय लिया गया। मीटिंग में सभी कार्यकर्ताओं ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर नगर अध्यक्ष कमल शुक्ला, अब्दुल हमीद कादिर, अरविन्द महरड़ा, बालुराम नोगिया, नजम उस्मानी, सिराजुद्दीन मंसुरी, सोमेश अजमेरा, जाकिर रंगरेज, मुइनुद्दीन कुरैशी, शाबीर रंगरेज, अनिल पंवार, मुकेश मोर्य, अभिलाष तम्बोली, धर्मेंद्र वर्मा, इरफान कुरैशी, विष्णु दत्त वर्मा, वसीम कुरेशी, फकरुद्दीन कुरैशी , मनु बेग, बशीर खान सहित कई कांठोस जन उपस्थित रहे।

पुजारी परिवार के विरूद्ध ग्रामीण लामबंद, बैठक का आयोजन

■ ऐतिहासिक सरूण्ड माता मंदिर में पूजा पाठ को लेकर आ रही अनियमितताओं का मामला

कोटपूतली। क्षेत्र के ग्राम सरूण्ड स्थित ऐतिहासिक माता चिलायध्सारंग माता मंदिर में पूजारी परिवार द्वारा पूजा पाठ समेत अन्य मामलों को लेकर आ रही अनियमितताओं का प्रकरण लगातार गहराता ही जा रहा हैं। इस सम्बंध में मंदिर की पूजा पाठ समेत अन्य व्यवस्थाओं को सुचारू किये जाने को लेकर सर्वसमाज की बैठक का आयोजन सरूण्ड माता मंदिर विकास समिति के अध्यक्ष महावीर सिंह तंवर की अध्यक्षता में श्री ठाकुर जी मंदिर में किया गया। जिसमें कई प्रस्ताव पारित किये गये।

जिला अभिभाषक संघ के अध्यक्ष एड. उदयसिंह तंवर ने कहा कि महाभारतकालीन इस ऐतिहासिक मंदिर में अनादिकाल से पूजा पाठ हो रही हैं एवं देश व प्रदेश के विभिन्न हिस्सों के लोग आस्था रखते हैं, साथ ही पूजा पाठ के लिये भी आते हैं। वर्तमान में मंदिर की पूजा पाठ कर रहे पूजारी परिवार के सदस्य अपने ओसरे (क्रम) के लिये लड़ते रहते हैं एवं आये दिन श्रद्धालूओं के साथ दुर्व्यवहार भी करते हैं। जिससे पूजा पाठ में व्यवधान भी पैदा होता हैं। विगत 07 अगस्त को भी पूजारी परिवार के लोग आपस में लड़ने लग गये एवं श्रद्धालूओं के साथ दुर्व्यवहार किया। मौके पर पहुंची सरूण्ड थाना पुलिस ने कुछ लोगों को शांतिभंग में गिरफ्तार भी कर लिया। जिससे नियमित पूजा नहीं हो पाई। साथ ही मंदिर की भूमि व सम्पत्ति खुर्द बुर्द करने के प्रकरण भी सामने आ रहे हैं। मंदिर में नियमित पूजा ना होने एवं आपसी विवाद के प्रकरण से ग्रामीणों व श्रद्धालूओं में भारी आक्रोश हैं एवं उनकी भावनायें भी आहत हो रही हैं। इसको लेकर ग्रामीणों ने एक स्वर में मंदिर को राज्य सरकार के श्री देवस्थान विभाग के अधीन किये जाने का निर्णय लिया। साथ ही समस्त प्रक्रिया पूर्ण होने तक पूजा की वैकल्पिक व्यवस्था कर सर्वसम्मति से नये पण्डित का चयन करने का निर्णय भी लिया गया एवं पूजारी परिवार को निश्कासित कर नये पण्डित को मासिक वेतन पर रखने का निर्णय भी लिया गया। मंदिर का रख रखाव व आय-व्यय मंदिर कमेटी के अधीन रहेगा। नये पण्डित द्वारा किसी भी प्रकार की पूजा सम्बंधी गड़बड़ी किये जाने पर कमेटी नया पूजारी भी लगायेगी। इस सम्बंध में ग्रामीण सोमवार को जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी समेत उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन भी सौंपेगें। बैठक में रेवत सिंह, अमरसिंह, महेन्द्र सिंह, देशराज सिंह, सूबेसिंह, सुरेश सिंह, राजेन्द्र सिंह, सुभाष चंद शर्मा, प्रकाश चंद जांगिड़, देवा कुमावत, राजेन्द्र आर्य, पवन सिंह, जितेन्द्र सिंह, कुलदीप शर्मा, विक्रम, सुशील समेत अन्य ग्रामीण मौजूद रहें।

बैठक आयोजित

तारानगर। भाजपा कार्यालय में तारानगर शहर मण्डल अध्यक्ष एडवोकेट अनुप खंडेलवाल की अध्यक्षता व जिला सयोंजक भास्कर शर्मा के मुख्यतिथ्य में कस्बे के भाजपा कार्यालय में हर घर तिरंगा अभियान व विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस की कार्यशाला की बैठक आयोजित हुई संपन्न हुई जिसमें पूर्व विधानसभा प्रत्याशी एवं भाजपा नेता राकेश जांगीड़, विधानसभा संयोजक अजीतसिंह राठौड़, जमरदीन तेली, कैप्टन कल्याणसिंह, मातुसिंह राठौड़, एडवोकेट अनुप खंडेलवाल आदि वक्ताओं ने भारत व पाकिस्तान के विभाजन के समय हुए नरसंहार व विभाजन की त्रासदी में प्रभावित हुए लोगों को याद किया व विभाजन की घटना को स्मृति दिवस में मनाने का निर्णय लिया जिसके तहत 10 अगस्त से 14 अगस्त तक मंडल स्तर पर हर घर तिरंगा अभियान चलाया जायेगा और 14 अगस्त को तारानगर शहर में मण्डल स्तर पर होने वाली तिरंगा यात्रा के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में जयपाल सिंह, विशाल शर्मा, हरि इंदौरिया, चुन्नीलाल सैनी, सुशील सरावगी, साबीर हुसैन आदि मौजूद थे।

जिला स्तरीय तिरंगा यात्रा रैली 13 को

कोटा, (निसं)। भारतीय जनता पार्टी के हर घर तिरंगा कार्यक्रम की तैयारी को लेकर भाजपा जिलाध्यक्ष राकेश जैन की अध्यक्षता में जी.एम.ए. सभागार, जी.एम.ए. प्लाजा में भाजपा कोटा शहर की बैठक सम्पन्न हुई।

जिलाध्यक्ष राकेश जैन ने बताया की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से शुरू हुआ 'हर घर तिरंगा' अभियान आज एक जनआंदोलन का रूप ले चुका है। यह महज एक अभियान नहीं, बल्कि देशभक्ति की उस भावना का उत्सव है जो हर नागरिक के हृदय में समाई हुई है। राष्ट्रीय पर्व की तरह यह अभियान पूरे देश को एक सूत्र में बाँधता है और भारतीयता का गौरवशाली परिचय देता है। आगामी 11 से 15 अगस्त तक कार्यक्रम को लेकर आज सभी मण्डलों को तिरंगा झण्डो का वितरण किया गया गया। 13 अगस्त को पूर्व मंत्री प्रभु लाल सैनी के मुख्य आतिथ्य में जिला स्तरीय भव्य तिरंगा यात्रा रैली का आयोजन किया जाएगा। कोटा उत्तर विधानसभा के पांचो मण्डलों से भाजपा कार्यकर्ता एवं आमजन विधानसभा संयोजक रितेश चित्तौड़ा के सानिध्य में तिरंगा यात्रा रैली के माध्यम से स्वामी विवेकानंद चौराहा नयापुरा पर एकत्रित होगे, कोटा दक्षिण विधानसभा के पांचो मण्डल व गणेश नगर मण्डल से भाजपा कार्यकर्ता व आमजन विधानसभा संयोजक जगदीश जिंदल के सानिध्य में तिरंगा यात्रा रैली के माध्यस से चौपाटी गुमानपुरा पर एकत्रित होगे, इसी तरह लाड़पुरा में तीनों मण्डलों से भाजपा कार्यकर्ता एवं आमजन विधानसभा संयोजक राजेश शर्मा के सानिध्य में तिरंगा यात्रा रैली के माध्यम से बोरखेड़ा चौराहा पर एकत्रित होकर, तीनो विधानसभा के निवासियों को सहभागिता में तिरंगा यात्रा रैली शाम 5 बजे शहीद स्मारक पर त्रिवेणी संगम के माध्यम से रैली के रूप में आएगी जिसका समापन भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा पुष्पांजलि कर अमर शहीद सैनिकों को याद करते हुए किया जायेगा।

हर घर तिरंगा कार्यक्रम के जिला संयोजक जगदीश जिंदल, रितेश चित्तौड़ा व राजेश शर्मा ने कार्यक्रम को लेकर विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि मण्डल स्तर पर कार्यक्रम के सफल संचालन एवं जिलास्तरीय तिरंगा रैली की तैयारियों को लेकर तैयारी बैठके कर रूपरेखा तैयार की जा रही है। 11-12 अगस्त को घरों और प्रतिष्ठानों पर तिरंगा झण्डे लगाने हेतु तिरंगे झण्डों का वितरण किया जा रहा हे एव बूथ स्तर तक तिरंगा रैलियों का आयोजन होगा। तैयारी बैठक में प्रदेश व जिला पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि व हर घर तिरंगा यात्रा रैली के जिला व मण्डल संयोजक व सहसंयोजक सहित कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

बैठक में आपराधिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने पर हुई चर्चा

फुलेरा। स्थानीय जीआरपी थाने पर रविवार को शाम 5 बजे सीएलजी सदस्यों की बैठक थानाधिकारी गुलजारी लाल की अध्यक्षता मे आयोजित हुई।। बैठक मे रेल यात्रियों के साथ घटित हो रही चोरीयो पर अंकुश लगाने पर चर्चा हुई।

बैठक में रेलगाडीयो में सफर कर रहे यात्रीयो को सफर के दौरान सतर्कता बरतने ओर सधिंग्ध व्यक्तीयो पर नजर रखने सहित खाने-पीने की वस्तुओ से परहेज रखने की नसीहत दी गई। जीआरपी एएसआई भजना राम ने बताया कि ट्रेनो में यात्रा कर रहे यात्रीयो को अपने सामान की सुरक्षा स्वयं को करनी होगी।

■ बैठक में रेलगाडीयो में सफर कर रहे यात्रीयो को सफर के दौरान सतर्कता बरतने ओर सधिंग्ध व्यक्तीयो पर नजर रखने सहित खाने-पीने की वस्तुओ से परहेज रखने की नसीहत दी गई।

जीआरपी थाने पर सीएलजी सदस्यों की बैठक आयोजित हुई।

यात्री यात्रा के दौरान यदि कोई संदिग्ध व्यक्ति नजर आये तो तुरन्त नजदीकी पुलिस थाना व यात्रा के दौरान गाडी में चल रहे सुरक्षा बल व टीटी को सुचित करे। साथ ही उन्होने बताया कि आगामी 15 अगस्त को असामाजिक तत्व माहोल बिगाडने का प्रयास कर सकते है तथा त्योहारों पर भीड का फायदा उठा कर चोरी जैसी घटना घटित कर सकते है, ऐसे तत्वों की जीआरपी, आरपीएफ व सिविल थाने मे तुरन्त सूचना देनी चाहिए। बैठक में साईबर अपराधिक गतिविधियो पर लगाम हेतु अनजान नम्बर से आयी व लिंक नही दबाए। यदि ऐसी घटना के शिकार होने पर तुरन्त 1930 नम्बर पर सुचना देनी चाहिए। बैठक में रेलवे सुरक्षा बल के हेड कास्टेबल सुखवीर सिंह, सेवानिवृत रेल कर्मचारी श्यामलाल सैनी, अविनाश सिंह, करन सिंह सहित अन्य सदस्य मौजूद थे।

सार-समाचार

एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम आयोजित

टोंक। उनियारा मुख्यालय स्थित श्री कामधेनु गोपाल गौशाला में सरकार की महत्वाकांक्षी योजना हरियालो राजस्थान के अंतर्गत पौध रोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि निशा सिंह किन्नर रही, जिसको माल्यार्पण व शाल ओड़ाकर प्रतीक चिन्ह भेट पर स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने कहा कि गौ सेवार्थ कार्य करना हम सब की जिम्मेदारी है, लेकिन वर्तमान समय में गाय कोई भी व्यक्ति नहीं पालना चाहता आने वाले समय में हम सबको मिलकर गौ माता का पालन करना चाहिए, हम सबकी जिम्मेदारी बनती है कि सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण की इस मुहिम में अपना योगदान दे और एक पेड मां के नाम जरूर लगाए। इस दौरान गौशाला में 11 छायादार पेड लगाए गए तथा आने वाले समय में गौशाला में निरंतर पेड़ लगाते रहेंगे।

सफाई अभियान चलाया

रतनगढ़। रतनगढ में सरदारशहर की ओर जाने वाली पुरानी रेलवे लाइन के किनारे उगे झाड़-किंकर की सफाई शुरू की गई है। वार्ड संख्या 28 के पार्षद नंदकिशोर भार्गव के नेतृत्व एवं रेल कर्मचारी की उपस्थिति में सफाई अभियान चलाया गया, जिसमें जेसीबी की मदद से झाड़-किंकर को काटा गया है। पिछले कई दिनों से इस इलाके में घने किंकर व घास थी, जिससे कारण गंदगी का आलम बना हुआ था। साथ ही स्तनधारी जीव जंतुओं का खतरा भी मंडरा रहा था। इस क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों ने पार्षद नंदकिशोर भार्गव उक्त समस्या बयां की, जिस पर उन्होंने रेलवे से संपर्क कर सफाई के लिए अनुमति मांगी। अनुमति मिलते ही उन्होंने नगरपालिका स्तर पर जेसीबी लगवाकर पूरे क्षेत्र की सफाई करवाई है।

भजन संध्या का आयोजन

रतनगढ़। रेलवे स्टेशन के पास स्थित महामंगलेश्वर शिवालय में श्रावण माह के समापन पर शनिवार की रात धार्मिक आयोजन हुए। सुबह से ही शिवालय में श्रद्धालुओं का आवागमन शुरू हो गया। रूद्राभिषेक तथा शाम को भगवान शंकर का श्रृंगार कर सामुहिक आरती का आयोजन हुआ। आरती के पश्चात भजन संध्या का आयोजन भी किया गया। गायक कलाकार अरविंद इंदौरिया की गणेश वंदना से शुरू हुई भजन संध्या में गायक कलाकार छोगसिंह, संतोष राजस्थानी, श्याम नागौरी की टीम ने भजनों की प्रस्तुतियां दी। पंडित लीलाधर चौमाल, विकास चौमाल,ने आगंतुकों का आभार प्रकट किया। देर रात तक चले आयोजन में एडवोकेट बजरंग गुर्जर, पार्षद नंदकिशोर भार्गव, पंकज हर्षवाल,ललित,दयाल सिंधी, शंकर,विजयकुमार कोका, राधाकृष्ण सुईवाल, राजकुमार सैनी, कैलाश सैनी, अशोक दर्जी, संदीप विकास चौमाल, जुगलकिशोर चौमाल, गोपीकिशन चौमाल, लीलाधर दर्जी सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

मास्टर प्लान 2041 के विरोध में सभा

सीकर। सीकर में मास्टर प्लान 2041 के विरोध में आज कृषि उपज मंडी में सभा हुई। संघर्ष समिति के बैनर तले आयोजित इस सभा में पीसीसी चीफ गोविंद सिंह डोटासरा, सीकर सांसद अमराराम,सीकर विधायक राजेंद्र पारीक सहित कई जनप्रतिनिधि और लोग शामिल हुए। सभा में सर्वसम्मति से निर्णय किया गया कि मास्टर प्लान 2041 के विरोध में सीकर 16 अगस्त को बंद रखा जाएगा। सभा को संबोधित करते हुए डोटासरा ने कहा कि मैं तो एक किसान का,मास्टर का बेटा हूं मुझ पर बहुत आरोप लगे हैं। कोई छोटे-मोटे आरोप नहीं लगे हैं। बेटे को नौकरी दिला दी,बहू को नौकरी दिला दी,पेपर लीक किए। ईडी आई और इनकम टैक्स भी आई,क्या पूंछ उपाड़ लिया गोविंद सिंह डोटासरा का। मैं कहना चाहता हूं चाहे पेपर माफिया हो, चाहे कोई दूसरे माफिया हो जिसने बेईमानी की है। अगर तुम्हारा गुरुपीर सच्चा है,तुम में दम है और ताकत है तो उसको सलाखों के पीछे करो।डोटासरा ने कहा कि 2031 का मास्टर प्लान हमारे यहां पर लागू है तो फिर 2041 का मास्टर प्लान क्यों होना चाहिए। डोटासरा ने कहा कि सभी साथ मिलकर मास्टर प्लान के खिलाफ लड़ाई लड़ेंगे तो जीत की संभावना बढ़ेगी। लेकिन यह कहना कि डोटासरा ने यह कर दिया,अमराराम ने यह कर दिया,पारीक ने यह कर दिया कहना गलत है। आरोप कोई भी लगा सकता है। लेकिन जब कोई एक अंगुली दूसरे की तरफ करते हैं तो तीन अंगुली खुद की तरफ होती है। 2 साल से हम मीडिया में सुन रहे हैं कि पेपर माफिया और मगरमच्छों को जेल में करेंगे। करो ना कौन मना कर रहा है। डोटासरा ने कहा कि मैं दिल्ली में भी कहता हूं और यहां भी कॉलर ऊंची करके कहता हूं जिंदगी में कभी 1 रुपए की बेईमानी नहीं की। जिस दिन 1 रुपए की भी बेईमानी साबित हो जाती है तो राजनीति की बात करना छोड़ दूँगा। डोटासरा ने कहा कि मास्टर प्लान के खिलाफ इस लड़ाई में हम सभी साथ हैं। जब भी संघर्ष समिति को कांठोस पार्टी और गोविंद सिंह डोटासरा की आवश्यकता हो तो सब कंधे से कंधा मिलाकर साथ खड़े हैं।

तिरंगा रैली निकाली

पाटन। आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय भारत सरकार एवं स्वायत शासन विभाग राजस्थान के निर्देशानुसार स्वतंत्रता का उत्सव, स्वच्छता के संग थीम पर नगरपालिका नीमकाथाना द्वारा हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता अभियान के तहत देशप्रेम एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिये शहर के सार्वजनिक स्थान, सरकारी भवनों, स्कूल की दीवारों पर पेंटिंग और पर्यावरण अनुकूल होर्डिंग के साथ शहर को तिरंगे के रंग में रंगा जा रहा हैं। शहर के लोगो को स्वच्छता का संदेश देते हुए महिलाओं द्वारा तिरंगा रैली निकाली गयी। रैली में तिरंगा लहराते हुए देशप्रेम के साथ ही स्वच्छता के प्रति अपना योगदान देने का संदेश के साथ ही हर घर स्वच्छता, गीला और सूखा कचरा अलग करने, आस पड़ोस को स्वच्छ रखने के प्रति लोगो को जागरूकता का संदेश दिया। पालिका विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियों के माध्यम से शहर को स्वच्छ बनाने के प्रति जागरूकता की जा रही हैं। नगर पालिका अधिशाषी अधिकारी अभिषेक सिंह ने बताया कि विशेष अभियान चलाकर निकाय स्तर पर शहर को स्वच्छ रखने का हर संभव प्रयास किया जायेगा। स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) के एमआईएस अभियंता ने हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता के विशेष अभियान की जानकारी देकर बताया की पालिका द्वारा समय समय पर निदेशालय के निर्देशानुसार जागरूकता के विभिन्न कार्यक्रम एवं स्वच्छता गतिविधियां की जा रही हैं।

स्नेह मिलन समारोह सम्पन्न

पाटन। विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य में आदिवासी मीना सेवा समिति, पाटन द्वारा भव्य प्रतिभा सम्मान एवं स्नेह मिलन समारोह का आयोजन रविवार को पाटन कोटपूतली रोड स्थित मदन मोहन मैरिज गार्डन में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति अध्यक्ष सुवालाल मीणा ने की।समारोह की शुरुआत समाज के वरिष्ठ गणमान्य नागरिकों द्वारा भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ हुई। इसके पश्चात मंच से वक्ताओं ने समाज के युवाओं को शिक्षा, आत्मनिर्भरता और समाजहित में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथियों ने कहा कि समाज की उन्नित के लिए शिक्षा सबसे सशक्त माध्यम है। विशेष रूप से बेटियों की उच्च शिक्षा पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि "यदि बेटी शिक्षित होगी, तो दो परिवारों को शिक्षित करेगी।" साथ ही आदिवासी संस्कृति और अधिकारों की रक्षा के लिए सजग और संगठित रहने का आव्हान किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2022 से 2025 तक कक्षा 10वीं व 12वीं में 80 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं, में चयनित विद्यार्थियों, विभिन्न राजकीय सेवाओं में चयनित प्रतिभाओं, सेवानिवृत्त कर्मचारियों, भामाशाहों और समाजहित में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कुल 107 विशिष्ट जनों को माल्यार्पण कर, साफा पहनाकर और स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

रक्षाबंधन पर सौंपी पासबुक

झुंझुनूं। लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट झुंझुनू ने रक्षाबंधन के अवसर पर 11 कन्याओं के लिए सुकन्या समृद्धि योजना के तहत खाते खुलवाए। झुंझुनूं प्रभारी मनोज कुमार गनोलिया ने बताया कि लोक सेवा ज्ञान मंदिर ट्रस्ट झुंझुनूं ने रक्षाबंधन के अवसर पर पिछले पांच सालों से एक सराहनीय पहल की है।

संक्षिप्त

तिरंगा यात्रा निकाली

टोंक। भारतीय जनता पार्टी टोंक द्वारा रविवार को तिरंगा यात्रा मेहंदवास मंडल द्वारा हमीरपुर खेड़ा से सांखना तक निकाली गई, इस दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं व ग्रामीणों ने हाथ में तिरंगा झंडा लेकर मोटरसाइकिल पर तिरंगा रैली निकाली।इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान ने कहा- आमजन तिरंगा यात्रा को लेकर उत्साहित है, यह तिरंगा यात्रा हर कार्यकर्ता के लिए गर्व और सेवा का अवसर है। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी की सरकार में आतंकियों को किसी भी हाल में बख्शा नहीं जाएगा। अब आतंकी भारत की ओर देखने से भी डरेंगे। तिरंगा केवल एक झंडा नहीं, बल्कि देश की आन, बान और शान का प्रतीक है, आज देश का प्रत्येक व्यक्ति नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष नन्दलाल, जिला उपाध्यक्ष शैलेंद्र चौधरी, ममता जाटन, चरण सिंह चौधरी, मंडल महामंत्री महावीर गुर्जर, विनय सिंह, पिंटू सहित अन्य कायकर्ता उपस्थित रहे।

प्रदेशाध्यक्ष के लिए मतदान सम्पन्न

टोंक। अखिल भारतीय विजयवर्गीय वैश्य महासभा के प्रदेशाध्यक्ष पद के लिए रविवार को लोकतांत्रिक तरीके से 70.80 प्रतिशत मतदान सम्पन्न हुआ, जिसमें सबसे अधिक टोंक में तथा सबसे कम मतदान देवली में हुआ। सभा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी कृष्ण गोपाल विजयवर्गीय एवं सहायक चुनाव अधिकारी नवरतन विजयवर्गीय ने बताया कि प्रदेश के अन्तर्गत सवाईमाधोपुर, टोंक, निवाई, मालपुरा, देवली एवं निवाई में सुबह 8 से सांय 5 बजे तक मतदान हुआ, जिसमें कुल 3302 मतों में से 2 हजार 338 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मतदान समाप्ति के उपरान्त सभी मतपेटियों को सुरक्षा के साथ मालपुरा में बनाये गये मतगणना स्थल पहुंचाया गया, जहां आवश्यक कार्यवाही के उपरान्त चुनाव अधिकारियों की देखरेख में मतगणना की जायेगी। इस दौरान प्रदेशाध्यक्ष पद हेतु टोंक निवासी रविप्रकाश विजयवर्गीय एवं बलदेव विजयवर्गीय के के बीच मुकाबला है।

विजय सैन बने संगठन सचिव

टोंक। नारायणी सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील गहलोत, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव जितेंद्र जीत सा सैन, प्रधान महासचिव राजेंद्र सैन बगड़ी व प्रदेशाध्यक्ष ओमप्रकाश सेन की सहमति से टोंक निवासी विजय सैन राठौड़ को प्रदेश संगठन सचिव मनोनीत किया है तथा उनको पद व गोपनीयता की शपथ दिलाकर संगठन हित मे समाज सेवा सहित कार्य करने के लिए निर्देश दिए गए है। विजय सैन को संगठन सचिव बनने पर पर समाज के गणमान्यजनो ने बधाई दी है।

रामायण पाठ का समापन

राजगढ़। धार्मिक आस्था के पर्यटक स्थल झरना धाम पर संपूर्ण सावन माह में संचालित रामायण पाठ का समापन हुआ। श्रद्धा एवं भक्ति से ओतप्रोत वातावरण में महा आरती एवं हवन यज्ञ के साथ कार्यक्रम का बजरंगबली एवं महादेव के जयकारे के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। धार्मिक आस्था के केंद्र झरना धाम के कमल दास महाराज ने बताया कि सावन माह में रामायण पठन कार्यक्रम विधि विधान के साथ आयोजित किया गया। इस आयोजन में समाजसेवी एवं धर्म प्रेमी लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। रविवार को विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। इस आयोजन में सैकड़ो की संख्या में श्रद्धालु महिला पुरुषों ने प्रसाद ठाहण का धर्म लाभ कमाया।

भाजपा कार्यकर्ताओं की बैठक

कोटपूतली। स्वंतत्रता दिवस के उपलक्ष्य में मंगलवार 12 अगस्त को क्षेत्र में विशाल व भव्य तिरंगा रैली निकाली जायेगी। इसको लेकर रविवार को भाजपा कार्यालय पर भाजपा नगर मण्डल पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विशाल व भव्य तिरंगा रैली के आयोजन को लेकर जिम्मेदारियों का वितरण किया गया। तिरंगा रैली 12 अगस्त मंगलवार को सायं 05 बजे कस्बे के बानसूर रोड़ स्थित कृषि उपज मण्डी परिसर से प्रारम्भ होकर कस्बे के विभिन्न मुख्य मार्गो से होते हुये नगर परिषद पार्क में पहुंचेगी। इस दौरान नगर मंडल अध्यक्ष अरुण सैनी, उपाध्यक्ष जितेंद्र जोशी, अजय सोनी, विरेन्द्र सैनी, विमल, महामंत्री रमेश गुर्जर, कोषाध्यक्ष एड. अभिषेक मोरीजावाला, नगर मंत्री अरविन्द, संदीप सैनी आदि मौजूद रहे।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत पर्यटन स्थलों पर आयोजित हुई तिरंगा गतिविधियां

- -स्वाधीनता दिवस की वर्षगांठ पर जिले में 15 अगस्त तक 'हर घर तिरंगा अभियान' के अंतर्गत आयोजित होंगी विभिन्न गतिविधियां

अलवर में पर्यटक तिरंगे के सम्मान में गतिविधियों में बढ़ चढ़कर सहभागिता निभा रहे।

अलवर। राज्य सरकार के निर्देशानुसार स्वाधीनता दिवस की वर्षगांठ पर जिले में 15 अगस्त तक जिला मुख्यालय, उपखण्ड व पंचायत स्तर पर 'हर घर तिरंगा अभियान' कार्यक्रम का आयोजन कर विभिन्न गतिविधियां आयोजित होंगी। आयोजित कार्यक्रमों के सफल संचालन एवं क्रियान्वयन हेतु जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नोडल अधिकारी रहेंगे।

जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि 11 अगस्त तक जिला, उपखण्ड व ग्राम स्तर के सार्वजनिक स्थान, जल संरचनाएं, जल और सेनिटेशन सूचनाएं, नाली सफाई, ठो-वाटर प्रबंधन, पाइपलाइन से वाटर लिकेज को बंद करना, सीएससी, आरआरसी व अन्य परिसम्पत्तियों की सुरक्षा, श्रमदान ग्राम के रास्तों व सार्वजनिक स्थानों पर एवं प्लास्टिक वेस्ट कलेक्शन तथा इसके प्रबंधन संबंधी कार्य कराए जाएंगे तथा 11 अगस्त को जिला स्तर पर कम्पनी गार्डन में सफाई कार्य आयोजित कर श्रमदान किया जाएगा।

इसी प्रकार 12 अगस्त को जिले के ग्रामों में जल जीवन मिशन की संरचनाओं की सफाई और सौन्दर्यकरण के कार्य, जिला, उपखण्ड व ठााम स्तर पर कचरा प्रबंधन तकनीक (पृथकीकरण, कम्पोंटिग), शौचालय रख-रखाव, जल संरक्षण, भूमिगत जल संठाहण, जलस्त्रोत संरक्षण, सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को हतोसाहित, व्यक्तिगत शौचालय की क्षेत्रवासियों द्वारा सफाई तथा जल एवं स्वच्छता संबंधी सुविधाओं को देशभक्ति थीम से पेन्ट व सजावट के कार्य कराए जाएंगे। वहीं जिला मुख्यालय पर कम्पनी बाग में एवं उपखण्ड, पंचायत व ग्राम स्तर पर हर घर तिरंगा कॉन्सर्ट कार्यक्रम का आयोजन होगा।

उन्होंने बताया कि आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में13 अगस्त को अलवर शहर में होप सर्कस से नंगली सर्किल तक प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक तिरंगा यात्रा का आयोजन, मिनी सचिवालय से शहीद स्मारक कम्पनी बाग तक दोपहर 1 बजे कार व बाइक द्वारा हर घर तिरंगा रैली का आयोजन होगा। वहीं जिला स्तर पर होप सर्कस, मिनी सचिवालय, मूसी महारानी की छतरी, नंगली सर्किल, शहीद स्मारक, सागर जलाशय पर तथा उपखण्ड, पंचायत व ठााम स्तर पर हर तिरंगा रोशनी कार्यक्रम का आयोजन, जिले के समस्त उपखण्ड, पंचायत समिति, नगरीय निकायों व ठााम स्तर के सार्वजनिक स्थानों व विद्यालयों में प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक तिरंगा ध्वज हाथ में लेकर तिरंगा यात्रा का आयोजन होगा। वहीं समस्त उपखण्ड, पंचायत समिति व नगरीय निकायों के सार्वजनिक स्थानों पर दोपहर 1 बजे से बाइक, कार व टैऊक्टर द्वारा हर घर तिरंगा रैली का आयोजन होगा।

13 अगस्त से 15 अगस्त तक जिले के समस्त कार्यालयों, निजी भवनों, सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराना एवं तिरंगा कैनवास व समस्त निजी व सरकारी संस्थानों पर डेकोरेशन होगी तथा जिले के समस्त औद्योगिक इकाइयों में हर घर तिरंगा सेल्फी, रैली तथा कैनवास कार्यक्रम, जिले के विद्यालयों व आंगनबाडी केंद्रों पर प्रदर्शनी व डेकोरेशन होगी।

इसी प्रकार 14 अगस्त को जिला, उपखण्ड व ग्राम पंचायत स्तर पर हर घर तिरंगा कार्यक्रम के अंतर्गत सांय 7 बजे मेले एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होगा जिसमें स्वतंत्रता सैनिक व सुरक्षा बलों के सेवानिवृत्त कार्मिक, शहीदों के परिवारों को आमंत्रित किया जाकर उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाएगा तथा जिला मुख्यालय पर मिनी सचिवालय से प्रताप ऑडिटोरियम तक रंगोली कार्यक्रम व रैली का आयोजन तथा जिले के समस्त विद्यालयों, आंगनबाडी में कार्यकर्ता, सहयोगिनी, सहायिका द्वारा रंगोली कार्यक्रम एवं तिरंगा रैली का आयोजन होगा तथा जिला मुख्यालय पर प्रताप ऑडिटोरियम में डेकोरेशन कार्य, मेले एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होगा।

गाड़ी आगे पीछे करने की बात को लेकर विवाद

गाड़ी आगे पीछे करने की बात को लेकर विवाद में एक घायल हुआ।

कोटपूतली,। कस्बे के बानसूर रोड़ पर निकटवर्ती ग्राम बुटेरी स्थित टोल पर रविवार दोपहर गाड़ी आगे पीछे करने की बात को लेकर दो जनों में विवाद इतना बढ़ गया कि वे आपस में ही उलझ पड़े। इतने में आवेशित होकर एक पक्ष के व्यक्ति ने दूसरे पक्ष के व्यक्ति पर चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल के ट्रौमा सैंटर नर्सिंग अधिकारी श्रीराम सराधना ने बताया कि चाकू के जानलेवा हमले में गंभीर रूप से घायल बानसूर के ग्राम बासना निवासी मुकेश पुत्र रामेश्वर जाट का अस्पताल में उपचार जारी हैं।

गाजे-बाजे के साथ रामदेवरा पदयात्रा हुई रवाना

- पदयात्रा में 250 से ज्यादा श्रद्धालु शामिल हुए, भजन संध्या का हुआ आयोजन किया

टोंक। रक्षाबंधन के दूसरे दिन रविवार को श्रीबाबा रामदेव (रामदेवरा) के लिए इस वर्ष भी 41वीं पदयात्रा बाबा रामदेव के जयघोष के बीच रामकृष्ण मंदिर से पूजा-अर्चना व ध्वज पताका के साथ रवाना हुई।

इस दौरान श्रीराम सेवा मंडल द्वारा रामकृष्ण मंदिर, चंदन चौक, नोशे मियां का पुल, पटेलों की गुवाड़ी बाबा रामदेव मंदिर से रवाना होकर घंटाघर कोली समाज के हनुमान मंदिर से होते हुए बनास नदी की ओर से सोहेला होते हुए रामदेवरा जाएंगे, यह यात्रा 15 दिवसीय है। हर बार की तरह लोगों ने विभिन्न जगहों पर पदयात्रियों के लिए जगह-जगह ठण्डे शर्बत एवं अल्पाहार की व्यवस्थाएं की थी, इस ऐतिहासिक पदयात्रा की खासियत यह थी कि इसमें न जाति न धर्म बल्कि सभी बाबा रामदेव के यात्रियों के सैलाब में शामिल थे, इससे पूर्व शनिवार रात को भजन संध्या का आयोजन किया गया। पदयात्रा में यात्री 600 किलोमीटर की दूरी तय कर रामदेवरा पहुंचेंगे, बाद में फलोदी चौराहा होकर रामदेवरा (जैसलमेर) स्थित लोक देवता बाबा रामदेव की समाधी के दर्शन कर प्रदेश में अमन-चेन, शांति एवं सद्भावना की कामना करेंगी।

गाजे-बाजे के साथ रामदेवरा पदयात्रा रवाना हुई।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने की जनसुनवाई

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने जनसुनवाई की।

अलवर। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने रविवार को मोती डूंगरी स्थित कार्यालय पर जनसुनवाई की, इस दौरान बड़ी संख्या में अपनी परिवेदनाएं लेकर पहुंचे लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए उन्हें आश्वस्त किया।

जूली बोले भारतीय जनता पार्टी के राज में अलवर सहित पूरे राजस्थान की जनता में हाहाकार मचा हुआ है।उन्होंने कहा कि पानी बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए आमजन सरकारी दफ्तरों के चक्कर काट कर थक गया है। बिजली की अघोषित कटौती से न केवल किसान, व्यापारी बल्कि आमजन का जीवन पूरी तरह त्रस्त है। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार में मंत्री केवल उद्घाटन शिलान्यास में व्यस्त होकर मीडिया की सुर्खियां बटोर रहे हैं, जबकि धरातल पर जनता के लिए कोई काम नहीं किया जा रहा।उन्होंने कहा कि विश्व पटल पर अपनी विशेष पहचान बना चुके हैं सरिस्का को उजाड़ने की तैयारी इस सरकार के मंत्रियों ने की लेकिन सुप्रीम कोर्ट के दखल के बाद उनके अरमानों पर पानी सा फिरता नजर आया और अब इस बात को और हवा ना लगे इसे देखकर अब खैरथल तिजारा जिले को अब भर्तृहरि नगर नाम लेकर जनता को नया मुद्दा पकडा दिया है, ताकि उनके कारनामों पर पर्दा डाल सके। इस दौरान बड़ी संख्या में पहुंचे जूली के समर्थकों ने अमेरिका से वापस स्वदेश लौटने पर उनका स्वागत किया।

लाहोरा को मिलेगा राजीव गांधी समरसता अवार्ड

झुंझुनूं,। भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की जयंती 20 अगस्त को सदभावना दिवस पर अंतरराष्ट्रीय समरसता मंच एंव समरसता इन्टरनेशनल कांग्रेस (वीएसओ) के संयुक्त तत्वावधान में सांस्कृतिक समन्वय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

सम्मेलन में राजीव गांधी समरसता अवार्ड से प्रतिभा कैलाश कुमार लाहोरा राष्ट्रीय महामंत्री अखिल भारतीय सफाई मजदूर कांग्रेस नई दिल्ली का अभिनंदन पत्र, शॉल, साफा व स्मृति चिह्न, भेंटकर अभिनंदन किया जाएगा। अंतरराष्ट्रीय समरसता मंच के मुख्य सलाहकार प्रसिद्ध कानूनविद डॉ. कुलदीप प्रसाद शर्मा एडवोकेट राजस्थान उच्च न्यायालय ने बताया कि कैलाशकुमार लाहौरा का मुख्य द्वार पर तिलक बेज लगाकर अगवानी की जाएगी। सांस्कृतिक समन्वय सम्मेलन में प्रतिभा कैलाश कुमार लाहोरा अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। कार्यक्रम में 25 राष्ट्रों भारत के साथ-साथ नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान, अल्जीरिया, एंगोला, ऑस्ट्रिया, क्रोएटिया, फिनलैंड, तुनिशियां, जर्मनी, ईराक, इजराईल, मैकडोनिया, मोरक्को, नीदरलैंड, नाईजीरिया, नार्वेजियन, रोमानिया, रायल डेनिश, श्रीलंका, मालदीव, किर्गिजस्तान, फिलस्तीन, फिजी के सानिध्य में मंच संरक्षक नेपाल सरकार के प्रथम उपराष्ट्रपति न्यामूर्ति परमानंद झा के हस्ताक्षर शुद्धा अभिनंदन पत्र प्रतिभा कैलाशकुमार लाहौरा को भेंट किया जाएगा। मानवीय एकता एवं विश्व बंधुत्व की भावना से सांस्कृतिक समन्वय के माध्यम से मित्रवत रूप से पारिस्परिक संबंध, वसुधैव कुटुम्बकम को साकार करने, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, ग्लोबल विल्लेज को मूर्त रूप देने के लिए काठमांडो नेपाल में आयोजित सार्क सदस्यो का सांस्कृतिक समन्वय सम्मेलन 28 से 30 दिसंबर का आमंत्रण एडवोकेट नरेंद्र कुमार पांडे बोर्ड सलाहकार द्वारा दिया जाएगा।

गर्ल्स हॉस्टल में प्रवेश के आवेदन 15 अगस्त से

उदयपुर। जनजाति विकास विभाग के अंतर्गत टीआरआई में संचालित जनजाति गर्ल्स हॉस्टल में प्रवेश के लिए 15 अगस्त से आनलाइन आवेदन शुरू होंगे।

टीएडी उपायुक्त रागिनी डामोर ने बताया कि हॉस्टल में प्रवेश के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग,कर्मचारी चयन बोर्ड और राज्य सरकार द्वारा आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाली जनजाती छात्राएं पात्र होंगी।उन्होंने बताया कि हॉस्टल में छात्राओं का चयन कक्षा 12 वीं और स्नातक के अंकों के आधार पर किया जाएगा। चयनित छात्राओं की मेरिट सूची जारी की जाएगी। जिन्हें प्रवेश दिया जाएगा। यहां नि:शुल्क आवास और भोजन की सुविधा मिलेगी। आवेदन करते वक्त जरूरी डॉक्यूमेंट्स और योग्यता की जानकारी अपलोड करनी होगी। प्रवेश से संबंधित अन्य जानकारी विभागीय पोर्टल पर उपलब्ध है।

तिरंगा देश की आत्मा, पहचान व गौरव का प्रतीक : के.के. गुप्ता

के.के. गुप्ता

उदयपुर। भाजपा नेता और स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के राजस्थान संयोजक के के गुप्ता ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हर घर तिरंगा अभियान, ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि तिरंगा हर भारतीय के दिल में बसता है। यह अभियान बिना किसी भेदभाव के हर घर में तिरंगे को फहराने के लिए प्रेरित करता है, जो एक स्वच्छ और एकजुट भारत की पहचान है। उन्होंने लोगों से अपील की कि हर घर तिरंगा अभियान को सफल बनाएं और अपने राष्ट्रीय ध्वज की आन-बान-शान को हमेशा ऊँचा रखें।

यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम इस प्रतीक को सम्मान दें और इसके मूल्यों को अपने जीवन में उतारें। गुप्ता ने कहा कि भारत का राष्ट्रीय ध्वज, तिरंगा, सिर्फ एक कपडा नहीं, बल्कि हमारे देश की आत्मा, पहचान और गौरव का प्रतीक है। यह केवल स्वतंत्रता का चिह्न नहीं, अपितु राष्ट्र की आन-बान-शान भी है। तिरंगा देश को समृद्ध और मजबूत बनाने की हमारी प्रतिबद्धता का भी प्रमाण है। यह हमारा सुरक्षा कवच है। उन्होंने कहा कि हाल के वैश्विक घटनाक्रमों में तिरंगे की शक्ति स्पष्ट रूप से देखी गई है। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान, लगभग 40 हजार भारतीय छात्र अपने देश के झंडे को लेकर सुरक्षित अपने वतन लौट आए। यह घटना दर्शाती है कि कैसे हमारा ध्वज विपरीत परिस्थितियों में भी एक सुरक्षा कवच का काम करता है, जो विदेशों में हमारे नागरिकों के लिए पहचान और सुरक्षा का प्रतीक बन जाता है।

पाकिस्तान के साथ हुए युद्धों में भी तिरंगा हमारी सेना के अदम्य साहस और पाकिस्तान को करारा जवाब देने की हमारी क्षमता का गवाह रहा है। यह हमें उन वीर जवानों की याद दिलाता है जिन्होंने देश की अखंडता और संप्रभुता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

देश के भीतर, तिरंगा कई ऐतिहासिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह द्वारा धारा 370 को हटाना और देश को आतंकवाद से मुक्त करने के प्रयासों में भी तिरंगा राष्ट्र की एकता और दृढ संकल्प का प्रतीक बना। यह निरंतर देश को समृद्ध और मजबूत बनाने की दिशा में हमारे सामूहिक प्रयासों को दर्शाता है।

तिरंगा उन अनगिनत नौजवानों का सम्मान है जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। यह उन वीर जवानों का भी सम्मान है जो आज भी हमारी सीमाओं पर डटकर देश की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हैं।

उनका बलिदान और समर्पण ही हमें एक सुरक्षित और मजबूत राष्ट्र के रूप में खडा रखता है।तिरंगा न केवल आजादी की निशानी है अपितु देश की आन बान शान भी है तिरंगा देश को समृद्ध एवं मजबूत बनाने का प्रमाण भी है।

सार-समाचार

स्नेह मिलन समारोह का आयोजन

टोंक। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय टोंक के राजयोग भवन में रक्षाबंधन स्नेह मिलन समारोह उमंग उत्साह से मनाया गया, जिसमें ब्रह्माकुमारी दीदियों ने सभी भाई-बहनों को आत्मिक स्मृति का तिलक लगाया और हाथ में रखा सूत्र बांधकर परमात्म वरदान व प्रसाद वितरित किया। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज सेवा केंद्र जयपुर प्रभारी राजयोगिनी बीके लक्ष्मी ने परमात्म स्नेह का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व की बधाई दी। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष चंद्रवीर सिंह चौहान ने कहा कि यह त्योहार हमे बहनों की रक्षा के लिए वचनबद्ध करता है, मेरा सौभाग्य है कि मैं आज ऐसे संस्थान में पहुंचा हूं जो आत्मा को परमात्मा से मिलता है। मानव को देवता बनाने का श्रेष्ठ कार्य इस संस्थान द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने कहा संयुक्त परिवार में रहकर ही सनातन संस्कृति का संरक्षण किया जा सकता है। कार्यक्रम से पूर्व में ब्रह्माकुमारीयों ने शहर के गणमान्य नागरिक सहित जिला प्रमुख, कृषि विभाग के अधिकारीयो कर्मचारीयों, कोतवाली थाना, सदर थाना, पुलिस लाइन, जिला कारागृह के अधिकारी कर्मचारी सहित बंदियों को रक्षा सूत्र बांधकर मुख मीठा करवाया, बाद में ब्रह्माकुमारी अनीता ने बनेठा पुलिस थाना के एस.एच.ओ सहित पुलिस कर्मियों को परमात्म स्मृति का तिलक लगाकर रक्षासूत्र बांधा।

कार्यकारिणी गठित

बौंली/बामनवास। राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) उप शाखा बौंली की कार्यकारिणी के चुनाव निर्वाचन अधिकारी राम प्रसाद शर्मा की देखरेख में संपन्न हुए, जिसमें अध्यक्ष पद पर पुष्पेंद्र कुमार वैष्णव पीपलवाड़ा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर विष्णु स्वामी निवासी दतवास (कुटका), उपाध्यक्ष गोविंद सहाय गिरी बौंली, मंत्री प्यार सिंह गुर्जर, महिला मंत्री सरिता दुबे बौंली, कोषाध्यक्ष कुंजीलाल मीणा बोरखेड़ा, पंचायत समिति शिक्षक कयूम खान लाखनपुर निर्वाचित किए गए हैं । प्रदेश महा समिति सदस्यों में पुष्पेंद्र कुमार वैष्णव, चंद्र प्रकाश गुर्जर, शिवचरण गुर्जर, मुकेश गुर्जर, शंकर लाल गुर्जरव जयप्रकाश गोस्वामी बनाया गया है। सदस्यों में बालेश्वर सैनी, महेंद्र शर्मा, सीताराम माली, सीताराम कापड़ी, कुंजीलाल मीणा, रामजीलाल भारती, सुंदर दास रैगर,कमलेश गुर्जर, वीरसिंह गुर्जर, सुनील वर्मा, कृष्ण गोपाल गुर्जर, मुकेश गुर्जर, जयप्रकाश गोस्वामी, समय सिंह गुर्जर, भरत लाल माली, जगदीश गुर्जर, गंगा शंकर जाट, लालाराम वर्मा, सीताराम वर्मा, किरोड़ी लाल, कैलाश चंद गुर्जर, विजेंद्र शर्मा, रघुवीर प्रजापत, राधा मोहन सिंह, जितेंद्र शर्मा, मोहम्मद आरिफ,व नरेश सेन को बनाया गया है।

12 से 14 अगस्त को निकलेगी तिरंगा यात्रा

पावटा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आव्हान पर एवं प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ के निर्देशानुसार विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड के नेतृत्व में विधानसभा क्षेत्र के मंडलों द्वारा विशाल तिरंगा यात्रा निकाली जाएगी। इसकी तैयारियां शुरू हो गई हैं। इस आयोजन में देशभक्ति गीत-संगीत की धूम रहेगी। 12 अगस्त मंगलवार को पावटा भाजपा बालाजी मंडल व प्रागपुरा मण्डल द्वारा प्रात: 9 बजे से प्रागपुरा थाने के सामने से प्रारंभ होकर रामलीला मैदान, राजपूत मोहल्ला, प्रागपुरा सर्विस लाईन होते हुए पावटा सुभाष चौक, घण्टाघर होते हुए एस के अस्पताल तक विशाल तिरंगा यात्रा का आयोजन किया जायेगा। वही बाणगंगा मण्डल द्वारा दोपहर 4 बजे से श्री माधवानंद महाराज आश्रम नवरंगपुरा भामौद मोड़ से बस स्टैंड मैड तक व 13 अगस्त बुधवार को त्रिवेणी मण्डल प्रात: 9 बजे से कानजी होटल प.स. के सामने से त्रिवेणी धाम तक व विराटनगर शहर मंडल द्वारा 14 जुलाई 2025 गुरूवार प्रात: 9 बजे से पंचायत समिति के सामने से मुख्य बाजार होते हुए बस स्टैंड बगीची पहुंच कर तिरंगा यात्रा पहुंच कर संपन्न होगी।

तिरंगा रैली का आयोजन कल

कोटपूतली। राज्य सरकार के निर्देशानुसार स्वंतत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'हर घर तिरंगा अभियान' के तहत 15 अगस्त तक जिले में विभिन्न देश भक्ति पूर्ण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी ने बताया कि कार्यक्रमों की श्रृंखला में आमजन की भागीदारी हेतु जिला मुख्यालय पर 11 अगस्त सोमवार को प्रात: 09 बजे विषाल तिरंगा रैली का आयोजन किया जायेगा। रैली राजकीय सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय से प्रारम्भ होकर शहर के मुख्य मार्गो से होते हुये राजकीय एलबीएस पीजी महाविद्यालय पहुंचेगी। उन्होंने बताया कि तिरंगा रैली में विद्यार्थियों एवं जन साधारण कि सक्रिय भागीदारी रहेगी, प्रतिभागी अपने साथ तिरंगा भी लेकर चलेंगे। उक्त आयोजन में पुलिस और शिक्षा विभाग सहित नगर परिषद भी सहयोगी के रूप में शामिल होंगे। जिला कलक्टर ने बताया कि तिरंगा रैली का मुख्य उद्देश्य आमजन में तिरंगे के प्रति सम्मान और देश भक्ति की भावना को जागृत करना हैं।

विदेशी सामान की होली जलाई

उदयपुर। स्वदेशी, सुरक्षा,स्वावलंबन अभियान के अंतर्गत शंखनाद कार्यक्रम में आर के सर्कल पर रविवार को विदेशी कंपनी भारत छोडो के उदघोष के साथ स्वदेशी जागरण मंच के कार्यकर्ताओं ने विदेशी सामान की होली जलाई। इस अवसर पर मंच के प्रांत समन्वयक पुरुषोत्तम शर्मा ने बताया कि स्वदेशी जागरण मंच समय समय पर समाज जागरण के लिए ऐसे कार्यक्रम आयोजित करता है जिससे समाज में स्वदेशी सामान लेने का भाव बना रहे । इससे स्थानीय उत्पादकों को भी लाभ मिलता है । स्वदेशी जागरण मंच के क्षेत्र संयोजक सतीश आचार्य ने बताया कि वर्तमान परिपेक्ष्य में जब अमेरिका भारतीय किसानों मछुआरों आदि का रोजगार छिनने के लिए टैरिफ बढा कर दबाव बनाना चाहता है तो भारत सरकार उनके आगे न झुक कर अपना विश्व पटल पर समर्थन प्राप्त कर रही है। अमेरिका के इस टैरिफ युद्ध में भारत के साथ रूस आदि देश दे रहे हैं। भारतीय कंपनी अमूल का सहकारी कोपरेटिव होकर भी विदेशी जमीन पर स्टोर खुलना भारत की बढती अर्थव्यवस्था को बताता है। संयोजक रमेश पुरोहित ने बताया कि हमें देश की इस नई व्यवस्था में स्वदेशी को बढावा देकर मजबूत करना चाहिए। अंत में सभी को स्वदेशी संकल्प दिलाया गया।

पुस्तक का विमोचन कल

उदयपुर। अखिल भारतीय साहित्य परिषद उदयपुर एवं राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में फलासिया के लेखक मदन जोशी सार्थक की पुस्तक हार नहीं मानूंगा का लोकार्पण राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के पुस्तकालय में 12 अगस्त को होगा ।प्रियंका भट्ट ने बताया कि 12 अगस्त अपराह्न 3 बजे अकादमी परिसर के पुस्तकालय परिसर में पुस्तक का विमोचन एवं उस पर परिचर्चा होगी। फलासिया एसीबीईओ डॉ बाल गोपाल शर्मा कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे, राजस्थान साहित्य अकादमी सचिव बसंत सिंह सोलंकी मुख्य अतिथि,सुखाडयिा विवि के हिंदी के सह आचार्य डॉ आशीष सिसोदिया व साहित्यकार भूपेंद्र शर्मा विशिष्ट अतिथि होंगे। वरिष्ठ साहित्यकार आशा पाण्डेय ओझा, डॉ निर्मला शर्मा, डॉक्टर कामिनी व्यास रावल, प्रेम.एस.गुर्जर पुस्तक पर अपने पत्र और विचार प्रस्तुत करेंगे।लेखक की यह पहली पुस्तक है जिसमें प्रेरणास्पद कविताओं,कहानियां का संकलन है। पुस्तक विमोचन कार्यक्रम के पश्चात दूसरे सत्र में राष्ट्र वंदन काव्य गोष्ठी में राष्ट्र भक्ति, राष्ट्र प्रेम की कविताओं का प्रस्तुतीकरण होगा। शहर के जाने.माने कविगण अपनी कविताओं की प्रस्तुति देंगे। साहित्यकार डॉ गोपाल राजगोपाल इस सत्र की अध्यक्षता करेंगे, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ दिलीप धींग कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे तथा साहित्यकार शकुंतला पालीवाल व लक्ष्मी लाल खटीक गोष्ठी सत्र के विशिष्ट अतिथि होंगे।

कटारिया करेंगे एम्बुलेंस का लोकार्पण

उदयपुर। पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया सोमवार दोपहर साढे बारह बजे सुन्दर सिंह भंडारी राजकीय जिला चिकित्सालय अंबामाता में टेक फायरफ्लाई कंपनी की ओर से भेंट इको एम्बुलेंस का लोकार्पण करेंगे। अस्पताल अधीक्षक डॉ राहुल जैन ने बताया कि इस अवसर पर आयोजित होन वाले कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया करेंगे।

यू मिस आई हिट। केवल आप ही नहीं जीतेंगे। इस बार मैं जीता हूं। ये सब अच्छी भावना से किया गया था। – आकाशदीप

भारतीय खिलाड़ी, बेन डकेट के कंधे पर हाथ रखकर उन्होंने क्या बोला था? बताते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी ▶ **नीरज चोपड़ा**

जेवलिन थ्रो के फैंस के लिए बुरी खबर है। दरअसल, सिलेसिया डायमंड लीग में होने वाली नीरज चोपड़ा और अरशद नदीम के बीच प्रतियोगिता अब कैंसिल हो गई है। दरअसल, इन दोनों ही खिलाड़ियों का नाम प्रवेश लिस्ट में नहीं है। वर्ल्ड एथलेटिक्स ने जुलाई में कहा था कि दोनों प्रतिद्वंद्वी टीमें सिलेसिया में आमने-सामने होंगी। जो अगस्त 2024 में पेरिस ओलंपिक फाइनल के बाद उनकी पहली भिड़ंत होती। अरशद नदीम ने पेरिस ओलंपिक में 92.97 मीटर की बेहतरीन थ्रो के कारण नीरज से नंबर वन का ताज छीन लिया था।

क्या आप जानते हैं ?... एलन बॉर्डर की अगुवाई वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम ने 1989 में इंग्लैंड के खिलाफ 6 मैचों की एशेज सीरीज में 3877 रन बनाए थे।

घरेलू क्रिकेट खेलो या ले लो संन्यास... विराट-रोहित की बढ़ेगी मुश्किलें!

गांगुली ने कोहली और रोहित के वनडे करियर को जारी रखने का समर्थन किया

कोलकाता, 10 अगस्त। पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान सौरव गांगुली ने भारत के सीमित ओवरों के दिग्गज विराट कोहली और रोहित शर्मा के भविष्य को लेकर मीडिया में चल रही अटकलों पर आज टिप्पणी की। हाल की रिपोर्टों में कहा गया था कि ऑस्ट्रेलिया में आगामी वनडे सीरीज इस प्रसिद्ध जोड़ी के शानदार करियर का अंतिम अध्याय हो सकती है। हालांकि, गांगुली ने इस बात पर जोर दिया कि टीम में उनकी निरंतर उपस्थिति के बारे में निर्णय उनके प्रदर्शन के आधार पर लिया जाना चाहिए।गांगुली ने अटकलों पर योग्यता और फॉर्म के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा, कोहली और रोहित शर्मा दोनों के सीमित ओवरों के क्रिकेट में शानदार रिकॉर्ड हैं। जब तक वे उच्चतम स्तर पर अच्छा प्रदर्शन करते रहेंगे, उन्हें खेलना जारी रखना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया में 19 अक्टूबर से शुरू होने वाली यह सीरीज़ दक्षिण अफ्रीका में 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप के लिए भारत की तैयारियों की शुरुआत है, एक ऐसा टूर्नामेंट जहाँ भारत अपने दबदबे को बरकरार रखने की कोशिश करेगा। ऑस्ट्रेलिया के बाद, भारत दिसंबर में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन एकदिवसीय मैच खेलने वाला है, जिससे उसका व्यस्त अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम जारी रहेगा। गांगुली ने दोनों खिलाड़ियों के अपार अनुभव की भी प्रशंसा की, खासकर सीमित ओवरों के प्रारूपों में, और विराट कोहली के बेजोड़ एकदिवसीय रिकॉर्ड और रोहित शर्मा के महत्वपूर्ण योगदान का उल्लेख किया।

उन्होंने दोनों खिलाड़ियों को भारत की सीमित ओवरों की टीम की रीढ़ बताया। व्यस्त कार्यक्रम को स्वीकार करते हुए, गांगुली ने खिलाड़ियों के लिए अपने कार्यभार को प्रबंधित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, आईपीएल के बाद, लगातार पांच टेस्ट मैच खेलना बहुत थका देने वाला होता है, इसलिए शीर्ष प्रदर्शन बनाए रखने के लिए छोटे-छोटे ब्रेक लेना जरूरी है। भविष्य को देखते हुए, गांगुली ने टीम इंडिया की समग्र ताकत, खासकर सीमित ओवरों की क्रिकेट में, पर भरोसा जताया। उन्होंने कहा, भारत सीमित ओवरों के प्रारूपों में बेहद मजबूत है, और जहां वे लाल गेंद वाले क्रिकेट में भी दुर्जेय हैं, वहीं सीमित ओवरों के क्रिकेट में उनका दबदबा विशेष रूप से प्रभावशाली है। भारत के आगामी एशिया कप अभियान और अन्य टूर्नामेंटों पर टिप्पणी करते हुए, गांगुली ने कहा, दुबई जैसी परिस्थितियों में भारत को हराना किसी भी टीम के लिए बहुत मुश्किल होगा, और उन्होंने भारत की अनुकूलन क्षमता और संतुलित टीम पर जोर दिया।

अंत में, गांगुली ने भविष्य की प्रतिभाओं को निखारने के महत्व पर ज़ोर दिया और कोहली और रोहित जैसे वरिष्ठ खिलाड़ियों के नेतृत्व और अनुभव की सराहना की। उनकी टिप्पणियों ने भारत के क्रिकेट भविष्य के प्रति आशावाद व्यक्त किया क्योंकि टीम कौशल, दृढ़ संकल्प और निरंतर उत्कृष्टता पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रमुख अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों के लिए तैयार है।

वार्नर ने लंदन स्पिरिट को दिलाई पहली जीत

लंदन, 10 अगस्त। लंदन स्पिरिट ने शनिवार (9 अगस्त) को वेल्श फायर पर 8 रनों की कड़ी जीत के साथ मेन्स हंड्रेड में अपना खाता खोलने में कामयाबी हासिल की। टूर्नामेंट के पहले मैच में अपने खराब बल्लेबाजी प्रदर्शन के बाद, लंदन स्पिरिट ने अनुभवी डेविड वार्नर की अगुवाई में शानदार वापसी की, जिन्होंने 70 रनों पर नाबाद रहते हुए बल्लेबाजी की। वेल्श फायर के सलामी बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो भी रन चेज में नाबाद रहे और अपनी टीम द्वारा बनाए गए आधे से ज्यादा रन बनाए, लेकिन फिर भी वे लड़खड़ा गए। वार्नर पारी की शुरुआत में ही अच्छी फॉर्म में आ गए थे, लेकिन दूसरे छोर पर केन विलियमसन लड़खड़ा गए। आखिरकार उन्होंने मैदान पर छक्का जड़कर अपनी लय तोड़ी, लेकिन जोश हल के आउट होने के कारण ज़्यादा देर तक टिक नहीं पाए। पारी को आधे समय में एक बड़ा झटका तब लगा जब वार्नर और जेमी स्मिथ ने मिलकर क्रिस ग्रीन को तीन छक्के जड़कर आउट कर दिया। यह सिलसिला जारी रहा और स्मिथ ने हल की गेंद पर एक और बड़ा छक्का जड़ा, उसके बाद एक चौका जड़ा, और फिर गेंदबाज ने इस पारी का अंत कर दिया।

आरआर मेरे लिए दुनिया से बढ़कर है : संजू सैमसन

जयपुर, 10 अगस्त। राजस्थान रॉयल्स के साथ नाता तोड़ने की अफवाहों के बीच विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने कहा है कि इस आईपीएल फ्रेंचाइजी के साथ लंबे जुड़ाव ने उनकी जिंदगी और करियर बदल दिया है। हालांकि, इस बीच ऐसी अटकलें लगाई जा रही हैं कि सैमसन ने आईपीएल के नए सीजन से पहले रॉयल्स से उन्हें रिलीज करने की अपील की है।

सैमसन ने भारत के पूर्व स्पिनर आर अश्विन को उनके यूट्यूब शो पर बताया कि, आरआर मेरे लिए दुनिया से बढ़कर है। केरल के एक गांव से आया एक छोटा सा बच्चा अपनी प्रतिभा दिखाना चाहता था। और फिर राहुल द्रविड़ सर और मनोज बडाले सर ने मुझे एक मंच दिया ताकि मैं आगे बढ़ सकूं और दुनिया को दिखा संकू कि मैं किस चीज से बना हूं। उस समय उन्होंने मुझ पर पूरा भरोसा किया।

आरआर के साथ मेरा सफर वाकई शानदार रहा है और मैं ऐसी फ्रेंचाइजी का हिस्सा बनकर बहुत खुश हूं। ये मेरे लिए वाक बहुत मायने रखता है। आईपीएल 2026 से मिनी ऑक्शन नवंबर-दिसंबर में होगा। इससे पहले ट्रांसफ विंडो खुली हुई है और संजू सैमसन ही नहीं आर अश्विन भी सुर्खियों में हैं अश्विन भी चेन्नई सुपर किंग्स से अलग हो सकते हैं। व सालभर पहले ही टीम से जुड़े थे। संजू के भी चेन्नई सुपर किंग्स से ही जुड़ने की खबरें हैं। राजस्थान को अलविदा कहने के बाद केरल का ये खिलाड़ी 5 बार की आईपीएल चैंपियन टीम से जुड़ना चाहता है। फ्रेंचाइज भी उन्हें अपने साथ जोड़ना चाहती है।

भारतीय क्लब फुटबॉल संकट से गुजर रहा है : चौबे

नई दिल्ली, 10 अगस्त। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) के अध्यक्ष कल्याण चौबे ने रविवार को स्वीकार किया कि देश की शीर्ष स्तरीय इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के भविष्य को लेकर अनिश्चितता के कारण क्लब फुटबॉल 'संकट से गुजर रहा है' और इससे उबरने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। आईएसएल के आयोजक एफएसडीएल ने एआईएफएफ के साथ 2010 में किए एमआरए (मास्टर अधिकार करार) के नवीनीकरण को लेकर अनिश्चितता के कारण 11 जुलाई को 2025-26 सत्र को 'स्थगित' करने का फैसला किया था जिसके बाद तीन क्लबों ने या तो अपनी शीर्ष टीम का संचालन रोक दिया है या शीर्ष टीम के खिलाड़ियों और कर्मचारियों के वेतन निलंबित कर दिए हैं। चौबे एक साक्षात्कार में कहा, ''यह सच है कि हम एक ऐसे संकट से गुजर रहे हैं जिसके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं। निहित स्वार्थों वाले कुछ स्वयंभू सुधारकों ने यह स्थिति पैदा की है। मुझे विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से हम सामूहिक रूप से इस संकट से उबर पाएंगे।'' चौबे ने 11 आईएसएल क्लबों द्वारा भारतीय फुटबॉल की 'मौजूदा स्थिति' को उच्चतम न्यायालय के ध्यान में लाने के अनुरोध पर भी आश्चर्य व्यक्त किया जहां राष्ट्रीय महासंघ के संविधान से संबंधित एक मामला लंबित है। आईएसएल क्लबों ने एक पत्र में कहा कि अगर एआईएफएफ उनके अनुरोध पर कार्रवाई नहीं करता है तो उनके पास स्वतंत्र रूप से न्यायिक सहायता लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। आईएसएल के 13 क्लबों में से मोहन बागान सुपर जाइंट और ईस्ट बंगाल ने पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं। चौबे ने कहा, ''इस मामले पर (सात अगस्त को दिल्ली में) सभी 13 क्लबों के सीईओ के साथ बैठक में चर्चा हुई थी इसलिए 24 घंटे के भीतर उनसे यह पत्र प्राप्त करना हमारे लिए आश्चर्य की बात थी। इस तरह के संवाद से बचा जा सकता था।''यह पूछे जाने पर कि क्या एआईएफएफ इस मामले पर स्पष्टता के लिए उच्चतम न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकता है तो उन्होंने कहा, ''हम इस संभावना पर कानूनी सलाह ले रहे हैं।''

जयपुर जिला सीनियर महिला फुटबॉल के चयन हेतु ट्रायल सम्पन्न हुई

जयपुर, 10 अगस्त। राजस्थान फुटबाल संघ द्वारा आयोजित होने जा रही राजस्थान राज्य सीनियर महिला फुटबॉल चैंपियनशिप 2025 के लिए जयपुर जिले की सीनियर महिला फुटबॉल टीम के चयन हेतु आज सवाई मानसिंह विद्यालय के फुटबॉल ग्राउंड पर ट्रायल संपन्न हुई। जयपुर जिला फुटबॉल संचालन समिति के वरिष्ठ सदस्य अब्दुल जब्बार ने बताया की ट्रायल अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ से मान्यता प्राप्त कोच निकिता कंवर, कोच संजय लांबा, कोच प्रकाश मरांडी, कोच गणेश पवार, और वर्तमान में जयपुर जिला के हेड कोच हितेश शर्मा के देखरेख में संपन्न हुई। डॉ दिलीप सिंह चुंडावत ने बताया कि इस ट्रायल के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के माध्यम से 59 लड़कियों ने रजिस्ट्रेशन कराया जिनमें से 47 लड़कियों ने ट्रायल में आज भाग लिया। इस एक दिवसी ट्रायल्स के आधार पर प्रथम लिस्ट में 27 लड़कियों का चयन किया गया जिनका प्रशिक्षण कैंप कल से केंद्रीय विद्यालय नंबर वन के फुटबॉल ग्राउंड में 14 अगस्त तक लगेगा। प्रशिक्षण शिविर के आधार पर अंतिम 18 सदस्य टीम 15 अगस्त को राज्य फुटबॉल चैंपियनशिप के लिए भीलवाड़ा रवाना होगी।

अंडर-15 राजस्थान बॉयज फुटबॉल लीग श्रेष्ठ की हैट्रिक से जयपुर फुटसाल ने जीत हासिल की

जयपुर, 10 अगस्त। राजस्थान फुटबॉल संघ के तत्वाधान में विद्याधर नगर स्थित फुटबॉल मैदान पर वीरवार को 4 मैच खेले गए राजस्थान फुटबाल संघ सचिव दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि अंडर - 15 खिलाड़ियों की यह लीग राजस्थान में पहली बार आयोजित की जा रही है जो तीन महीने तक चलेगी जिसमें राज्य के 10 प्रोफेशनल फुटबॉल क्लब कुल 90 मैच खेलेंगे। जिनमें से अभी तक 34 मैच खेले जा चुके है।

मैच फुटबाल क्लब ब्रदर्स यूनाइटेड एवं राजस्थान फुटबाल स्कूल के बीच खेला गया, इस मुकाबले में ब्रदर्स यूनाइटेड ने 2- 2 से बराबर रहा, दोनों टीमों ने आक्रमण खेल का प्रदर्शन किया ब्रदर्स यूनाइटेड की तरफ से साजन खान और वीरेन ने ओर राजस्थान फुटबाल स्कूल की तरफ से अभिषेक ओर युवराज ने गोल किए । दूसरा मैच एवं राजस्थान यूनाइटेड ओर जयपुर फुटसाल फुटबाल क्लब के मध्य खेला गया जिसमें जयपुर फुटसाल ने 4 - 2 से एकतरफा जीत हासिल की, विजेता टीम की तरफ से आरव गोल, श्रेष्ठ ने हैट्रिक लगा कर मैच अपने नाम किया राजस्थान यूनाइटेड की तरफ से तन्मय ओर लैपैनग़ ने गोल किया तीसरा मैच :- रेड स्टोन फुटबाल क्लब एवं जयपुर यूनाइटेड के बीच खेला गया जिसमें जयपुर यूनाइटेड 5-1 से विजयी रहा, विजेता टीम की तरफ से दो दो गोल शोधित ओर लक्ष्य ने टुकसेन ने एक गोल किया, रेड स्टोन की तरफ से तन्मय ने गोल किया। चौथा मैच :- मेवाड़ स्पोर्ट्स क्लब एवं जयपुर बॉयज एंड गर्ल्स फुटबॉल एकेडमी के मध्य खेला गया जिसमें जयपुर बॉयज ओर गर्ल क्लब 6-2 से विजयी रहा, विजेता टीम की तरफ से दो दो गोल आवेश, अरमान ओर एक गोल हर्षवर्धन एक गोल मेवाड़ के प्रेम से आत्म घाती गोल कर लिया मेवाड़ की तरफ से मुस्तकीन ने दो गोल किए, पर गोल किए।

एशिया कप 2025 तक सूर्यकुमार यादव फिट नहीं हुए तो कौन होगा कप्तान?

नई दिल्ली, 10 अगस्त। क्रिकेट एशिया कप 2025 का आयोजन 9 से 28 सितंबर के बीच यूएई में होगा। भारत का पहला मैच 10 सितंबर को यूएई के खिलाफ है। इसके बाद 14 तारीख को भारत और पाकिस्तान मैच होगा। ग्रुप स्टेज का आखिरी मैच भारत 19 को ओमान के खिलाफ खेलेगी। टी20 कप्तान सूर्यकप्तान यादव की कुछ समय पहले सर्जरी हुई थी, वह अपन फिटनेस हासिल करने के लिए मेहनत कर रहे हैं। लेकिन अगर वह टूर्नामेंट तक पूरी तरह फिट नहीं हुए तो भारतीय टीम की कमान कौन संभालेगा? सूर्यकुमार यादव का जर्मनी में स्पोर्ट्स हर्निया की सर्जरी हुई थी जिसके बाद वह फिटनेस पाने के लिए मेहनत कर रहे हैं। अभी वह बेंगलुरु में रिहैब कर रहे हैं। उम्मीद जताई जा रही है कि सूर्या एशिया कप से पहले फिटनेस हासिल कर लेंगे।

शुभमन गिल : इंग्लैंड दौरे पर पहली बार टेस्ट की कमान संभालते हुए शुभमन गिल के बेहरीन प्रदर्शन किया, भी कई रिकॉर्ड बनाए, इसके बाद माना जा रहा है कि वह एशिया कप स्क्वॉड में शामिल होंगे। सूर्या जब कप्तान बने थे त गिल को उपकप्तान बनाया गया था, ऐसे में अगर सूर्या नहीं खेले तो एशिया कप में भारत की कप्तानी शुभमन गिल संभाल सकते हैं।

हार्दिक पंड्या : ऑलराउंडर प्लेयर हार्दिक पंड्या भारत के लिए बल्ले और गेंद, दोनों से अहम रोल निभाते हैं। उन्होंने गुजरात टाइटंस को अपनी कप्तानी में टीम के पहले ही सीजन में चैंपियन बनाया था और दूसरे सीजन में फाइनल तक पहुंचाया।

रमेश बुदिहाल ने रचा इतिहास, एशियाई सर्फिंग में भारत को दिलाया पहला पदक

चेन्नई, 10 अगस्त। महाबलीपुरम में एएसएफ एशियाई सर्फिंग चैंपियनशिप का समापन हो गया। रमेश बुदिहाल ने आज इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में पदक जीतने वाले पहले भारतीय बनकर इतिहास रच दिया। सप्ताह भर चलने वाले इस आयोजन के समापन के साथ ही कोरिया के कनोआ हीजे और जापान के अनरी मात्सुनो को पुरुष और महिला वर्ग का चैंपियन घोषित किया गया।

महाबलीपुरम की विश्वस्तरीय लहरों पर अंतिम दिन की प्रतिस्पर्धा ने रोमांचक फाइनल, राष्ट्रीय गौरव और ऐतिहासिक उपलब्धियों के लिए मंच तैयार किया। पहली बार, किसी भारतीय सर्फर ने महाद्वीपीय स्तर पर पदक जीता है – रमेश बुदिहाल ने ओपन पुरुष वर्ग में कांस्य पदक जीता, जो भारतीय सर्फिंग के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

भारतीय सर्फिंग के लिए यह एक गौरवपूर्ण और अविस्मरणीय दिन है जब किसी एशियाई चैंपियनशिप में पोडियम पर तिरंगा लहराया है, और एक भारतीय सर्फर ने कांस्य पदक जीता है, जो किसी ऐतिहासिक उपलब्धि से कम नहीं है।

सर्फिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष श्री अरुण वासु ने कहा, रमेश की उपलब्धि साबित करती है कि भारत एशियाई सर्फिंग के नक्शे पर आ गया है, और यह अनगिनत युवा सर्फर्स को बड़े सपने देखने और कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करेगा।

इस दिन ओपन पुरुष, ओपन महिला, अंडर-18 लड़के और अंडर-18 लड़कियों के फाइनल मुकाबले हुए, जिसमें एशिया के सर्वश्रेष्ठ सर्फर पोडियम पर जगह बनाने के लिए चार-व्यक्ति हीट में भिड़े। इन प्रदर्शनों ने इस वर्ष की चैंपियनशिप को परिभाषित करने वाले कौशल, लचीलेपन और प्रतिस्पर्धी भावना को उजागर किया।

महाबलीपुरम के दाहिने हाथ के पॉइंट ब्रेक ने ओपन पुरुष वर्ग के फाइनल में बेहतरीन स्थिति प्रदान की, जहां कनोआ हीजे (कोरिया) ने आक्रामक रेलवर्क, सटीक टाइमिंग और 15.17 के हीट-विजेता स्कोर के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया, और इंडोनेशिया के पजार एरियाना को केवल 0.6 अंकों से पीछे छोड़ दिया।

रमेश बुदिहाल 12.60 – मेगा आर्टाना को पछाड़ने और भारत के लिए पहला महाद्वीपीय सर्फिंग पदक हासिल करने के लिए स्मार्ट पोज़िशनिंग के साथ स्वच्छ, नियंत्रित टर्न का संयोजन किया। रमेश बुदिहाल के लिए, कांस्य पदक केवल पोडियम फिनिश से कहीं अधिक है – यह भारतीय सर्फिंग के लिए एक ऐतिहासिक सफलता है।

एएसएफ एशियाई सर्फिंग चैंपियनशिप में पदक जीतने वाले पहले भारतीय के रूप में, रमेश की उपलब्धि भारत में इस खेल के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ है, जो साबित करती है कि घरेलू प्रतिभाएं एशिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हो सकती हैं। ओपन महिला वर्ग का फाइनल शैली, तकनीकी सटीकता और लहरों पर महारत का शानदार प्रदर्शन था, जिसमें अनरी मात्सुनो (जापान) ने गति, शक्ति और त्रुटिहीन निष्पादन के साथ चैंपियनशिप जीतने वाला प्रदर्शन किया। 14.90 के स्कोर ने उन्हें स्वर्ण और रजत के लिए हुए अखिल-जापान मुकाबले में हमवतन सुमोमो सातो से आगे कर दिया।

अनरी मात्सुनो 14.90 (1.2 से जीती) ने तीखे, ऊर्ध्वाधर मोड़ों के साथ सहज रेल ट्रांजिशन को मिलाकर शीर्ष स्थान हासिल किया। सुमोमो सातो (जापान) – 13.70 – लगातार और स्टाइलिश सर्फिंग ने उन्हें अंतिम मिनटों तक स्वर्ण पदक के करीब बनाए रखा, लेकिन अंत में उन्हें रजत पदक मिला। इसाबेल हिग्स (थाईलैंड) – 11.76 ने कांस्य पदक जीता। महिला वर्ग में जापान के दबदबे ने उनकी प्रतिभा की गहराई को रेखांकित किया, जिसमें मात्सुनो और सातो दोनों ने साबित किया कि वे एशिया के सबसे बड़े मंच पर दबाव में भी अच्छा प्रदर्शन कर सकती हैं।

ऑस्ट्रेलिया-ए ने इंडिया-ए को किया क्लीन स्वीप

मकाय, 10 अगस्त। सियाना जिंजर (नाबाद 17 रन/ 4 विकेट) के शानदार आलराउंड प्रदर्शन के दम पर ऑस्ट्रेलिया ए महिला टीम ने रविवार को तीसरे अनौपचारिक टी-20 मुकाबले मे इंडिया ए को चार रन से हराकर सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप कर लिया। 145 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंडिया ए की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने चार रन के स्कोर पर दिनेश वृंदा (चार) का विकेट गंवा दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आयी उमा छेत्री भी मात्र तीन रन बनाकर पवेलियन लौट गई। राघवी बिष्ट ने शेफाली वर्मा के साथ तीसरे विकेट के लिए 43 रन जोड़े। आठवें ओवर में सियाना जिंजर ने शेफाली वर्मा को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। शेफाली वर्मा ने 25 गेंदों में छह चौके और एक छक्का लगाते हुए (41) रन बनाये। इसके बाद जीत की ओर बढ़ रही इंडिया ए को सियाना जिंजर ने राघवी बिष्ट को स्टंप आउट कराकर चौथा झटका दिया। राघवी बिष्ट ने 25 गेंदों मे दो चौकों की मदद से 25 रन बनाये। मिन्नू मनी 29 गेंदों में (30) के रनआउट होने के बाद ऑस्ट्रेलिया ए ने मैच पर अपनी पकड़ बना ली। इसके बाद इंडिया ए का कोई बल्लेबाज ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे नहीं टिक सका। कप्तान राधा यादव (नौ), तनुजा कंवर (एक) और सजीवन सजना (तीन) रन बनाकर आउट हुई। मिन्नू मनी के (30) का टीम के 116 के स्कोर पर पांचवें खिलाड़ी के रूप में रनआउट होना इंडिया ए के लिए घातक रहा और इसके साथ ही उसकी जीत की उम्मीद टूट गई।

ऑस्ट्रेलिया ने दक्षिण अफ्रीका को 17 रनों से हराया

डार्विन, 10 अगस्त। टिम डेविड (83) और कैमरून ग्रीन (35) की आतिशी पारियों के बाद जॉश हेजलवुड और बेन ड्वारश्विस (तीन-तीन विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी के दम पर ऑस्ट्रेलिया ने रविवार को पहले टी-20 मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को 17 रनों से हरा दिया। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली है।

179 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत अच्छी नहीं और उसने पहले ही ओवर में कप्तान एडन मारक्रम (12) का विकेट गंवा दिया। उन्हें जॉश हेजलवुड ने विकेटकीपर कैमरून ग्रीन के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये लुआन-द्रे प्रेटोरियस को ग्लेन मैक्सवेल ने ओवेन के हाथों कैच आउट कराकर पवेलियन भेज दिया। लुआन-द्रे प्रेटोरियस ने नौ गेंदों में 14 रन बनाये।

तीसरे विकेट के रूप में डेवाल्ड ब्रेविस दो रन बनाकर आउट हुये। ट्रिस्टन स्टब्स ने रायन रिकलटन के साथ पारी को संभाला और तेजी के साथ रन बटोरे। दोनों बल्लेबाजों के बीच चौथे विकेट के लिए 72 रनों की साझेदारी हुई। 15वें ओवर में हेजलवुड ने ट्रिस्टन स्टब्स को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। ट्रिस्टन स्टब्स ने 27 गेंदों में पांच चौकों की मदद से 35 रन बनाये। इसी ओवर में हेजलवुड ने जॉर्ज लिंडे (शून्य) को भी अपना शिकार बना लिया। अगले ओवर में एडम जम्पा ने कॉर्बिन बॉश (दो) और सेनुरन मुथुसामी (शून्य) को आउटकर मैच का रुख अपनी टीम के पक्ष में कर दिया। 20वें ओवर की दूसरी गेंद पर बेन ड्वारश्विस ने रायन रिकलटन को मैक्सवेल के हाथों कैच आउट कराकर ऑस्ट्रेलिया की जीत पक्की कर दी। दक्षिण अफ्रीका की टीम निर्धारित 20 ओवरो में नौ विकेट पर 161 रन ही बना सकी और 17 रनों से मुकाबला हार गई।

ऑस्ट्रेलिया की ओर जॉश हेजलवुड और बेन ड्वारश्विस ने तीन- तीन विकेट लिये। एडम जम्पा को दो विकेट मिले। ग्लेन मैक्सवेल ने एक बल्लेबाज को आउट किया। टिम डेविड को उनकी शानदार पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला। दक्षिण अफ्रीका के लिए वेना मफाका ने चार ओवर में 20 रन देकर चार विकेट लिये। कैगिसो रबाडा को दो विकेट मिले।

न्यूजीलैंड की महिला क्रिकेटर थैमसिन न्यूटन ने लिया संन्यास

वेलिंग्टन, 10 अगस्त। न्यूजीलैंड की महिला ऑलराउंडर थैमसिन न्यूटन ने क्रिकेट के सभी प्रारूपों से संन्यास ले लिया है। न्यूटन ने 14 साल के अपने क्रिकेट करियर में न्यूजीलैंड के लिए 2015 से 2021 के बीच 10 एकदिवसीय और 15 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले। वह 2016 टी-20 विश्व कप और 2017 एकदिवसीय विश्व कप में न्यूजीलैंड टीम का हिस्सा थीं। उन्होंने 2011-12 में वेलिंगटन के साथ अपने घरेलू करियर की शुरुआत की और 2014 से 2018 तक कैंटरबरी में रहीं। 2023-24 सीजन से पहले सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट्स में जाने से पहले, वह पांच साल के लिए फिर से वेलिंगटन लौटीं। वह चार बार हैलीबर्टन जॉनस्टोन शील्ड, घरेलू 50 ओवर की प्रतियोगिता के फाइनल में शामिल हुईं।

बीसीबी ने मार्शल, वुड और हेमिंग को कोच नियुक्त किया

ढाका, 10 अगस्त। बंगलादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने एलेक्स मार्शल, जूलियन वुड और टोनी हेमिंग को नये कोचों के रूप में नियुक्त किया है। बीसीबी की शनिवार को हुई बैठक के बाद एलेक्स मार्शल, जूलियन वुड और टोनी हेमिंग को नए कोचों के रूप में नियुक्त किया है। वुड तीन महीने के लिए विशेषज्ञ बल्लेबाजी कोच के रूप में कार्यभार संभालेंगे। वह एक पावर-हिटिंग विशेषज्ञ हैं और हाल ही में श्रीलंका क्रिकेट के साथ काम कर चुके हैं। मार्शल को एक साल के लिए बोर्ड के भ्रष्टाचार निरोधक विभाग का सलाहकार नियुक्त किया गया है। मार्शल पिछले साल सितंबर तक आईसीसी की भ्रष्टाचार रोधक इकाई के महाप्रबंधक थे। बीसीबी की मीडिया समिति के अध्यक्ष इफ्तिखार रहमान ने कहा कि बीसीबी ने बीपीएल के भ्रष्टाचार रोधी कार्यों की देखरेख के लिए आईसीसी की अखंडता इकाई को नियुक्त किया है। बीसीबी की भ्रष्टाचार रोधक इकाई वर्तमान में 2024-25 सीजन के बीपीएल और ढाका प्रीमियर लीग में भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच कर रही है।

20 साल के लंबे इंतजार के बाद अंडर-20 एएफसी ने महिला एशियाई कप के लिए किया क्वालीफाई

नई दिल्ली, 10 अगस्त। रविवार को भारत की अंडर-20 महिला राष्ट्रीय टीम ने यांगून के थुवुन्ना स्टेडियम में अपने अंतिम ग्रुप डी मुकाबले में मेजबान म्यांमार को 1-0 से हराकर इतिहास रच दिया है। इस दौरान भारतीय महिला टीम ने 20 साल के लंबे इंतजार के बाद एएफसी अंडर-20 महिला एशियाई कप के लिए क्वालीफाई किया है। यंग टाइग्रेसेस ने सात अंकों के साथ अपने ग्रुप में टॉप स्थान हासिल किया है। वहीं पूजा ने 27वें मिनट में गोल करके थुवुन्ना स्टेडियम में मौजूद दर्शकों का दिल जीत लिया।

वही मैच दो हिस्सों में खेला गया था। पले हाफ में भारत ने दबदबा बनाया, जबि दूसरे हाफ में म्यांमार ने दबदबा बनाया। नेहा और सिबानी देवी नोंग्मीकापम ने तीसरे मिनट में ही मिलकर गोल कर दिया, जब सिबानी ने म्यांमार को एक क्रॉस दिया, जिसे म्यांमार गोल करने से बस कुछ ही इंच दूर रह गया।

मेजबान टीम ने सारा दबाव झेलते हुए कुछ जवाबी हमले भी किए और 9वें मिनट में फॉरवर्ड सु सु खिन, यिन लून इआन से सीने पर गेंद लगने के बाद गोल करने के करीब पहुंच गई। वहीं जैसे-जैसे समय बीता म्यांमार ने खेल में अपनी पकड़ मजबूत करनी शुरू कर दी। लेकिन भारत ने 30वें मिनट से कुछ मिनट पहले ही पूजा के गोल की बदौलत मुकाबले में बढ़त बना ली। पूजा ने ही काउंटर पर हमला शुरू किया था और फिर दाईं ओर से क्रॉस किया। दूसरी तरफ से नेहा गेंद के सिरे तक पहुंचने में कामयाब रहीं और उन्होंने गेंद को वापस गोलपोस्ट में पहुंचा दिया। पूजा, जो तब तक गोलपोस्ट तक पहुंच चुकी थीं, को प्रतिक्रिया देने का समय ही नहीं मिला और उन्होंने अपने धड़ से गेंद को गोल लाइन के पार पहुंचा दिया।

निशा, मुस्कान और राहुल कुंडू ने स्वर्ण जीता, भारत ने एशियाई अंडर-19 मुक्केबाजी में जीते 14 पदक

बैंकॉक, 10 अगस्त। भारत की युवा महिला मुक्केबाजों ने महाद्वीपीय मुक्केबाजी में अपनी बढ़ती प्रतिभा को दर्शाया, जब निशा (54 किग्रा) और मुस्कान (57 किग्रा) ने रविवार को बैंकॉक, थाईलैंड में अंडर-19 एशियाई मुक्केबाजी चैंपियनशिप 2025 में स्वर्ण पदक जीता, जबकि पांच अन्य ने रजत पदक जीते। पुरुषों के फाइनल में, राहुल कुंडू (75 किग्रा) ने उज्बेकिस्तान के दिग्गज मुहम्मदजोन याकूपबोवेक पर विभाजित निर्णय से जीत हासिल करके एक और स्वर्ण पदक जीता, जिससे भारत के पदकों की संख्या 14 हो गई, जिसमें तीन स्वर्ण, सात रजत और चार कांस्य पदक शामिल हैं।

इसके अलावा, अंडर-19 स्पर्धा में भाग ले रही 10 महिला मुक्केबाजों में से नौ पदक जीतकर लौटेंगी - जिनमें दो स्वर्ण,पांच रजत और दो कांस्य पदक शामिल हैं - जो कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान और चीन जैसे देशों के साथ एक उभरती हुई शक्ति के रूप में भारत की स्थिति को प्रदर्शित करेंगे।

अंडर-19 और अंडर-22 एशियाई मुक्केबाजी चैंपियनशिप, जो एक साथ आयोजित की जा रही हैं, भारत के उभरते सितारों को एशिया के कुछ सबसे कठिन प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ अपने कौशल और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन करने का एक मंच प्रदान करती हैं। भारत ने 40 मुक्केबाजों का एक मजबूत दल उतारा है - प्रत्येक आयु वर्ग में 20 - जिसमें सिद्ध चैंपियन और घरेलू सर्किट में प्रभावित करने वाली संभावित प्रतिभाओं का एक आदर्श मिश्रण है। निशा ने दिन के दूसरे मुकाबले में भारत के लिए स्वर्ण पदक का खाता खोला जब उन्होंने चीन की सिरुई यांग के खिलाफ तीसरे और अंतिम दौर में अपना दबदबा बनाते हुए 4:1 से जीत दर्ज की। मुस्कान ने इसके बाद भारत के लिए लगातार दो पदक जीते। उन्होंने आक्रामक रुख अपनाया और अगले राउंड में कज़ाकिस्तान की अयाज़ान एर्मेक को 3:2 से हराकर स्प्लिट डिसीजन हासिल किया।

पुरुषों की स्पर्धा में, राहुल ने 75 किग्रा वर्ग में उज्बेकिस्तान के मुहम्मदजोन के खिलाफ 4:1 से जीत हासिल करते हुए अपना आत्मविश्वास बरकरार रखा। भारत ने अंडर-22 वर्ग में भी 13 पदक पक्के कर लिए हैं, जिसमें सोमवार को पांच मुक्केबाज स्वर्ण पदक के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से भारतीय जनता पार्टी, हरियाणा के प्रदेश प्रभारी एवं राजस्थान के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने मुख्यमंत्री निवास पर शिष्टाचार भेंट की।

राज्य के किसानों को 1200 करोड़ रु. के बीमा दावे का भुगतान होगा

जयपुर, 10 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान की मौजूदगी में सोमवार को झुंझुनूं में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत रबी सीजन 2024-25 एवं खरीफ सीजन 2024 की बीमा दावा राशि की पहली किश्त डीबीटी के माध्यम से राष्ट्रव्यापी स्तर पर किसानों के खातों में हस्तांतरित की जाएगी। कार्यक्रम में विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को प्रतिकात्मक चेक का भी वितरण किया जाएगा।

- मुख्यमंत्री भजनलाल व केन्द्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान झुंझुनूं में डीबीटी के माध्यम से राशि हस्तांतरित करेंगे।

मुख्यमंत्री शर्मा व केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री चौहान के द्वारा राज्य में लगभग 27 लाख फसल बीमा धारक किसानों को लगभग 1200 करोड़ रुपये की राशि का डीबीटी के माध्यम से भुगतान किया जाएगा।

गहलोत के पीएसओ को परीक्षा से 4 दिन पहले पेपर मिला था

पीएसओ राजकुमार ने बड़ी रकम देकर पेपर खरीदा, फिर दूध वाले व एक परिचित को मोटी रकम पर बेचा

जयपुर, 10 अगस्त। उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2021 पेपर लीक मामले में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पीएसओ राजकुमार यादव और उसके बेटे भरत यादव की गिरफ्तारी के बाद पूछताछ में सामने आया कि बेटे के दबाव में उसने पैसे देकर पेपर खरीदा था। बेटा भरत यादव पर दबाव बना रहा था कि उसे एसआई बनना है। इस पर राजकुमार ने अपने दोस्त कुंदन को पैसा देकर पेपर लिया। इसके बाद पेपर अपने दूध वाले को भी बेच दिया। राजकुमार ने बड़ी रकम कुंदन कुमार को पेपर के लिए दी थी। इस पैसे का बोझ उतारने के लिए उसने अपने दूध वाले को पेपर की बात बताई। दूध बेचने वाले ने खुद के बेटे रविन्द्र सैनी के लिए राजकुमार यादव को पैसे देकर पेपर लिया। राजकुमार ने अपने परिचित सतेन्द्र को भी मोटी रकम लेकर पेपर बेच दिया।

राजकुमार यादव से एसओजी पूछताछ कर रही है, लेकिन वह जांच में सहयोग नहीं कर रहा है। वहीं बेटा स्वीकार कर चुका है कि पिता से पेपर मंगवाया था, जिसे पढ़ कर परीक्षा में पास हुआ। लेकिन फिजिकल में फेल हो गया था। भरत यादव, सतेन्द्र और रविन्द्र को पहले से जानता था।

- एसओजी के अनुसार, पीएसओ राजकुमार जांच में सहयोग नहीं कर रहा, पर उसका बेटा स्वीकार कर चुका है कि पिता से पेपर मंगवाया, जिसे पढ़कर पास हुआ।

उन्होंने बताया कि लीक पेपर पढ़ कर एसआई भर्ती में 12वीं रैंक लाने वाला सत्येन्द्र यादव जयपुर ग्रामीण पुलिस लाइन में बतौर प्रोबेशनर एसआई तैनात था। उससे पूछताछ में सामने आया कि हेड कांस्टेबल राजकुमार यादव ने परीक्षा से चार दिन पहले पेपर हासिल किया था। अपने बेटे भरत यादव के साथ ही उसने रवींद्र सैनी और सत्येंद्र को भी पेपर पढ़वाया था। अब एसओजी रवींद्र सैनी की तलाश में जुटी है।

आरोपित सत्येंद्र यादव की गिरफ्तारी के बाद से वह फरार हो गया। बताया जा रहा है कि एसओजी ने उसे पूछताछ के लिए बुलाया था, लेकिन वह नहीं पहुंचा और फरार हो गया। एसओजी का कहना है कि पुलिस टीमें उसकी तलाश कर रही हैं। सम्भावित ठिकानों पर पुलिस टीमें दबिश दे रही हैं। जल्द से जल्द रविन्द्र सैनी को गिरफ्तार किया जाएगा। फिलहाल आरोपित राजकुमार यादव और भरत यादव 12 अगस्त तक रिमांड पर हैं।

एसओजी के एडीजी वीके सिंह ने बताया कि राजकुमार यादव ने सरकारी शिक्षक कुंदन पंड्या से पेपर लिया था। एसओजी कुंदन पंड्या को 5 जून को गिरफ्तार कर चुकी है। जांच पड़ताल में यह भी सामने आया है कि कुंदन आरपीएससी के सदस्य रहे बाबूलाल कटारा का नजदीकी रहा है। उसने कटारा से पेपर हासिल कर आगे बेचा। कुंदन पंड्या राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, कन्याला घाटा (डूंगरपुर) में अध्यापक है।

मुख्यमंत्री ने पेंशनरों के लिए दवा व जांचों की सीमा बढ़ाई

निर्धारित सीमा में विस्तार देने के लिये अब स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेन्सी अधिकृत होगी

जयपुर, 10 अगस्त। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं के सुलभ एवं सुचारू संचालन के लिए प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। इसी दिशा में राज्य सरकार ने राजस्थान राज्य पेंशनर्स चिकित्सा रियायती योजना-2021 में संशोधन किया है।

वित्त विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, पेंशनर्स के लिए आरजीएचएस योजना के अन्तर्गत वर्तमान में आउटडोर चिकित्सा सुविधा में दवाइयों के लिए निर्धारित 50 हजार रुपए प्रतिवर्ष एवं जांचों के लिए 5 हजार रुपए की निर्धारित सीमा में वृद्धि के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग एवं उसके अधीन राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेन्सी को शक्तियां प्रदान की गई हैं।

- मुख्यमंत्री के इस निर्णय से पेंशनर्स को अपनी मेडिकल जरुरतों के मामले में ओपीडी दवाइयों व चिकित्सा जांचों की सीमा राशि में शिथिलता प्राप्त करने के लिये आवेदन करना सरल होगा।

इसके तहत ओपीडी दवाइयों के लिए निर्धारित सीमा में 2 लाख रुपए तक के विस्तार के लिए राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी के अतिरिक्त सीईओ या संयुक्त सीईओ (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा अधिकृत), 2 लाख से 7 लाख रुपए तक के लिए राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) को प्राधिकृत किया गया है। वहीं 7 लाख रुपए से अधिक के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग (प्रशासनिक विभाग) को प्राधिकृत किया गया है।

इसी तरह चिकित्सा जांचों के लिए निर्धारित 5 हजार रुपए की सीमा को बढ़ाने के लिए राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्राधिकृत है। उल्लेखनीय है कि निर्धारित सीमा राशि में वृद्धि के लिए पहले यह शक्तियां वित्त विभाग के अधीन थीं, जिन्हें अब चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग को सौंप दिया गया है।

मुख्यमंत्री के इस निर्णय से पेंशनर्स को अपने मेडिकल जरूरतों के मामले में ओपीडी दवाइयों एवं चिकित्सा जांचों की सीमा राशि में शिथिलता प्राप्त करने के लिए अब आवेदन करना और सरल होगा। पेंशनर्स को इसके लिए आरजीएचएस पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन करना होगा।

रूस-यूक्रेन समझौते से पहले अमेरिका सुरक्षा गारन्टी दे

यूरोपीय देशों को आशंका है कि ट्रंप और पुतिन युक्रेन मुद्दे पर खुद ही समझौते पर पहुंच सकते हैं

वाशिंगटन, 10 अगस्त। यूरोप और यूक्रेन ने रूस - यूक्रेन के बीच जारी संघर्ष को सुलझाने के लिए होने वाले किसी भी समझौते के तहत अमेरिका से सुरक्षा गारंटी प्रदान करने की मांग की हैं।

न्यूयॉर्क टाइम्स ने सूत्रों के हवाले से अपनी रिपोर्ट में कहा है कि वे इस बात पर भी ज़ोर दे रहे हैं कि यूक्रेन के लिए उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) में शामिल होने का अवसर खोले जाने की जरूरत है। सूत्रों ने कहा कि यूरोपीय सहयोगी चाहते हैं कि अमेरिका यूक्रेन की नाटो सदस्यता के लिए दरवाज़ा खुला रखे, भले ही गठबंधन में शामिल होना तुरंत संभव न हो।

अखबार की रिपोर्ट के अनुसार कल ब्रिटेन के विदेश सचिव मंत्री लैमी, यूक्रेन और यूरोप के प्रतिनिधियों तथा अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के बीच हुयी बैठक में इन मुद्दों पर चर्चा हुयी। अखबार ने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ इस बैठक में ऑनलाइन शामिल हुए।

- ब्रिटेन के विदेश सचिव, यूक्रेन व यूरोप के प्रतिनिधियों तथा अमेरिका के उपराष्ट्रपति के बीच हुई बैठक में इन मुद्दों पर चर्चा हुई।

इससे पहले न्यूयॉर्क टाइम्स ने सूत्रों के हवाले से खबर दी थी कि यूरोपीय देश इस बात को लेकर चिंतित हैं कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और ट्रम्प यूक्रेन मुद्दे पर खुद ही किसी समझौते पर पहुंच सकते हैं। सूत्रों ने कहा कि यूरोपीय देश यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहे हैं कि पुतिन और ट्रंप की बैठक में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की मौजूद रहें। अखबार की रिपोर्ट के अनुसार यूरोपीय देश भी वार्ता प्रक्रिया में भाग लेना चाहते हैं, लेकिन इसकी संभावना कम ही है।

गौरतलब है कि क्रेमलिन और व्हाइट हाउस ने पहले घोषणा की थी कि पुतिन और ट्रंप 15 अगस्त को अलास्का में मिलेंगे।

क्रेमलिन के सहयोगी यूरी उशाकोव ने कहा कि अमेरिका के विशेष दूत स्टीव विटकॉफ ने रूस की यात्रा के दौरान क्रेमलिन में पुतिन, ट्रंप और ज़ेलेंस्की के बीच त्रिपक्षीय बैठक के विकल्प का ज़िक्र किया था। लेकिन रूसी पक्ष ने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की और द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करने का सुझाव दिया।

भरतपुर की सेवर जेल में बंदी की संदिग्ध मौत

भरतपुर, 10 अगस्त (निसं)। भरतपुर के सेवर जेल से एक बंदी को उपचार के लिए आरबीएम अस्पताल में भर्ती कराया, जहां बंदी चेतपाल की मौत हो गई। इसके बाद बंदी के परिजन एवं ग्रामीणों ने जेल के बाहर एकत्रित होकर विरोध प्रदर्षन किया और जाम भी लगाया। मौके पर मौजूद पुलिस ने जाम खुलवाया और समझाइश की। मृतक के शव को अस्पताल की मौर्चरी में रखवाया गया। बाद में समझाइश के बाद मेडिकल बोर्ड ने पोस्टमार्टम किया।

- पुलिस ने समझाइश से जाम खुलवाया, मेडिकल बोर्ड ने पोस्टमार्टम किया।

बंदी के परिजनों का कहना है कि उन्होंने हमें घटना की सूचना नहीं दी। रविवार को जब बंदी की बडी बहन उससे मिलने के लिए आई तो, उसे घटना के बारे में बताया गया। वहीं जेल सुप्रिडेंट का कहना है कि सुबह अचानक उसकी तबियत ख़राब हो गई। जिसके बाद तुरंत आरबीएम अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जहां उसकी इलाज के दौरान मौत हो गई।

रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ ईडी ने चार्जशीट दायर की

चार्ज शीट में दावा किया गया कि वाड्रा ने 58 करोड़ रु. की कमाई अपराध से प्राप्त की

नई दिल्ली, 10अगस्त। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ दायर चार्जशीट में दावा किया है कि उन्होंने 58 करोड़ रुपये की कमाई अपराध से हासिल की। यह रकम दो कंपनियों के जरिए आई। ईडी का कहना है कि इस धन का इस्तेमाल वाड्रा ने संपत्तियां खरीदने, निवेश करने और अपनी कंपनियों के कर्ज चुकाने में किया।

ईडी के मुताबिक, आरोपित 58 करोड़ रुपये में से 5 करोड़ रुपये ब्लू ब्रीज ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड (बीबीटीपीएल) के जरिए और 53 करोड़ रुपये स्काई लाइट हॉस्पिटैलिटी प्राइवेट लिमिटेड (एसएलएचपीएल) के जरिए आए। दोनों कंपनियां वाड्रा के कारोबारी नेटवर्क से जुड़ी बताई गई हैं। जांच एजेंसी ने कहा कि यह रकम शेड्यूल अपराध से उत्पन्न हुई थी, यानी उस स्त्रोत, से जो पहले से अपराध घोषित है।

- ईडी के अनुसार, आरोपित ने 5 करोड़ रु. ब्लू ब्रीज ट्रेडिंग तथा 53 करोड़ स्काई लाइट हॉस्पिटैलिटी के जरिये प्राप्त किये। यह रकम शेड्यूल अपराध से उत्पन्न हुई थी।

अधिकारियों के अनुसार, जांच के दौरान बैंक लेन-देन, कंपनी रिकॉर्ड और गवाहों के बयान के आधार पर यह वित्तीय प्रवाह ट्रैक किया गया। ईडी ने यह भी बताया कि जिन कंपनियों के जरिए धन आया, उनका संचालन वाड्रा के नजदीकी सहयोगियों के हाथों में था। एजेंसी का कहना है कि इन चैनलों का उपयोग रकम को कानूनी स्वरूप देने के लिए किया गया।

ईडी ने चार्जशीट अदालत में दाखिल कर दी है, और अब इस पर सुनवाई होगी। अगर अदालत आरोप तय करती है, तो वाड्रा को मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम कानून (पीएमएलए) के तहत सजा का सामना करना पड़ सकता है। फिलहाल वाड्रा ने इन आरोपों पर सार्वजनिक रूप से कोई विस्तृत प्रतिक्रिया नहीं दी है।

आनंद शर्मा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व, यूरोप और लैटिन अमेरिका के प्रमुख राजनीतिक दलों के साथ कांग्रेस के संबंधों को मजबूत करने में सक्रिय भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा, मुझे 1980 के दशक के मध्य से आईवाईसी अध्यक्ष के रूप में कांग्रेस की सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पहलों से जुड़ने का अवसर मिला। इनमें 1985 का गुटनिरपेक्ष आंदोलन, युवा सम्मेलन और 1987 का ऐतिहासिक 'एंटी अपार्थाइड कॉन्फ्रेंस' शामिल हैं, जिन्हें वैश्विक सराहना मिली।

वोट चोरी पर ..

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मार्च का आयोजन सोमवार 11 अगस्त को हो रहा है। इससे पहले संसद की कार्यवाही शुरू होने से पूर्व सुबह संसद भवन परिसर में विपक्ष के नेता के कक्ष में गठबंधन के नेताओं की बैठक होगी, जिसमें संसद से चुनाव आयोग तक मार्च करने को लेकर चर्चा होगी। बताया जा रहा है कि इंडिया गठबंधन के नेता संसद भवन परिसर में पिछले सप्ताह की तरह प्रदर्शन भी करेंगे।

दिल्ली में यमुना का जलस्तर खतरे के निशान के पास पहुंचा

नई दिल्ली, 10अगस्त। यमुना नदी का जलस्तर एक बार फिर चिंता बढ़ाने वाला हो गया है। पुराने लोहे के पुल के पास पानी का स्तर चेतावनी रेखा पार कर चुका है, जिससे प्रशासन सतर्क हो गया है। हालांकि, सरकार का दावा है कि इस बार हालात 2023 जैसे गंभीर नहीं होंगे और स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है।

- हथिनकुंड बैराज से छोड़े जा रहे पानी को देखते हुए यमुना बैराज के सभी गेट खोले
- प्रशासन को आशा है कि यमुना नदी के हालात इस बार 2023 जैसे गंभीर नहीं होंगे तथा वे स्थिति को काबू रखने में सफल होंगे।

रविवार आज सुबह 8 बजे तक पुराने लोहे के पुल के पास यमुना का जलस्तर 204.05 मीटर और खतरनाक स्तर 205.33 मीटर के बीच दर्ज किया गया। दो दिन पहले ही यमुना का स्तर डेंजर लेवल को भी पार कर गया था। राजधानी में लगातार हो रही बारिश और पहाड़ी इलाकों में भीषण वर्षा के कारण नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है।

इस स्थिति को और जटिल बनाने में हथिनकुंड बैराज से छोड़े जा रहे पानी की बड़ी भूमिका है। बैराज से लगातार पानी छोड़े जाने के चलते निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। हालांकि, राहत की बात यह है कि रविवार को यमुना के जलस्तर में मामूली गिरावट दर्ज की गई है।

दिल्ली सरकार ने हालात को देखते हुए यमुना बैराज के सभी गेट खोल दिए हैं, जिससे पानी के बहाव में सुधार हुआ है। सरकार और अधिकारियों का कहना है कि जलस्तर पर लगातार निगरानी रखी जा रही है और जरूरत पड़ने पर प्रभावित क्षेत्रों में राहत व बचाव कार्य शुरू कर दिए जाएंगे।

ज्ञातव्य है कि राजधानी दिल्ली में यमुना नदी के लिए चेतावनी का स्तर 204.5 मीटर है, खतरे का स्तर 205.3 मीटर है और 206 मीटर पर निकासी शुरू होती है। ऐसी स्थिति में लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की कवायद शुरू हो जाती है। यमुना के प्रवाह और बाढ़ के जोखिम को मापने का ओल्ड रेलवे ब्रिज एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

धराली में छठे दिन भी हैलिकॉप्टर से राहत सामग्री भेजी

देहरादून, 10 अगस्त। उत्तराखंड में उत्तरकाशी जिला के धराली क्षेत्र में आपदा प्रभावितों की सहायता के लिए हेलिकॉप्टर्स के माध्यम से संचालित राहत अभियान रविवार छठे दिन भी जारी है।

- नौ अगस्त तक 1126 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया।

आज प्रात: काल मौसम खराब होने के कारण यह अभियान लगभग पौने दस बजे से शुरू हो पाया। मातली हेलीपैड से हेलिकॉप्टर के माध्यम से प्रभावितों के लिए बड़ी मात्रा में खाद्य एवं राहत सामग्री हर्षिल हेलीपैड तक भेजी जा रही है। हेलिकॉप्टर से वापसी में आपदा प्रभावित क्षेत्र से जरूरतमंद लोगों को मातली पहुंचाने का नियमित सिलिसिला भी शुरू हो गया है। छह से 09 अगस्त तक कुल 1126 लोगों को हर्षिल और धराली से सुरक्षित स्थानों पर ले जाया जा चुका है। आपदाग्रस्त धराली क्षेत्र में तत्परता के साथ बड़े पैमाने पर राहत और बचाव अभियान संचालित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए हेली ऑपरेशन में जुटाए गए हेलिकॉप्टरों द्वारा अब तक 260 से भी अधिक फेरे लगाए जा चुके है। इस अभियान में मातली हेलीपैड से आठ हेलिकॉप्टर संचालित किये जा रहे हैं। इसके साथ ही चिन्यालीसौड़ हवाईपट्टी से भी सेना के चिनूक, एमआई, एएलएच तथा चीता हेलिकॉप्टर भी हेली रेस्क्यू अभियान में महत्वपूर्ण सहयोग कर रहे हैं। युकाडा की ओर से आज वेदर ऑब्जरवेशन फ्लाइट को लांच किए जाने की जानकारी दी गई है। इससे हेली सेवाओं के संचालन के दृष्टिगत, विजिबिलिटी को जांचा जा सकेगा।

गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग 134 को गंगनानी से आगे नाग मन्दिर (लिम्वागाड) तक सुचारू कर दिया गया है,जबकि गंगनानी से आगे नाग मन्दिर (लिम्वागाड) के पास 30 मीटर क्षितग्रस्त पुल पर वैलीब्रिज के निर्माण कार्य लगभग 90 प्रतिशत हो गया है। मौसम स्थिति के अनुसार, आज दोपहर तक इसके पूरा होने की संभावना है।

खड़गे इंडिया गठबंधन नेताओं को डिनर देंगे

नयी दिल्ली 10 अगस्त। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के बाद अब कांग्रेस अध्यक्ष एवं राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे इंडिया गठबंधन के नेताओं के लिए डिनर का आयोजन कर रहे हैं, जिसमें चुनाव आयोग पर वोट की चोरी, बिहार में मतदाता सूची पुनरीक्षण तथा अन्य कई मुद्दों पर विचार विमर्श किया जाएगा।

कांग्रेस सूत्रों के अनुसार, डिनर का आयोजन 11 अगस्त यानी सोमवार को किया जाएगा। इसमें लोकसभा तथा राज्यसभा में इंडिया गठबंधन के सभी दलों के नेताओं के साथ ही विपक्षी गठबंधन के प्रमुख नेताओं को आमंत्रित किया गया है। भोज का आयोजन खरगे के आवास पर नहीं, बल्कि अन्यत्र किया जा रहा है, ताकि ज्यादा संख्या में नेताओं को इसमें आमंत्रित किया जा सके।

- सोमवार 11 अगस्त को इस डिनर में लोकसभा व राज्यसभा में गठबंधन के सभी प्रमुख नेताओं को आमंत्रित किया है।

हमें अगले युद्ध के लिये तैयार रहना होगा- जनरल द्विवेदी

चेन्नई, 10अगस्त। 'अगला युद्ध, जिसकी हम कल्पना कर रहे हैं, वह जल्द ही हो सकता है।' भारतीय थल सेना के प्रमुख जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने सनसनीखेज चेतावनी दी है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि 'हमें उसके अनुसार तैयारी करनी होगी और इस बार हमें मिलकर यह लड़ाई लड़नी होगी।'

थल सेनाध्यक्ष ने 4 अगस्त को आईआईटी मद्रास में अग्निशोध-इंडियन आर्मी रिसर्च सेल (आईएआरसी) के उद्घाटन के दौरान यह बात कही थी। इसका वीडियो आज सामने आया।

- थल सेना प्रमुख ने आईआईटी मद्रास में इण्डियन आर्मी रिसर्च सेल के उद्घाटन पर यह चेतावनी दी।
- उन्होंने कहा कि ऑपरेशन सिन्दूर में सशस्त्र बलों को खुली छूट दी गई थी। फ्री हैंड दिया गया था कि जो करना है, आप तय करें।

जनरल उपेन्द्र द्विवेदी आईआईटी मद्रास में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। यहां उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर पर बोलते हुए कहा कि 22 अप्रैल को पहलगाम में जो हुआ, उसने पूरे देश को झकझोर दिया था। 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों ने 26 निर्दोष पर्यटकों की निर्मम हत्या कर दी थी।

सेनाध्यक्ष जनरल उपेन्द्र द्विवेदी ने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सशस्त्र बलों को खुली छूट दी गई थी। सेना को फ्री हैंड दिया गया था कि जो करना है, आप तय करें। इसके साथ ही उन्होंने कहा, 23 अप्रैल को अगले ही दिन, हम सब बैठे। रक्षा मंत्री ने भी पहली बार कहा कि 'अब बहुत हो गया। तीनों सेना प्रमुख इस बात पर एकमत थे कि कुछ किया जाना चाहिए। हमें फ्री हैंड दिया गया कि जो करना है, आप तय करें। यह राजनीतिक दिशा और स्पष्टता का ऐसा उदाहरण था, जो हमने पहली बार देखा।'

सेना अध्यक्ष ने बताया, '25 अप्रैल को हम उत्तरी कमान गए। वहीं पर हमने सोचा, योजना बनाई, अवधारणा तैयार की और उसे अमल में लाए। हमने नौ में से सात ठिकाने तबाह किए और बड़ी संख्या में आतंकियों का सफाया हुआ। 29 अप्रैल को पहली बार प्रधानमंत्री से मुलाकात हुई।'

जनरल द्विवेदी ने आगे कहा, 'ऑपरेशन सिंदूर में हम एक तरह का शतरंज खेल रहे थे। हमें पता नहीं था कि दुश्मन की अगली चाल क्या होगी और हमारी अगली चाल क्या होगी। इसे ग्रे जोन कहते हैं। इसका मतलब है कि हम पारंपरिक युद्ध नहीं कर रहे थे, बल्कि उससे ठीक पहले वाली रणनीति अपना रहे थे। हम चाल चलते थे, दुश्मन भी चाल चलता था। कहीं हम उसे चेकमेट कर रहे थे, तो कहीं जान जोखिम में डालकर वार कर रहे थे- और जिंदगी इसी का नाम है।'

जनरल द्विवेदी ने इस दौरान पाकिस्तान के सैन्य प्रमुख असीम मुनीर पर भी निशाना साधा।

प्रधानमंत्री ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एआई और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में वैश्विक नेतृत्व का लक्ष्य बना रहा है, जिसमें मेड-इन-इंडिया चिप का विकास भी शामिल है। मोदी ने जोर देकर कहा कि भारत की विकास गाथा को बनाए रखने के लिए नवाचार और विनिर्माण को साथ-साथ चलना होगा तथा पर्यावरणीय मानकों पर भी ध्यान देना होगा। प्रधानमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि केंद्र और राज्य सरकारों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों और सक्रिय नागरिक भागीदारी के माध्यम से, कर्नाटक विकास की नई ऊँचाइयों को छुएगा और एक विकसित भारत के विजन में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

उपराष्ट्रपति पद ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खेमे के एक वर्ग का मानना है कि भाजपा के उम्मीदवार की घोषणा के बाद ही इंडिया गठबंधन को अपना उम्मीदवार तय करना चाहिए।

हाल ही में विपक्षी गठबंधन इंडिया में शामिल दलों के बीच एकता बढ़ी है। विपक्षी गठबंधन बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण और कथित चुनाव धांधली के खिलाफ एकजुट हैं। गुरुवार को कांग्रेस नेता राहुल गांधी के आवास पर विपक्षी गठबंधन के नेताओं की डिनर पार्टी में भी इस मुद्दे पर चर्चा हुई। अब खड़गे, सोमवार को इंडिया ब्लॉक के सांसदों के लिए रात्रिभोज का आयोजन करेंगे।

फर्रुखाबाद में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राजेपुर थाना क्षेत्र में चित्रकूट गांव समीप सड़क के ऊपर से करीब 02 फीट पानी का बहना शुरू हो गया है जबकि गंगा की सहायक नदी राम गंगा खतरे के निशान से करीब 85 सेमी नीचे बह रही है।

जिला प्रशासन ने बाढ़ पीड़ितों को आवागमन राहत प्रदान करने के लिए, जिले के विभिन्न बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में 52 नावें तथा चार स्टीमर लगाए हैं।

आधिकारिक प्रवक्ता ने बताया कि नरौरा बांध से 305041 क्यूसेक पानी गंगा नदी में छोड़ा गया, वहीं रामगंगा में रामनगर बैराज आदि से 11467 क्यूसेक पानी छोड़ा गया, जिससे दोनों नदियों में जल स्तर निरंतर बढ़ रहा है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908